CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राचीन भारत

का

भौगोलिक स्वरूप

अत्र ते कीर्तयिष्यामि वर्षं भारतमुत्तमम् ।
सर्वेषामेव भूतानां प्रियं भारतमुत्तमम् ।।

760

डा० अवधबिहारीलाल अवस्थी

कैलाश प्रकाशन, लखनऊ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राचीन भारत का भौगोलिक स्वरूप

लेखक
डा० अवधविहारी लाल अवस्थी
[illegible]
लखनऊ विश्वविद्यालय,
लखनऊ

कैलाश प्रकाशन, लखनऊ
[illegible]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सादर श्रद्धेय
गुरुवर
डा० बी० एन० पुरी
डि० लिट० (ऑक्सन)
डी० फिल०
(ऑक्सन)

उदय बिहारी

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय
प्रो० बी० एन० पुरी
संग्रह
लखनऊ

State Museum Library
7600
Lucknow

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राचीन भारत

का

भौगोलिक स्वरूप

(एष देशः, देशोऽयमस्ति परमं पवित्रः)

★

लेखक

डा० अवधविहारी लाल अवस्थी

बी० ए० आनर्स, एम० ए०, पी-यच० डी०

अध्यापक

प्राच्य इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

कैलाश – प्रकाशन, लखनऊ

सन् १९६४ ई०

प्रकाशक
आशा अवस्थी
कैलाश प्रकाशन
४२, खुरशेद बाग, लखनऊ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रथम आवृत्ति
सन १९६४ ई०

मूल्य १०)

मुद्रक
पं० बिहारी लाल शुक्ल
शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समर्पण

साक्षात् सौजन्य
मूर्त्त आर्य
सुब्रह्मण्य
प्रो० के० ए० यस० अय्यर
के
चरणों पर

7600

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सर्वप्रिय उत्तम भारत देश

अत्र ते कीर्तयिष्यामि वर्षं भारतमुत्तमम् ।
प्रियमित्रस्य देवस्य मर्नोर्वैवस्वतस्य च ।।
पद्म पु० आदि खं० ६ । २

पृथोश्च प्राज्ञ वैण्यस्य तथेक्ष्वार्कोमहात्मनः ।
ययातेरम्बरीषस्य मान्धार्तुनहुषस्य च ।। वही ६ । ३

तथैव मुचकुन्दस्य कुबेरोशीनरस्य च ।
ऋषभस्य तथैलस्य नृगस्य नृपतेस्तथा ।। वही ६ । ४

कुषिकस्यैव राजर्षेगाधेश्चैव महात्मनः ।
सोमस्य चैव राजर्षेर्दिलीपस्य तथैव च ।। वही ६ । ५

अन्येषां च महाभागाः क्षत्रियणाम् बलीयसाम् ।
सर्वोषामेव भूतानां प्रियं भारतमुत्तमम् ।। वही ६ । ६

स्तोतव्या पृथिवी ।

वलित्था पर्वतानां खिद्रं बिभर्षि पृथिवी ।
प्रया भूमिं प्रवत्वति मह्ना जिनोषि महिनि ।।
ऋग्वेद ५।६।८४।१

स्तोमासस्वा विचारिणि प्रतिष्टोभन्त्यक्तुभिः ।
प्रया वाजं न हेषन्तं पेरुमस्यजुर्नि ।।
वही ५।६।८४।२

मां के चरणों पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

विषय	पृष्ठांक
निवेदन	
संकेत सूची	
ग्रन्थ सूची	
अध्याय १—विश्व रचना	६—७
,, २—द्वीपाख्यान	८—१०
,, ३—भारतवर्ष	११—२४
कूर्ममूर्ति—हमारी जन्म भूमि—सर्वप्रिय देश ...	११—१२
नव भेद	१२—१७
द्वीपान्तर	१७—१९
कुल पर्वत	१९—२२
अन्य पर्वत	२२—२४
नदियाँ	२४
,, ४—देश विभाग	२५—३०
आर्यावर्त—अन्तर्वेदी	२५
कुमारीद्वीप के स्थलीय विभाग	
पंचस्थल-षटखंड-सप्तखंड नवखंड ...	२६
रामायण-महाभारत-हरिवंश के अनुसार देश विभाग	२७—२८
वायु-मत्स्य और मार्कण्डेय के नौ विभाग	२८
वामन पुराण के अनुसार कुमार द्वीप के खंड	२८—२९
विष्णु पुराण का देश-विभाग ...	२९
विष्णुधर्मोत्तर और गरुण पुराणों में दिग्देश वर्णन ...	२९
काव्य मीमांसा का देश-विभाग ...	२९—३०
पूर्व देश-दक्षिणापथ-पश्चाद्देश उत्तरापथ-मध्यदेश-द्वीपान्तर, वर्ण-नियम कूर्म-रूप-भारत	३०
,, ५—पूर्व देश	३१—५३
जनपद वर्णन	३१—४९
पर्वत	४९—५१
नदियाँ	५१—५२
उत्पाद (देशोत्पत्ति)	५२
पूर्व दिशा—सूर्योदय, ज्ञानोदय तथा ब्रह्मलोक का द्वार	५२—५३
,, ६—दक्षिणापथ	५४—७३
स्थिति और विस्तार तथा अन्तर्नर्मदा मण्डल ...	५४—५६
जनपद वर्णन	५६—७०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

	पर्वत-मालाएँ ...	...	७०–७१
	नदियाँ ...	...	७१–७३
	उत्पाद ...	...	७३
,,	**७—पश्चाद्देश** ...	...	७४–८६
	जनपद ...	...	७४–८४
	पर्वत ...	...	८४–८५
	नदियाँ ...	...	८५–८६
	उत्पाद ...	...	८६
,,	**८—उत्तरापथ** ...	...	८७–१०७
	स्थिति और विस्तार ...	...	८७–८८
	जनपद ...	...	८८–१०५
	पर्वत ...	...	१०५–१०६
	नदियाँ ...	...	१०६
	उत्पाद ...	...	१०७
,,	**९—मध्यदेश**—धर्म देश ...	...	१०८–११४
	स्थिति और विस्तार ...	...	१०८
	मध्यदेश जनपद तालिकाएँ		
	विष्णु पुराण ...	...	१०८
	गरुड़-वायु-ब्रह्माण्ड-मत्स्य ...	...	१०८–१०९
	जनपद-वर्णन ...	...	१०९–११४
	राजशेखर की भौगोलिक प्रतिभा	...	११५
परिशिष्ट	१—राजशेखर-विरचित देश-विभाग: (संस्कृत व्याख्या सहित) ...	...	११६–१२२
,,	२—कुमारिकाखण्ड-देशतालिका ७२(७५) देश तालिका और प्रत्येक देश की ग्राम-संख्या	...	११३–१३४
,,	३—वेलाकूलानि—भारतीय समुद्र तट-पेरिप्लस-टॉलमी और रामायण तथा अरब-भूगोलवेत्ता ...	...	१३५–१४०
,,	४—वनश्री ... हाथियों का महत्व-कुलाष्टक और वनाष्टक-विष्णुधर्मोत्तर पु०, मानसोल्लास, अग्नि पु०, शुक्र, कौटिल्य, ब्रह्माण्ड पु०, वायु पु० विविधवन, वन-गरिमा,	...	१४१–१४६
उपसंहार—शोध प्रमाद ...		...	१४७
शुद्धिपत्र ...	...	...	

—***❀***—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निवेदन

पूजयेत्पृथिवीं देवीं

भूगोल ही जीवन का आधार है और भूगोल के स्वरूप पर ही वृत्ति तथा विचार भी आधारित हैं। विचारों का इतिहास ही इतिहास है जैसा कि प्रथित पुरातत्त्व-शास्त्री प्रो० गॉर्डन चाइल्ड मानते हैं (नाऊ इट हैज़ बीन सेड दैट ऑल हिस्ट्री इज दि हिस्ट्री ऑफ़ थॉट)[१]। सभी पुरातत्त्व सामग्री मानव विचारों और उद्देश्यों की ही अभिव्यक्ति है। यही उसकी महत्ता है[२]।

भारतवर्ष दुनिया का बहुत ही पुराना देश है। मानव द्वीप भी इसका उपयुक्त ही नाम था :—

मनु से मानव की धरा यही,
कर्म भूमि भी यही रही।
युग युग से पूजित माता थी,
वत्स भाव से मानवता की त्राता थी।

इसके सभी भाग—उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम और मध्य तथा द्वीपांतर पूज्य थे :

भारतस्य तथा भेदाः पूजनीयाश्च ये नव ॥ नीलमत पु० ७११

नहीं, विश्व ही आराध्य था :

द्वीपाः पूज्याः नीलमत पु० ७०८

हमें अपना भारतवर्ष—जो हमारी जन्मभूमि थी और और जहाँ हम रहते हैं :

इदं तु भारतं वर्षं यत्र वर्तामहे वयम्

हम सबको प्रिय थी :

सर्वेषामेव राजेन्द्र प्रियं भारत भारतम् ॥

प्रेम ममत्व से होता है। इसीलिये—

१—प्रो० वी० जी० गॉर्डन चाइल्ड—अ शार्ट इन्ट्रोडक्शन टु आर्कोओलॉजी, पृ० १०

२—वही पृ० ११ : "All archaeological data are expressions of human thoughts and are valued only as revelation thereof"

३—नीलमत पु०राण ७१३ : अयं मानवो द्वीपस्तथा सागरसंभृतः।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"जहाँ का भिदा देह में अन्न पानी,
उसी भूमि से चित्त है मोद पाता।"

और यही सत्य भी है कि—

प्राणिनां हि निकृष्टापि जन्मभूमिः पराप्रिया। कथा सरित्सागर ९।२।१८९

जब निकृष्ट भूमि गुलिस्तां और चमन होता है तब यह भारत भूमि तो परम पवित्र देश है :—

देशोऽयमस्ति परमः पवित्रः।

नीलमत पृ० २४१

और यहाँ देवता और मनुष्य भी रह सकते हैं; तथा यह रमणीय भी है :

सांप्रतं चापि भगवन् देशोऽयं देवमानुषैः।
वस्तव्यो-रमणीयश्च पुण्यश्च भविता तथा॥

नीलमत पृ० २६३

इसकी प्राचीनता, जीवन-वृत्ति और भौतिक-लीला भूगोल (पृथ्वी) के गर्भ में छिपी है। आर्कोलॉजिस्ट उसी भूगोल के पर्तों को सावधानी से उलटता हुआ उस पुरावृत्त की लीलाओं को सजीव करता है। परन्तु यह निश्चित नहीं है कि वह कहाँ पर भूगोल के उदर से उसकी छिपी सामग्री निकाले। तभी वह एक्सप्लोरेशन करता है। भौगोलिक ज्ञान उसकी सहायता करता है।

प्रकृति के प्रभाव से पुरुष भी बदल जाता है और भूगोल भी। जहाँ कभी समुद्र था (राजपूताना = बालुकार्णाव)[१], आज देश है और इसी तरह नदियों के प्रवाह से भी नगर वह गये। आक्रान्ता के प्रमाद से उनके नाम-रूप भी मिट गये और आज जब किसी स्थान—प्रदेश की पहचान हम से नहीं हो पाती तो हम प्राचीन मनीषियों को गप्पी की सनद दे बैठते हैं। यह हमारा प्रमाद है। भूगोल का अध्ययन पर्दों के अन्दर डे या ला की पुस्तक के आधार पर नहीं हो सकता है। पैदल विद्यार्थियों के साथ घूमना पड़ेगा। यही संभव है। प्रत्येक विश्वविद्यालय अपने आस-पास के भूगोल का परीक्षण—निरीक्षण करे और साहित्य तथा पुरातत्व के साक्ष्यों के संयोग से सुचित्र बनायें। पर यह काम पुरुषार्थियों का है।

इस भौगोलिक स्वरूप में काव्यमीमांसा के देश विभाग (अध्याय १७) द्वारा देश व्यवस्था से परिचय कराने का प्रयास किया गया है।

१—डा० एच० डी० संकालिया—इण्डियन आर्कोलॉजी टु डे पृ० ६८—६९
यह एक सत्य है जिसकी पुष्टि कुल पवर्तों की सूची से भी होती है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

"प्राचीन भारत का भौगोलिक स्वरूप" आपके समक्ष सावित्री दुर्गा के चरणों पर निवेदित हैं। यह 'शिला–शक्ति' (पाषाण देवी—नैनीताल) के चरणों पर ही उनकी प्रेरणा से नयना देवी के आग्रह पर लिखी गई थी। लखनऊ में भूगोल पढ़ाते-पढ़ते हुए इसमें सुधार गिये गये। सभी का आशीर्वाद सम्बल मेरा बल है। माँ तेरे चरणों पर यह निवेदित है—बल दे बलदायिनी मातु है तू :—

बहती है गन्ध बसी वायु जहां,
रमती हैं रामा गन्धर्व जहां,
रंग रंग के फूल जहां,
रग रग में राग रहा।

हहर हहर अम्बा के धाम में,
अम्बा के धाम में नयना के गाँव में,
सिहर सिहर लहर गीत गा रही।
रुनझुन के साथ वहीं रम्भा है आ रही॥

मेघों के बीच छिपी चपला,
छुप छुप संदेश सखे .ला रही।
भावों में विद्ध बसी विमला,
उर - ज्योति उलझ आ रही।

रजत श्वेत हिमगिरि का ताज जहां,
साज जहां दिव्य सभी छा रहे।
स्वर्ग वही जग का जो स्वप्न रहा,
धरती पर त्यागी हम आ रहे।

शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस लखनऊ के अधिष्ठाता और बन्धु-जन धन्यवाद के पात्र हैं। मेरी भूलें विज्ञ विवेचकों और मनीषियों के चरणों पर हैं।

सो सुधारि बुध जन इमि लेहीं।

मेरा और सबका सम्बल सबल वासुदेव है :—

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदतां
ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया।
मनश्च भद्रं भजतादधोक्षजे
आवेश्यतां नो मतिरप्यहैतुकी॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समय के प्रभाव से लक्ष्मी ने सरस्वती को विचलित कर दिया और क़दम डगमगा गये। परन्तु नर-नारायण ने सँभाल लिया। पूज्य डा० पांडे ने आशीर्वाद और बल दिया। यही मेरी एक शक्ति है और शक्ति है अविचल गुरु भक्ति। गुरुवर प्रो० अय्यर से आशीर्वाद और प्रेरणा मिलती रही—

गोविन्द के साथ ही गुरु कृपा बनी रहे :

जे गुरु चरन रेनु सिर धरहीं। ते जनु सकल विभव बस करहीं॥
मोहि सम यह अनभयउ न दूजे। सब पायउँ रज पावनि पूजे॥
गृह्णातु विद्वानविचिन्त्य दोषान्।

४२, खुरशेद बाग
लखनऊ

अवधविहारीलाल अवस्थी
२०-४-१९६४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संकेत - सूची

अ०	= अध्याय
आर्कला० सर्वे रि०	= आर्कलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट
इन्डियन ऐन्टी०	= इण्डियन ऐन्टीक्विरी
ईलियट एन्ड डाउसन	= दि हिस्ट्री ऑफ़ इण्डिया ऐज़ टोल्ड बाई इट्स ओन हिस्टोरियन्स (किताब महल)
उत्तर०	= उत्तरार्द्ध या उत्तर खंड
उप०	= उपनिषद
उपायन पर्व	= ज्यॉग्रफ़िकल ऐन्ड इकनामिक स्टडीज़ इन महाभारत-उपायन पर्व—लेखक डा० मोतीचन्द्र
एपि० इण्डि०	= एपीग्रेफ़िया इण्डिका
क० ऐ० जा०, कनिंघम ए०जा०	= सर अलेग्ज़ेन्डर कनिंघम, ज्यॉग्रफ़ी ऑफ़ ऐन्शेन्ट इण्डिया
क० मंजरी, कर्पूर मं०	= कर्पूर मंजरी
कथा० स० सा०	= कथा सरित सागर
का०, कां०	= काण्ड (बाल का०)
का० मी०	= काव्य मीमांसा
कार्पस इ० इ०	= कर्पस इन्सक्रिप्शनम इण्डिकेरम—भाग ४, डा० मीराशी, वी० वी०
कुमार सं०	= कुमार संभव
क्ला० अ०	= क्लासिकल अकाउन्ट्स ऑफ़ इण्डिया—डा० मजूमदार रमेश चन्द्र
गु० सं०	= गुप्त संवत
च०	= चरित
जाग०ए०मेड०(या मेडि०)इ०	= ज्यॉग्रफ़ी ऑफ़ ऐन्शेन्ट एण्ड मेडेवेल इण्डिया लेखक डा० डी० सी० सरकार
ज्या० डिक्० (या डिक्श०) डे जाग० डि०	= यन० यल० डे०—ज्यॉग्रफ़िकल डिक्शनरी ऑफ़ ऐन्शेन्ट एण्ड मेडेवेल इण्डिया
जायसी-पद्मावत	= मलिक मुहम्मद जायसी कृत पद्मावत
द० कु० च०	= दण्डी का दश कुमार चरित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाणिनि, पाणिनि भारत = डा० अग्रवाल (वासुदेवशरण) कृत पाणिनि कालीन भारत
पु० = पुराण
पू० = पूर्वार्द्ध
पृ०रा०वि०, पृ० रा० विजय० = पृथिवी राज विजय—जयानक
प्र० च० = प्रबोध चन्द्रोदय—कृष्णमिश्र कृत
बैनर्जी प्राचीन मुद्रा = प्रो० राखलदास बैनर्जी—प्राचीन मुद्रा
बील = सैमुअल बील—ट्रेवेल्स ऑफ़ ह्वेन सांग
ब्रह्म वै०… = ब्रह्म वैवर्त पुराण
महा०, महाभा० = महाभारत
मान राज विलास = मान कवि रचित राजविलास
मार्क० पु० = मार्कण्डेय पुराण
यो० व० = योग वसिष्ठ
रामा० = रामायण
वि० धर्म०, वि० ध० = विष्णु धर्मोत्तर पुराण
वृ० क० मं० = वृहत्कथा मंजरी
वृ० सं०, वृहत सं० = वृहत्संहिता
शक्ति सं० = शक्ति संगम तन्त्र
श० रु० सं० = (शिव पुराण) शतरुद्र संहिता
स्टडीज़० इण्डि० ऐण्टी = डा० हेमचन्द्रराय चौधरी—स्टडीज़ इन इण्डियन ऐन्टीक्विटीज़
हिस्ट० इन्स० = डा० राजबली पाण्डेय—हिस्टारिकल ऐन्ड लिटरेरी इन्सक्रिप्शन्स
ला हिस्ट जाग०, हिस्ट०जाग०, हिस्ट० जाग० ए० इ० = डा० बी० सी० ला, हिस्टारिकल जॉग्रफ़ी ऑफ़ ऐन्शेन्ट इण्डिया

काव्य मीमांसा और दिव्यावदान में पहली संख्या पृष्ठांक और दूसरी संख्या उसी पृष्ठ की पंक्ति की परिचायिका हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सहायक-ग्रन्थ सूची

ऋग्वेद—४ भाग	...	संपादक श्रीराम शर्मा, बरेली १९६२
अथर्व वेद	...	
एतरेय ब्राह्मण	...	
बृहदारण्यक उपनिषद	...	गीता प्रेस, गोरखपुर सं० २०१४
रामायण—२ भाग	...	,, ,, ,, २०१७
महाभारत—६ भाग	...	,, ,, प्रथम संस्करण

पुराण–स्मृति

अग्नि पु०	...	कलकत्ता सं० २०१४
कूर्म पु०	...	
गरुण पु०	...	पंडित पुस्तकालय, काशी, सन् १९६३
पद्म पु०—४ भाग	...	आनन्दाश्रम, पूना सन् १८९४
ब्रह्मवैवर्त पु०—२ भाग	...	वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई सन् १९३५
ब्रह्मांड पु०	...	,, ,,
भागवत पु०	...	गीता प्रेस सं० २११३
मत्स्य पु०	...	आनन्दाश्रम, पूना
,,	...	श्री जीवानन्द, कलकत्ता, सन् १८७६
मार्कण्डेय पु०	...	वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई
,,	...	श्री जीवानन्द, कलकत्ता, सन् १८७९
वायु पु०	...	बिब्लिओथेका इण्डिया, संपादक आर० यल० मित्र, कलकत्ता
,,	...	वेंकटेश्वर प्रेस, सन् १८६७
वाराह पु०	...	श्री हृषीकेश शास्त्री, कलकत्ता, १८९३
विष्णु पु०	...	गीता प्रेस, गोरखपुर, सं० २००९
विष्णुधर्मोत्तर पु०	...	वेंकटेश्वर प्रेस
शिव पुराण	...	,,
स्कन्द महापुराण	...	,,
,,	...	नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ
हरिवंश पु०	...	गीता प्रेस
नीलमत पुराण	...	मोतीलाल बनारसीदास, लाहौर, १९३४
कल्कि पुराण	...	काशी, संवत् १९६३
वृहन्नारदीय पुराण	...	कलकत्ता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मनुस्मृति	...	गोयल ब्रदर्स, देहली (सम्पादित पं० तुलसीराम स्वामी)

बौद्ध-साहित्य

त्रिपिटक	...	नालन्दा, भिक्षु जगदीश कश्यप संपादित
परिनिर्वाण सूत्र	...	सारनाथ, भिक्षु कित्तिमा ,,
अवदानशतक—२ भाग	...	सेन्टपीटर्स, स्पेयर ,,
,,	...	मिथिला, सन् १९५८
दिव्यावदान	...	,, सन् १९५९
मंजुश्रीमूलकल्प—३ भाग	...	त्रिवेन्द्रम सन् १९२०–१९२५
सौन्दरनन्द (अश्वघोष)	...	कठौतिया, सूर्यनारायण चौधरी, संपादित
बुद्धचरित (,,)	...	
कथा-कोश	...	हरिषेणाचार्य

अन्य संस्कृत ग्रन्थ

कथा सरितसागर	...	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई
काव्यमीमांसा	...	बड़ौदा, सी० डी० दलाल संपादित सन् १९२४
,,	...	चौखम्बा, काशी
कर्पूर मंजरी	...	,, ,, सन् १९५५
कुमार संभव	...	कालिदास, चौखम्बा, काशी
काव्यादर्श (दंडी)	...	
दशकुमारचरित (,,)	...	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई
नैषधीय चरित	...	,, सन् १९५२
प्रबोध चन्द्रोदय	...	कृष्णमिश्र ,, सन् १९३५
पृथ्वीराज विजय	...	अजमेर सन् १९४१
,, ,,	...	बिब्लिओथेका इण्डिका, कलकत्ता, सन् १९१८
बृहत्संहिता	...	लाहौर
बृहत्कथा मंजरी	...	निर्णयसागर प्रेस
मानसोल्लास	...	त्रिवेन्द्रम
यशस्तिलक—२ भाग	...	निर्णयसागर प्रेस
,, (प्रथम भाग)	...	काशी
योगवासिष्ठ—२ भाग	...	निर्णयसागर प्रेस
रघुवंश	...	,,
रूपषट्कं	...	वत्सराज विरचित, (सं०सी०डी० दलाल बम्बई १९१८)
हर्ष चरित	...	,,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभिलेख

अ स्टडी ऑफ़ एन्शेन्ट
इन्सक्रिप्शन्स ... डा० वासुदेव उपाध्याय, देहली १९६१
इन्सक्रिप्शन्स ऑफ़ कम्बुज ... डा० आर० सी० मजूमदार, संपादित
देश कलकत्ता सन् १९५३
कार्पस इन्सक्रिप्शनम
इण्डिकेरम भाग—४ ... डा० मीराशी द्वारा संपादित
सेलेक्ट इन्सक्रिप्शन्स ... डा० डी० सी० सरकार, कलकत्ता
हिस्टारिकल ऐन्ड लिटरेरी
इन्सक्रिप्शन्स ... डा० राजबली पांडे, काशी, सन् १९६२
एनल्स एन्ड एन्टीक्विटीज़ ऑफ़ राजस्थान— कर्नल टाड २ भाग लन्दन १९५७ई०

हिन्दी-ग्रन्थ

जायसी ग्रंथावली ... दिल्ली, डा० मनमोहन गुप्त संपादित
पद्मावत ... चिरगांव, डा० वासुदेव शरण अग्रवाल
मान-राजविलास ... नागरी प्रचारिणी सभा काशी, सं० मेनारिया
कादम्बरी-एक सांस्कृतिक अध्ययन ... डा० वासुदेव शरण अग्रवाल
पाणिनि कालीन भारत ... ,, ,,
हर्ष चरित-एक अध्ययन ... ,, ,,
यौधेयों का इतिहास ... ,, अवधबिहारी लाल अवस्थी
भारतीय इतिहास की रूप
रेखा २ भाग ... ,, जयचन्द्र विद्यालंकार

फ़ारसी

हदूदुल आलम

अंग्रेजी ग्रन्थ

एपिक इण्डिया ... सी० वी० वैद्य
एसियाटिक रिसर्चेज ... कनिंघम
ऐन्शेन्ट ज्याग्रफ़ी आफ़
इण्डिया ... कनिंघम, (सर अलेग्ज़ेन्डर) काशी १९६३
ज्योग्रफ़िकल डिक्शनरीआफ़
ऐन्शेन्ट ऐण्ड मेडेवेल इण्डिया ... नन्दलाल डे १९२७
स्टीडीज़ इन दि ज्याग्रफ़ी
ऑफ़ ऐन्शेन्ट ऐण्ड मेडेवेल
इण्डिया ... डा० दिनेशचन्द्र सरकार देहली १९६०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हिस्टारिकल ज्याग्रफ़ी ऑफ़ ऐन्शेन्ट इण्डिया ... डा० बिमलरण ला पेरिस १९५४

महाभारत-उपायन पर्व ... डा० मोतीचन्द्र लखनऊ १९४५

स्टडीज़ इन इण्डियन ऐन्टीक्विटीज़ ... डा० हेमचन्द्र राय चौधरी कलकत्ता १९५८

युवनच्वांग्स ट्रॅवेल्स इन इण्डिया ... वार्टर्स देहली १९६१

चाइनीज़ अकाउन्ट्स ऑफ़ इण्डिया ... सेमुअल बील, (सुशील गुप्ता) कलकता १९५०

क्लासिकल अकाउन्ट्स ऑफ़ इण्डिया ... डा० आर० सी० मजुमदार कलकता १९६०

हिन्दू कालोनीज़ ... ,, ,, १९६३

ग्रेटर इण्डिया ... ,, वम्बई १९४८

वैदिक एज ... भारतीविद्याभवन (संपादित),, १९५१

'दि स्ट्रगल फ़ॉर एम्पायर' ... भारतीय विद्याभवन (संपादित),, १९५७

हिस्ट्री ऑफ़ इण्डिया ... एलफ़िन्स्टन लंदन १९१६

,, ,, ... ईलियट-डाउसन—३ भाग किताब महल

दि हिस्ट्री ऑफ़ गुर्जर प्रतिहाराज़ ... डा० वी०यन० पुरी, हिन्द किताब १९५७

'दि आर्यन्स' ... प्रो० गार्डन चाइल्ड

अ शार्ट इन्ट्रोडक्शन टु आर्केलाजी ... ,, लन्दन १९५६

हिस्ट्री ऑफ़ इण्डिया, भाग १ ... प्रो नीलकंठ शास्त्री

डाइनेस्टिक हिस्ट्री ऑफ़ इण्डिया भाग २ ... डा० यच० सी० रे

प्रत्रिकाएं—

इण्डियन एण्टीक्विरी, एपीग्रेफ़िया इण्डिका,

जर्नल ऑफ दि यू० पी० हिस्टारिकल सोसाइटी, लखनऊ

पुराणम्-काशी

——**❀**——

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राचीन भारत

का

भौगोलिक स्वरूप

(भारतवर्ष)

"निरवधि च निराश्रयं च यस्य
स्थितमनुवर्त्तितकौतुक प्रपञ्चम् ।
प्रथम इह भवान्स कूर्म मूर्ति-
र्जयति चतुर्द्दशलोक वल्लिकन्दः ॥"

का० मी० ९०।१५-१८

यह कूर्ममूर्ति भारत, जो महान कौतुकागार है, निरन्तर स्वराज्य का भोग करता हुआ चौदह लोकों में अपनी जय-ध्वज का घोष करे

हिमाचलाद्दक्षिणतो वर्षं यादव भारतम् ।
कर्मभूमिमहीपाल यत्र वर्तामहे वयम् ॥

विष्णुधर्मोत्तर १।७।३०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१—विश्व-रचना

भगवान् ब्रह्मा ने इस विश्व की रचना की ।[१] अतः संस्कृत मनीषियों ने इस दिव्य सृष्टि के रहस्य को जानने की चेष्टाएं की ।

कथं विश्वमिदं जातं कर्म जाति प्रकल्पितं ।[२]

राजशेखर ने भी काव्यमीमांसा में काव्य-स्वरूप और कवि-कर्म की व्याख्या तथा विवेचना की है । इस के अतिरिक्त काव्यमीमांसा प्राचीन इतिहास और भूगोल का भी अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है ।

भूगोल उनका अत्यन्त प्रिय विषय था । यद्यपि उनका भौगोलिक-वर्णन (अध्याय १७) पुराणों के भुवनकोशों के आधार पर लिखा गया है, परन्तु फिर भी उस पर उनकी प्रतिभा ने उस भौगोलिक आख्यान को अपनी ही प्रकार की एक शैली से विभूषित किया है जिसका दर्शन अत्यन्त्र नहीं होता है । यह विशिष्टता भूगोल के आर्थिक स्वरूप (एकनॉमिक ज्यॉग्रफी) में परिलक्षित होती है ।

इसी कारण राजशेखर ने जगत को द्यावा और पृथ्वी-क्रमशः पिता और माता—से प्रसूत (द्यावापृथिव्यात्मकं जगत्)[३] बतलाया है अर्थात् आकाश (द्यावा) पिता है और पृथ्वी मां ।

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः[४]

कितनी उदात्त कल्पना है भारतीय देश-प्रेम की ।

प्राचीन भारतीय लोक-संस्थान (वर्ल्ड-कनसेप्शन) में एक, दो, तीन, सात और चौदह लोकों[५] की पुरानी परम्परा प्रचलित है । राजशेखर ने इस तथ्य का भी उल्लेख किया है । आगे चलकर राजशेखर कहते हैं :

१—का० मी० अ० १७, पृ० ९२ "देवेनाम्बुजन्मना······विश्वस्य रचना कृता"

२—स्कन्द पुराण १—२—३७—५२

३—का०मी० अ० १७ पृ० ८९ । १८

४—अर्थव वेद १२।१।१२

५—अग्निपुराण अ० १२०।

कूर्म पु० अ० ४५।

स्कन्द पु० माहेश्वर खंड, कुमारिका खंड अ० ३७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निरवधि च निराश्रयं च यस्य स्थितमनुप्रवर्तित कौतुक प्रपञ्चकम् ।
प्रथम इह भवान्स कूर्ममूर्तिर्जयति चतुर्दशलोकवल्लिकन्दः ।।
का० मी० ८९।१५–१८

यहाँ पर उल्लिखित 'कर्ममूर्तिर्जयति' से चौदह लोकों की मूल लतिका और आश्चर्यों का कौतुकागार (अजायबघर) भारत भूमि की ही प्रशस्ति का परिचय मिलता है। भारत भूमि भी कूर्माकार कही गई है। "निरवधि निराश्रयं कूर्ममूर्तिर्जयति से राजशेखर का" तात्पर्य है कि यह भारत भूमि निरन्तर (निरवधि) अपराधीन (निराश्रयं) अर्थात् स्वतन्त्र रहे। राजशेखर कालीन भारत अपनी स्वतन्त्रता के लिये संघर्ष कर रहा था। आदिवराह लीला[1] (मिहिर भोज का राज्य काल) समाप्त हो चुकी थी। तुरुष्कों के आक्रमण हो रहे थे। महेन्द्रपाल ने भी देश की स्वतन्त्रता अक्षुण्ण बनाये रखी। परन्तु आगे चल कर परिस्थितियाँ बदल रहीं थीं। 'दुर्वार-वारण घटा'[2] घिर रही थी। अस्तु राष्ट्रीय कवि को राष्ट्र की स्वाधीनता के लिये चिन्तित होना स्वाभाविक था। राजशेखर ने भारत को 'प्राज्यम् एतत् सुराज्यम्'[3] बताया है। इस प्रकार ब्रह्मांड में स्थित भारतवर्ष की महिमा पुराणों की भांति ही राजशेखर ने कवि प्रतिभा से युगधर्म के अनुरूप की। है यही कवि कर्म है :—

अपारे काव्य संसारे कविरेव प्रजापतिः ।
यथा वै रोचते विश्वं तथेदं परिवर्तते ।। अग्निपुराण ३३९।१०

राजशेखर के युग में भी पृथिवी का वृत्ताकार प्रसिद्ध ही था। इसीलिये इसे 'मण्डलं भुवः' (का०मी० ८५।१४ या भूगोल (कर्पूर मंजरी ३।२५) का उल्लेख किया गया है।

१—वही ८४।८, ८५।१४
२—वही पृ० ७३ पं० २४
३—वही अ० १७, ९१।५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२—द्वीपाख्यान

पुराणों के अनुसार ही राजशेखर भी पृथिवी को सात द्वीपों वाली बताते है :

तेषु भूर्लोकः पृथिवी । तत्र सप्त महाद्वीपाः । का० मी० ९०।२३–२४

राजशेखर इन ७ द्वीपों को 'महाद्वीप' की उपयुक्त संज्ञा देते हैं जब कि अन्यत्र 'द्वीप' शब्द का ही प्रायः प्रयोग मिलता है। (का०मी० ९०।२५–२६)

सभी द्वीपों के मध्य में जम्बूद्वीप स्थित था और फिर अन्य महाद्वीप प्लक्ष, शाल्मल, कुश, क्रौञ्च, शाक और पुष्कर—स्थित थे।

इन सात महाद्वीपों को घेर कर ही सात समुद्र भी स्थित थे:—

लावणोरसमयः सुरोदकः सार्पिषो दधिजलः पयः पयाः ।
स्वादुवारिरुदधिश्च सप्तमस्तान्परीत्य त इमे व्यवस्थिताः ।।
का० मी० ९१।१–२

राजशेखर बताते हैं कि कुछ आचार्य उपर्युक्त सप्त सागरों को मानते हैं (सप्त समुद्री वादिनः)[1], कुछ चार मानते हैं (चत्वारः इत्यपरे)[2] और कुछ तीन ही समुद्रों की प्रतिष्ठा करते हैं (त्रयः इत्यन्ये)[3] तथा कुछ विद्वान एक लवण सागर को ही महत्व देते हैं (एक एवायं लावणः समुद्रः)[4]।

इसी प्रसंग में राजशेखर ने प्रसिद्ध अठारह द्वीपों की परम्परा का उल्लेख किया है। इसके साथ ही पृथिवी के अपने नौ खण्डों का वर्णन करते हैं, जो चारों ओर एक ही समुद्र से घिरा हुआ है और यही समृद्ध तथा स्वतन्त्र सुराज्य है जो वीरवर्य का विजित क्षेत्र है।

द्वीपान्यष्टादशात्र क्षितिरपि नवभिर्विस्तृतास्वाङ्ग खण्डै—
रेकोम्भोधिर्दिगन्त प्रविसृत सलिलः प्राज्यमेतत्सुराज्यम् ।।
कस्मिन्नप्याजिकेलिव्यतिकर विजयोपार्जिते वीरवर्ये ।
पर्याप्तं मे न दातुं तदिदमिति धिया वेधसे यश्चुकोप ।।
का० मी० ९१।४–७

१—का० मी० ९१।२०–२१
२—वही ९१।१७,१८
३—वही ९१।१८
४—वही ९१।३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जम्बूद्वीप

राजशेखर ने पृथ्वी के सात महाद्वीपों में केवल जम्बू द्वीप का कुछ विशद विवरण दिया है। जम्बूद्वीप पृथ्वी के मध्य में स्थित है और जम्बूद्वीप के मध्य में मेरु पर्वत स्थित है। उसे पहला वर्ष पर्वत (जो वर्षों की सीमा बनावे) कहा गया है। उसके चारों ओर इलावृत वर्ष स्थित हैं। उसके (मेरु के) उत्तर में नील, श्वेत और ऋङ्गवान् नामक वर्ष पर्वत तथा क्रमसे रम्यक, हिरण्मय, और उत्तरकुरु उनके (वर्ष पर्वतों से सम्बद्ध) वर्ष (जम्बूद्वीप के खण्ड) हैं अर्थात् इलावृत के उत्तर रम्यक वर्ष है जिसकी सीमा पर नील पर्वत स्थित है, उसके उत्तर में हिरण्मय वर्ष है जिसकी सीमा पर श्वेत पर्वत स्थित है, उसके भी उत्तर उत्तरकुरु वर्ष है जिसका वर्ष पर्वत शृङ्गवान है। इलावृत के दक्षिण में निषध वर्ष-पर्वत और तदाश्रयी हरि वर्ष है, उसके दक्षिण हेमकूट वर्ष पर्वत तथा किम्पुरुष वर्ष है, उसके दक्षिण हिमवान् वर्ष-पर्वत और उसके दक्षिण भारत वर्ष स्थित है। इस प्रकार राजशेखर ने जम्बू द्वीप के सात खण्डों (वर्षों) इलावृत, रम्यक, हिरण्मय, उत्तर कुरु, हरिवर्ष, किंपुरुष और भारतवर्ष—उल्लेख किया है। आगे चल कर इलावृत के पूर्व और पश्चिम में स्थित दो अन्य वर्षों-भद्राश्व और केतुमाल जो क्रमश: माल्यवान् और गन्धमादन पर्वतों से मर्यादित थे—को बढ़ा कर जम्बू द्वीप के नव वर्षों की कल्पना (नव वर्ष जम्बू द्वीपम्-ब्रह्माण्ड पुराण ३५—७) की गई। परन्तु राजशेखर ने सप्त वर्ष-योजना ही अपनाई है। (का०मी०पृ०९१–९३) महाभारत में इसे सुदर्शन द्वीप का नाम दिया गया है। बौद्ध साहित्य में प्राय: जम्बू द्वीप को भारत वर्ष का ही पर्याय माना गया है। भगवान बुद्ध ने इस विशाल भूखण्ड की समृद्धि और सुख-सम्पदा का महान राष्ट्रीय मन्त्र बतलाया था :

अयं जम्बुदीपो इद्धो चेवभविस्सति फीतो च,
कुक्कुट सम्पातिका (सम्पातिता) गाम निगम राजधानियो ॥

दीघनिकाय ३, पृ० ५९।

अर्थात सभी लोग प्रेम पूर्वक एकता के साथ मिलकर रहें। इस राष्ट्र शक्ति के महामंत्र की आवश्यकता भारत को ईसा की आठवीं शताब्दी में हुई जब वाह्य विदेशी आक्रमणों और आन्तरिक कलह से सिन्ध में विदेशी सत्ता की स्थापना हुई तथा 'अशेषलोक संताप कलापद: ताजिकानल' से चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गई। स्पष्टत: राष्ट्र विघटन ही राष्ट्र भंग का मूल कारण था। अत: महामनीषी और क्रान्तिकारी सोमदेव सूरी ने पुराने एकता के मन्त्र को यौधेय-वृत्त और उनकी भूमि-भक्ति, प्रेम-शक्ति और सैन्य-शक्ति के माध्यम से प्रस्तुत किया :

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सकल जगन्निर्माण प्रदेशा इव सर्व जीविनः सुहृद इव्र।
परस्पर प्रेमाभिजात्याः कुक्कुट संपात्याः सन्ति ग्रामाः ।।
यशस्तिलक १ प्रा० पृ० १४

यह 'सन्निपात बहुला' वृत्ति ही गण-तन्त्र की शक्ति थी । व़ीर योधेयों में समानता, सौहार्द्र और स्वातन्त्र्य गुण कूट-कूट कर भरा था :[१]

दानेन वित्तानि धनेन योवनं यशोभिरायूँषि गृहाणिचार्थिभिः ।
भजन्ति सांकर्यमिमानि देहिनां न यत्र वर्णाश्रम धर्मवृत्तयः ।।
यशस्तिलक १।४५

यही दशकुमार चरित के महान लेखक कवि दण्डी भी बताते हैं :

सर्वेऽपि कुमारा······सर्वमपिवसुधावलयं न्यायेन परिपालयन्तः ।
परस्परमैकमत्येन वर्तमानाः···दुर्लभानि राज्य सुखान्यवभूवन् ।।
दशकुमार चरित उत्तर पीठिका पृ० २८४

इसी प्रकार आज भी न केवल भारत की ही समृद्धि और शान्ति, प्रत्युत सम्पूर्ण जम्वूद्वीप (एशिया) का सुख और जीवन भाई चारे और प्रेम पर आधारित है :

संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम् । ऋग्वेद १०।१९१।२

१—विशेष विवरण के लिये दृष्टव्य-लेखक का यौधेयों का इतिहास ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३-भारतवर्ष

देश-विभाग के प्रारम्भ में ही राजशेखर ने कूर्म-मूर्ति तथा नवखण्ड भारत की जय कामना की है और उसके निरन्तर अपराधीन होने, का राष्ट्रीय आदर्श प्रस्तुत किया। मेरु के दक्षिण तीन भूखण्ड (वर्ष)—हरिवर्षं, किंपुरुषं, भारतमिति च त्रीणि वर्षाणि-स्थित हैं। भारतवर्ष का परिचय देते हुए राजशेखर काव्यात्मक ढंग से कहते हैं :—

तत्रेदं भारतं वर्षम् का० मी० ९२।७

अर्थात् जम्बूद्वीप के उन वर्षों में (तत्र) यह (इदं) भारत (भरत से सम्बद्ध-भारताद भारतं) देश (वर्षं) है, जहां हम लोग रहते हैं :

तत्र जम्बूद्वीप वर्षेषु इदम् अस्मदावासं—जन्मभूमि इत्यर्थः-भारतं वर्षम् ।

यही महाभारत से भी ज्ञात होता है—

इदं तु भारतंवर्षं यत्र वर्तामहे वयम् ।
पूर्वैः प्रवर्तितं पुण्यं तत सर्वं श्रुतवानसि ॥
भीष्म पर्व १२-५२

अर्थात् यह वही भारतवर्ष है जहाँ हम लोग रहते हैं (अर्थात् हमारी जन्मभूमि है) और जहाँ हमारे पूर्वजों ने पुण्य कर्म किये हैं (अर्थात् यह जन्म-भूमि पुण्य भूमि भी है)। इस प्रकार स्पष्ट है कि राजशेखर ने स्वदेश गौरव और राष्ट्र-प्रेम की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया। यही जन्म भूमि हमारे लिये पिता, भ्राता, पुत्र, आकाश, स्वर्ग और सभी कुछ हो जाती है यदि हम इसके यथार्थ स्वरूप को जान लें :

पिता भ्राता च पुत्राश्च खं द्यौश्च नरपुङ्गव ।
भूमि भवति भूतानां सम्यगच्छिद्रशना ॥ भीष्म पर्व ९ । ७६

प्राचीन ऋषि, मुनि और कवि तथा चिन्तक जानते थे कि भारतवर्ष सभी क्षत्रिय सम्राटों का प्रिय देश था :

अत्र ते कीर्तयिष्यामि वर्षं भारत भारतम् ।
प्रियमिन्द्रस्य देवस्य मनों वैवस्वतस्य च ॥ भीष्म पर्व ९ । ५
पृथोस्तु राजन् वैन्यस्य तथेक्ष्वाकोर्महात्मनः ।
ययातेरम्बरीषस्य मान्धातुं नहुषस्य च ॥ वही ९ । ६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तथैव मुचुकुन्दस्य शिबेरौशीनरस्य च ।
ऋषभस्य तथैलस्य नृगस्य नृपतेस्तथा ॥ वही ९ । ७
कुशिकस्य च दुर्धर्ष गाधेश्चैव महात्मनः ।
सोमकस्य च दुर्धर्ष दिलीपस्य तथैव च ॥ वही ९ । ८
अन्येषां च महाराज क्षत्रियाणां बलीयसाम् ।
सर्वेषामेव राजेन्द्र प्रियं भारत भारतम् ॥ वही ९ । ९

राजशेखर प्रतिहार सम्राट महेन्द्रपाल का गुरु था और महेन्द्रपाल तथा उनके पिता भोज को तुरुष्क-आक्रमणों का सामना करते हुए राष्ट्र रक्षा करनी थी । अत. यह स्वाभाविक था कि राजशेखर ऐसे मनीषी ने क्षत्रियों को भारत वर्ष की महत्ता और सर्व-प्रियता से परिचत कराना अत्यन्त आवश्यक समझा ।

आवश्यक यह भी था कि इसकी ऐकात्मकता भी बनी रहती । अत: महाकवि ने हमारी जन्मभूमि को दक्षिण समुद्र से लेकर नगाधिराज हिमालय तक (दक्षिणात्समुद्राद्रिराजं हिमवन्तं) स्थित बताया था । कुमारीपुर (कन्याकुमारी) से लेकर बिन्दुसर (रुद्रहिमालय पर गंगोत्री से २ मील दूर स्थित पवित्र कुण्ड) तक क्षेत्र देश चक्रवर्ती क्षेत्र (कुमारीपुरातप्रभृति बिन्दुसरोऽवधि योजनानां दशशती चक्रवर्ति क्षेत्रम्) था जो दस सौ योजन तक विस्तृत था । इसका विजेता ही सम्राट-चक्रवर्ती समझा जाता था (का० मी० ९२ । ११-४) । राजशेखर उत्तर दिशा और इसके प्रहरी हिमालय की प्रतिष्ठा कालिदास के प्रसिद्ध शब्दों में करते हैं—

"अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः ।
पूर्वापरौ तोयनिधी विगाह्य स्थितः पृथिव्या-इव मानदण्डः ॥"

का० मी० ९६ । १-४
(कुमार सं० १-१)

कवि इससे भारत की मर्यादाओं का वर्णन करता है :—

उत्तर में हिमालय और पूर्व तथा पश्चिम में समुद्र हैं । दक्षिण में दक्षिण समुद्र स्थित है—ऐसा प्रसिद्ध ही है ।

नवभेदा:—

भारतं वर्षं नवभेदमलंकृतम् । विष्णु पु० २ । १ । ४१

इस प्रकार राजशेखर भारतवर्ष का संक्षिप्त और सांकेतिक, परन्तु महत्वपूर्ण वर्णन करने के बाद इसके नवभेदों का वर्णन करते हैं :

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अस्य च नव भेदाः

इन्द्रद्वीपः, कसेरुमान्, ताम्रपर्णो, गभस्तिमान् ।

नागद्वीपः सौम्यो, गन्धर्वो, वरुणः कुमारीद्वीपश्चायं नवमः ।

का० मी०, पृ० ९२ । ७–९

पीछे भी कवि ने इन नव-खण्डों का उल्लेख पृथिवी के १८ द्वीपों के साथ किया है :

द्वीपान्यष्टादशात्र क्षितिरपि नवभिर्विस्तृता स्वाङ्गखण्डैरेकोऽम्भोधिदिगन्त प्रतिसृतसलिलः प्राज्यमेतत्सुराज्यम् ।। का० मी०, ९१।४–५

इन अठारह द्वीपों के साथ अपने नवखण्डों सहित तथा एक ही समुद्र से घिरी हुई जिस प्राज्य-सुराज्य वाली पृथिवी का उल्लेख किया गया है वह नवखण्डमय भारत भूमि ही है। भारत के प्राचीन भूगोल में भारत के इन नव भेदों का एक विशेष महत्व है।

यह मानना कि 'पुराणों में केवल आठ ही नाम दिये गये हैं'[१] भ्रांति ही है। अधिकांशतः आठ द्वीपों का नाम देकर नवें की ओर संकेत करते हुए (महाभारत या काव्यमीमांसा की भांति ही) यह बताया गया है :

कुमारी द्वीपश्चायं नवमः । का० मी० ९२।९

अयं तु नवमो द्वीपः कुमार्या संज्ञितः प्रिये ।

स्कन्द पुराण ७–१–१७९–८

बराह पुराण में इस नवें द्वीप का नाम भारत दिया गया है :—

इन्द्र, कसेरु, ताम्रपर्णो गभस्ति नाग द्वीप ।

तथा सौम्यो गान्धर्वो वारुणो भारतं चेति ।। बराह पु०, अध्याय ८५ पृ० ३६५

अतः स्पष्ट है कि "अयं कुमारी-द्वीपः" से भी कवि यही बताना चाहता है जो उसने "इदं भारतं वर्षम्" द्वारा बताया है कि यह कुमारी द्वीप अथवा भारत (बराह पुराण अ० ८५, पीछे देखिये) वही है जहाँ हम रहते हैं अर्थात कुमारी द्वीप भी हमारी आवास भूमि (जन्म भूमि) है। भारत और कुमारी द्वीप को एक ही माना गया है। महाभारत (भीष्म पर्व अध्याय ९ गीता प्रेस सं०) में भारत वर्ष की सर्व प्रियता का वर्णन करने के बाद ही कुल पर्वतों का वर्णन किया गया है और भारत के नवभेदों का उल्लेख छोड़ दिया गया है। कुल पर्वतों की तालिका वही है जो काव्यमीमांसा और वायु पुराण में कुमारी द्वीप अथवा नवें द्वीप में दी गई है। यह वर्णन इस प्रकार है:—

१—जर्नल यू० पी० हिस्टारिकल सोसाइटी अंक ६ भाग २ (१९५८) पृ० ६५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतस्यास्य वर्षस्य नव भेदाः प्रकीर्तिताः ।
समुद्रान्तरिता ज्ञेयास्ते त्वगम्याः परस्परम् ।। वायु पु० ४५।७८
इन्द्रद्वीपः कसेरुश्च ताम्रपर्णो गभस्तिमान् ।
नागद्वीपस्तथ सौम्यो गन्धर्वस्त्वथ वारुणः ।। वही ४५।७९
अयं तु नवमस्तेषां द्वीपः सागरसंवृतः ।
योजनानां सहस्रं तु द्वीपोऽयं दक्षिणोत्तरम् ।। वही ४५।८०
आयतो ह्याकुमारिक्यादागङ्गाप्रभवाच्चवै ।
तिर्यगुत्तरविस्तीर्णः सहस्राणि नवैवतु ।। वही ४५।८१

मार्कण्डेय पुराण (५७।५–७), अग्नि पुराण (११८।३–५), कूर्मपुराण (४७।२२–२३) और विष्णु पुराण (२।३।६–७) में इसी प्रकार ८ द्वीपों का नाम देकर नवें द्वीप का संकेत कर दिया गया है। वामन पुराण में इसे कुमार द्वीप कहा गया है।

यदेदं भारतं वर्षं नव द्वीपं निशाचर ।। वामन पु० १३–८
सागरांतरिताः सर्वे अगम्याश्च परस्परम् ।।
इन्द्रद्वीपः कशेरूणास्ताम्रपर्णो गभस्तिमान् ।। वही १३–९
नागद्वीपः कटाहश्च सिंहलो वारुणस्तथा ।।
अयं तु नवमस्तेषां द्वीपः सागर संवृतः ।। वही १३–१०
कुमाराख्यः परिख्यातो द्वीपोऽयं दक्षिणोत्तरः वही १३–११

वामन की नवभेद तालिका में सिंहल का नाम प्राप्त होने से ताम्रपर्ण और सिंहल एक नहीं माने जा सकते और इसकी लंका (सीलोन-सिंहल) से पहचान करने में कठिनाई उपस्थित होती है।

इन्द्रद्वीप--डा० वासुदेव शरण अग्रवाल के अनुसार इसकी पहचान अंडमान से की गई है।[1]

कसेरुमान—इस का तादात्म्य मलाया से किया गया है।[2]

ताम्रपर्ण (ताम्र वर्ण)—इस की समानता यूनानी लेखकों द्वारा उल्लिखित 'तप्रवेन' (मेक्रिन्डिल-इण्डिया टॉलमी पृ० २४७) अर्थात् लंका से की गई है।[3] परन्तु वामन पुराण में सिंहल और ताम्रपर्ण दोनों ही द्वीपों का अलग-अलग उल्लेख किया गया है।

१—हर्ष चरित का अध्ययन पृ० ११९, कादम्बरी-एक सांस्कृतिक अध्ययन पृ० २५६ श्री एस०-एन० मजुमदार (कनिंघम ऐन्शेन्ट जॉग्रफी पृ० ७५१) ने भी इसकी समानता बर्मा से की है।

२—(कनिंघम ऐन्श० ज्या०, पृ० ७५२)

३—वही पृ० ७५३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गंभस्तिमान्—पहचान अनिश्चित है।

नागद्वीप—यह निकोबार ही है।

सौम्य—यह संभवतः सुमात्रा है।

गन्धर्व--संभवतः यह गन्धार का ही पर्याय है और इस कारण इसकी पहचान युन्नान से की जा सकती है।[1]

वारुण—यह आधुनिक बोर्नियो ही है।

कुमारी द्वीप—(अर्थात् कुमारी का द्वीप)

कुमारी द्वीप का नाम कुमारी से सम्बद्ध होने के कारण प्रसिद्ध हुआ। स्कन्द पुराण के माहेश्वर खण्ड में कुमारिका खण्ड भुवन कोश के समान ही लिखा गया है जिसमें कुमारिका खंड-कौमारिक अर्थात् कुमारी द्वीप का माहात्म्य दिया गया है।

महाराज ऋषभ के पुत्र भरत थे (जिनके नाम पर ही यह देश भारत वर्ष कहलाता है)। भरत के पुत्र शतश्रृंग के आठ पुत्र और नवीं पुत्री उत्पन्न हुई जिनके नाम थे, इन्द्रद्वीप, कसेरु, ताम्रद्वीप, गमस्तिमान, नाग, सौम्य, गान्धर्व, वरुण और कुमारिका:

तस्य पुत्रस्तु भरतः शतश्रृङ्गस्तु तत्सुतः।
तस्य पुत्राष्टकं जातं तथैका च कुमारिका॥
स्कन्द पु० १-२-३९-६८

इन्द्रद्वीपः कसेरुश्च ताम्र द्वीपो गभस्तिमान्।
नागः सौम्यश्च गान्धर्वो वरुणश्च कुमारिका॥ वही १-२-३९-६९

महाराज शतश्रृंग ने इस भारत खंड को नौ भागों में बांट कर आठों पुत्रों को आठ भाग और नवां भाग पुत्री कुमारिका को दे दिया:

इदं भारतखंडं च नवधैव विभज्य सः।
ददावष्टौ स्वपुत्राणां कुमार्यै नवमं तथा॥ वही १-२-३९-११०

इस प्रकार साम्राज्य को अपने पुत्रों और पुत्री में विभक्त उत्तर पर्वत पर तपस्या करने चले गये (स्कन्द पु० १-२-३९-११८)। यहां पर कुछ विशेष

१—डा० मजुमदार, ग्रेटर इण्डिया, पृ० २२: "युन्नान गन्धार महलाता था और ईसा की १३वीं शताब्दी में भी रशीदुद्दीन ने इसे भारतीय नाम से ही पुकारा है।"
डा० मजुमदार, हिन्दू कॉलोनीज़, पृ० २५७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दृष्टव्य बात यह है कि महाराज शतश्रृंग का साम्राज्य और राज्य-अधिष्ठान सिंहल थाः

शतश्रृंगस्य वै राज्ञः सिंहलेष्वभवत्सुता ।
मुखं बर्करिका तुल्यं व्यक्तं तस्या या व्यजायत् ।।
स्कन्द पु० १-२-३९-७८

उस कन्या ने अपने इस दोष (बकरी का मुख) से मुक्त होने के लिये जहाज़ पर सिंहल से मही सागर में स्थित स्तम्भ तीर्थ (खम्भात-कैम्बे) की तीर्थ यात्रा की और वर पाकर पुनः सिंहल लौट आयी तथा सम्पूर्ण वृतान्त अपने पिता को सुनाया :

एवं लब्ध्वा वरान्सर्वान्सा पुनः सिंहलं ययौ ।
शतश्रृंगाय पित्रे च वृत्तान्तं स्वं न्यवेदयत् ।।
स्कन्द पु० १-२-३९-१०६

यह सुनकर शतश्रृंग भी स्तम्भ तीर्थ को गये और वहां से लौटकर फिर सिंहल को वापस आ गये :

तच्छ्रुत्वा विस्मितो राजा लोकाः सर्वे च फाल्गुन ।
प्रशशंसुर्ममहातीर्थमाजग्मुश्चकृतादराः ।।
स्कन्द पु० १-२-३९-१०७

स्नात्वा दत्त्वा च दानानि विविधानि चतेततः ।
सिंहलं च ययुर्भूयस्तीर्थमाहात्म्य हर्षिताः ।।
स्कन्द पु० १-२-३९-१०८

तीर्थ यात्रा से वापस आते ही शतश्रृंग ने अपनी राज्य व्यवस्था का विचार करते हुए साम्राज्य को आठों पुत्रों और कुमारिका को बांट कर दे दिया ।

अनिच्छन्त्यांकुमार्यां च वरं द्रव्यं च पार्थिवः ।
तथाऽन्यदपि प्रीत्याऽसोयद्ददौ नृपतिः श्रृण ।।
स्कन्द पु० १-२-३९-१०९

इदं भारत - खण्डं च नवधैव विभज्य सः ।
ददावष्टौ स्वपुत्राणां कुमार्यैनवमं तथा ।।
स्कन्द पु० १-२-३९-११०

इस प्रकार स्पष्ट है कि सिंहल भारतवर्ष का एक अंग था और सिंहल तथा स्तम्भतीर्थ तक समुद्र यात्राएं प्रचलित थीं । सत्य ही वामन पुराण में सिंहल को भी भारत के नव भेदों का एक अंग माना गया है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इन विभेदों का वर्णन करते हुए स्कन्द पुराण बतलाता है :

महेन्द्रपरतश्चैव इन्द्रद्वीपो निगद्यते ।
पारियात्रस्य चैवार्वाक्खण्डं कौमारिकं स्मृतम् ॥

स्कन्द पु० १-२-३९-११३

अर्थात् महेन्द्र पर्वत (पूर्वी घाट की पर्वत माला) के उस पार स्थित इन्द्र द्वीप कहा जाता है और पारियात्र पर्वत (पश्चिमी विन्ध्यश्रेणी) के पूर्व (इस ओर) में कौमारिक खण्ड बताया गया है। डा० हेमचन्द्रराय चौधरी इन्द्रद्वीप को बंगाल की खाड़ी में स्थित बताते हैं (स्टडीज़ इन इन्डियन ऐन्टीक्विटीज़ पृ० ८४) और इसकी बर्मा के साथ पहचान की ओर ध्यान दिलाते हैं। संभवत: इन्द्रद्वीप अंडमान द्वीप ही है।

इस प्रकार ये नव द्वीप या नव भेद एक दूसरे से समुद्रान्तिरत (समुद्र द्वारा पृथक) हो कर अगम्य बताये गये हैं। समुद्रान्तरित द्वीप ही द्वीपान्तर कहलाते थे। ताम्रपर्ण, नागद्वीप और सिंहल आधुनिक सीलोन के ही विभिन्न भाग थे (इन्डियन ऐन्टीकिटीज़ पृ०८५, नोट १)। बरुण, बोर्नियो ही है और कटाह मलाया प्रायद्वीप का केडा है। इन पुरा वृत्तों पर सन्देह करने के बजाय उनकी सम्यक् परीक्षा आवश्यक है। जब से ये वृत्त लिखे गये कालान्तर में कितने ही भौगोलिक और राजनैतिक परिवर्तन उथल-पुथल होते रहे। इण्डिया से वर्मा और पाकिस्तान तो आँखों देखते ही अलग हुए हैं। संभवत: आज से हजार वर्ष बाद इनको इण्डिया का भाग मानना भी शंका की दृष्टि से देखा जायगा।

द्वीपान्तर

इस प्रकार पृथिवी का वर्णन करते हुए सात महाद्वीपों का वर्णन किया गया है और उसके साथ ही लावण-समुद्र से घिरे नव-वर्षों से युक्त जम्बू द्वीप तथा अठारह द्वीपों का भी उल्लेख किया है। यह अठारह द्वीप द्वीपान्तर कहलाते थे। इन पर विजय करना भारतीय राजनीति की एक विशेषता थी। द्वीपान्तर के साथ घनिष्ठ व्यापारिक और साँस्कृतिक सम्बन्ध भी थे। राजशेखर ने वहां की साहित्यिक चेतना का भी उल्लेख किया है :

द्वीपान्तर भवानां तदनुसारेण वृत्ति प्रवृत्ती। का० मी० १०।४–५

राजशेखर बताते हैं कि कवि लोग भी अपनी रचनाओं में द्वीपान्तर की कथाओं और व्यवहार का निबन्धन करते हैं :

किञ्च न महाकवयोऽपि देश द्वीपान्तर कथा पुरुषाविदर्शनेन
तत्रत्यां व्यवहृतिं निबध्नन्ति स्म ? का० मी, १२।२–३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वीपान्तर व्यवहार :—

"अनेन सार्धं विहराम्बुराशेस्तीरेषु ताडीवनमर्मरेषु।
द्वीपान्तरानीत लवङ्ग पुष्पैरपाकृतस्वेदलवामरुद्भिः"

का० मी०, १२।८–११

यह श्लोक महाकवि कालिदास के प्रथित ग्रन्थ रघुवंश (६–५७) से उद्धृत किया गया है। सत्य ही द्वीपान्तर देश महाकवियों का प्रिय वर्ण्य विषय था। स्वयं कालिदास कहते हैं कि अठारहों द्वीपों में विजय-चिन्ह यूप प्रतिष्ठित किये गये थे (अष्टादश द्वीप निखात यूपः)। नैषध से भी ज्ञात होता है।

अमुष्यविद्या रसनाग्रनर्तकी त्रयीव नीतांग गुणेन विस्तरम्।
अगाहताष्टादशतां जिगीषया नवद्वयद्वीपपृथग्जयश्रियाम्॥

राजशेखर अत्यन्त महत्वपूर्ण सूचना देते हैं कि निश्चयतः पूर्व युग में विद्वान लोग वेदों, इनके अंगों और उपांगों का अवगाहन करने के बाद तथा शास्त्रों को अच्छी तरह अध्ययन कर देशान्तरों और द्वीपान्तरों में भी घूमते थे :—

पूर्वे हि विद्वांसः सहस्रशाखं साङ्गं चवेदमवगाह्य, शास्त्राणि चावबुध्य, देशान्तराणि द्वीपान्तराणि च परिभ्रम्य। का० मी० ७८।१९–२०

और वहां देशान्तर तथा द्वीपान्तर यात्रा के अनुभवों का अपने काव्य में वर्णन करते थे :—

यानर्थानुपलभ्य प्रणीतवन्तस्तेषां देशकालान्तर वशेनान्यथात्वेऽपि तथात्वेनोपनिबन्धो यः स कवि समयः। का० मी० ७८। २०–२२

विदेशों से भी यहां विद्वान आते रहते थे (देशान्तरागतानां च विदुषाम् का० मी० ५५।११–१२) इस प्रकार द्वीपान्तर संस्कृत कवियों की भी विहार भूमि थी। इसका ही प्रभाव था कि भारतीय संस्कृत साहित्य के महाकवि द्वीपान्तर साहित्य की प्रेरणा शक्ति बन गये।[1]

१—दृष्टव्य, हर्ष चरित १-१२ :

कीर्तिः प्रवरसेनस्य प्रयाता कुमुदोज्ज्वला।
सागरस्य परं पारं कपिसेनेव सेतुना॥

डा० मजुमदार काम्बोज के लेख, नं० ६३, पृ० ९९

येन प्रवरसेनेन धर्मसेतुं विवृण्वता।
परः प्रवरसेनोपि जितः प्राकृत सेतुकृत॥ श्लोक ३४

वही पृ० १०९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतवर्ष के अन्य भूखण्डों—**पूर्व देश, दक्षिणापथ, पश्चाद्देश, उत्तरापथ तथा मध्यदेश** (का० मी० पृ० ९३–९४) की तरह द्वीपान्तर भी एक भारतीय भूखण्ड था देश विभाग अध्याय में पूर्वदेश, दक्षिणापथ, पश्चाद्देश, उत्तरापथ और मध्य देश का वर्णन करने के बाद राजशेखर द्वीपान्तर का भी उसी प्रकार वर्णन देना चाहते थे :

द्वीपान्तराणां ये देशाः पर्वताः सरितस्तथा ।
नाति प्रयोज्याः कविभिरिति गाढं न चिन्तिताः ॥

का० मी० ९४।२१–२२

'हुदूदुल आलम' नामक ग्रन्थ में दक्षिण पूर्वी एशिया के द्वीपों (पूर्व द्वीप समूह—जिनको ही प्राचीन युग में द्वीपान्तर कहा गया था)—सुवर्णद्वीप आदि को भारत का अंग माना गया है (डा० बुधप्रकाश इण्टरनेशनल काँग्रेस ऑफ़ आरेन्टलिस्टस १९६४)।

इस प्रकार स्पष्ट है कि द्वीपाख्यान में द्वीपान्तर का विशेष सांस्कृतिक और राजनैतिक महत्व है जिसने संस्कृत कवियों को आकृष्ट किया था।

कुल-पर्वत

बहुत से पर्वतों से विभूषित भारतवर्ष की प्रमुख पर्वतमालाओं को कुल पर्वतों की संज्ञा दी गई है। राजशेखर कुमारी द्वीप के कुल पर्वतों का वर्णन करते हैं :

अत्र च कुमारी द्वीपे—(यहां कुमारीद्वीप में)

विन्ध्यश्च पारियात्रश्च शुक्तिमानृक्षपर्वतः ।
महेन्द्रसह्यमलयाः सप्तैते कुलपर्वताः ॥

का० मी० ९२ । १६-१७

मलय

राजशेखर का भूगोल-ज्ञान पर्वतों, नदियों और देशों के उत्पाद (प्रॉडक्टस) वर्णन करने में है। वे कहते हैं कि विन्ध्यादि पर्वत तो प्रथितलक्षण ही है। किन्तु मलय की चार विशेषताएँ हैं :

तत्र विन्ध्यादयः प्रतीतस्वरूपाः, मलयविशेषास्तु चत्वारः । का० मी० ९२।१८

१—मलय, प्रथमतः, जड़ तक सांपों से वेष्टित श्रेष्ठ चन्दन तथा कक्कोल (शीतल चीनी या वन कपूर), एला (इलायची), मरिच (काली मिरच) तथा जातीवृक्षों (जायफ़र) की जन्मभूमि है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२—द्वितीयत: इस पर्वत की घाटी को अभिसिंचित करने वाली ताम्र-पर्णी नदी के तटवर्ती प्रदेश मुक्ताओं और रत्नों की खान थे। इसीलिये पांड्य देश (जहां मलय पर्वत और ताम्रपर्णी नदी बहती है) मणि-मुक्ताओं के लिये प्रसिद्ध था :

……रतन मानिकं पडराजा……मुत मनि रतनानि आहरा पयति……

खारवेल का हाथी गुंफा लेख—पंक्ति १३.

वहीं अगस्त्य ऋषि का आश्रम भी था।

वहां विद्रुम (मूंगे का वृक्ष) के वृक्ष हैं जिनमें मुक्ताफल होते हैं तथा सिंहों से भरे हुए प्रदेश में कपूर के वृक्ष होते हैं।

३—तृतीयत: वहीं देवताओं का विहार-क्षेत्र है और ऋषियों की भी तपस्थली है। सदा फल फूलों से भरा हुआ वह मलय पर्वत एक कौतुकागार ही है।

४—चौथी विशेषता है कि वहीं पर रावण की राजधानी लंका है जो सुन्दर तथा रमणीय प्रासादों की पंक्तियों से सुशोभित है और जिसके द्वार की अर्गला (सांकर) से मिली हुई सुरेश्वर की प्रतिमा है। यहां ही सुन्दर और सुगन्धित मलयज वायु से वसन्त और कामदेव का संचरण होता है।

(का० मी० पृ० ९२-९३)

यहां पर कवि ने लंका-मलय[1] (मलय का वह भाग जो लंका में स्थित है) का वर्णन अपने काव्यात्मक ढंग से मलयज-वसन्त कोकिला और कामदेव का परम्परागत वर्णन प्रस्तुत किया है। परन्तु इस पर उनके भौगोलिक ज्ञान की छाप लग कर यह कवि-वर्णन काल्पनिक न होकर सत्य ही है। आधुनिक सीलोन का मध्य भाग ही मलय कहलाता है।

मलय पर्वत पश्चिमी घाट का दक्षिणी भाग है जो समुद्र तट तक विस्तृत है और समुद्र से होता हुआ उस पार सीलोन में भी यह परिलक्षित होता है।

संभवत: इसके दक्षिणी भाग में रत्नावतीपुर था (दक्षिणे मलयोत्संगे रत्नावत्या: पुर:)—का० मी० पृ० ३९। २६)।

मलयस्थली में पान, तमालपत्र, चन्दन, सुपारी, इलायची आदि वन-स्पतियों की प्रधानता तो थी ही :

ताम्बूलवल्ली परिणद्ध पूगास्वेलालतालिङ्गित चन्दनासु।
तमालपत्रास्तरणासु रन्तुं प्रसीद शश्वन्मलयस्थलीषु॥

का० मी० ७७। १३-१६

१—रामायण—सुन्दर कांड ३९। ५०; युद्ध कांड ६७। ६६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परन्तु चन्दन की अप्रतिम विशिष्टता थी :—

मलय एव चन्दनस्थानं ।। का० मी० ८१ । ९

इसीलिये उन पर नागों का भी निवास रहता था :

तापापहारचतुरो नागावासः सुर प्रियः ।
नान्यत्र मलयादद्रेर्दृश्यते चन्दनद्रुमः ।।

का० मी० ८१ । ११-१२

इसी कारण इसे चन्दनगिरि (का० मी० ९६ । ७) भी कहा गया है ।

विन्ध्य

प्रसिद्ध कुल पर्वत है जिसके समीप नर्मदा नदी बहती है । (विन्ध्यस्याद्रेः परिसर नदी नर्मदा-का० मी० ६८।४) । यह पर्वत श्रेणी मध्य देश की दक्षिणी सीमा पर स्थित बताया गया है (का०मी०, ९४ । १७-१८) । आधुनिक विन्ध्य पर्वत अपनी प्राचीनता का प्रतीक है ।

पारियात्र

यह भी प्रसिद्ध कुल पर्वत है जिसकी पहचान विन्ध्याचल के पश्चिमी भाग से की गई है । इसे भी अश्वघोषकृत सौन्दरनन्द (२।६२) में मध्य देश की दक्षिणी सीमा बताया गया है । डा० भन्डारकर के अनुसार (एशियाटिक रिसर्चेज ८ । ३३८) पारियात्र विन्ध्य श्रेणी का वह भाग है जिसमें से चम्बल और बेतवा नदियाँ निकलती हैं ।

डॉ० राय चौधरी ने इसे भूपाल के पश्चिम में स्थित बताया है (इन्डि ऐन्टी०, पृ० १३०)

शुक्तिमान्

यह भी प्रथित कुलपर्वत है, जिसे कुल पर्वतों की विशेष सूची में उल्लिखित किया गया है । कनिंघम महोदय के अनुसार शुक्तिमती नदी (केन नदी) का उद्गम होने के कारण शुक्तिमान को छत्तीसगढ़-बस्तर के मध्य तथा हजारी बाग के उत्तर में फैली हुई पर्वत शृङ्खला माना गया ।[१] श्री सी० वी० वैद्य इसकी पहचान पश्चिम भारत में काठियावाड़ की पहाड़ियों से करते हैं ।[२] डे महोदय के अनुसार शुक्तिमत विन्ध्य पर्वत का वह भाग है जो पारियात्र और ऋक्ष पर्वतों को मिलाता है और जिसमें गोंडवाना, छोटा नागपुर और महेन्द्र की पहाड़ियां भी सम्मिलित हैं ।[३] डॉ० राय चौधरी के

१—आर्केला० सर्वे रि० १७-२४-२६

२—एपिक इन्डिया पृ० २७६

३—डे ज्याग्रफिकल डिक्शनरी पृ० १९६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुसार शुक्तिमत पर्वत वर्तमान रायगढ़ की शक्ति पहाड़ियाँ ही हैं जो पूर्व में मानभूमि के दलमा पर्वत तक फैली हैं।[१]

संभवतः यह पूर्वी और पश्चिमी घाट के मध्य स्थित हैदराबाद और गोलकुण्डा का पठार ही है।

ऋक्षपर्वत

इस कुल पर्वत की यह संज्ञा यहां पर ऋक्षों (रीछों) की बहुतायत से ही पड़ी।[२] यह सतपुड़ा पर्वत मालूम पड़ता है।

महेन्द्र

यह पूर्वी घाट शृंखला ही है। रघुवंश[३] और नैषध चरित[४] में इसे कलिंग में स्थित बताया गया है। गंजाम के निकट का भाग अब भी महेन्द्र पर्वत कहलाता है।

सह्य

प्रसिद्ध कुल पर्वत है जिसकी समानता पश्चिमी घाट से की गई है। इसके उच्च तटों के समीप ही (कृष्णा) कृष्णवर्णा नदी बहती थी (का०मी० ८४।२६-२७ से ८५।१-२ तक)।

इन पर्वतों के अतिरिक्त राजशेखर ने भारत के प्रत्येक अंचल में स्थित पहाड़ियों का उल्लेख उन्हीं देश विभागों के साथ किया है। इसके अतिरिक्त काव्य मीमांसा में कुछ अन्य पर्वतों का भी उल्लेख मिलता है:—

मेरु (का०मी० २२।२७, ८५।९, १४) की पामीर से पहचान की गई है।[५]

यह शैलराज जम्बूद्वीप के मध्य में स्थित था (का० मी० ९१।२६-२९)।

हिम शैल

हिमवान भारतवर्ष या कुमारी द्वीप की उत्तरी मर्यादा है (का०मी० ९२।१०-११)। अद्रिराज हिमवन्त (का०मी० ९२।१०-११) की शिलाओं और झाड़ियों को देव नदी गंगा पवित्र करती है (हिमशैल शिला निञ्कुज··· सुरापगाम्भः का० मी० २९।२२-२३)। राजशेखर ने भी कालिदास के (कुमार सं० १।१) स्वरूप की प्रतिष्ठा की है:

१—इन्डियन ऐन्टी पृ० १२०

२—रामायण युद्धका० २७। ७-९

३—रघुवंश ४-४३।

४—नैषध च०, १२-२४।

५—पुराणम्—जनवरी १९६४ पृ० २२४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधीविगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मान दण्डः ॥"

का० मी० ९६। ६-९

राजशेखर ने इसे भूर्जपत्र का विशेषतः उत्पत्ति स्थान बतलाया है :

हिमवानेव भूर्जोत्पत्तिस्थानम्। का०मी० ८१।९-१० अर्थात् हिमालय ही भुर्ज की जन्मभूमि है।

इसी तथ्य को फिर कहते हैं :

भञ्जन्भूर्जद्रुमालीस्तुहिन गिरितटेषूद्गतास्त्वक्करालाः ॥ का०मी० ९९।१९

यहां पर एक प्राचीन विवाद का समाधान करना असंगत न होगा। आर्यों के मूल स्थान पर अटकलें लगाते हुए मेयर साहब ने फ़्लोरन्स (ईटली) में रखे हुए तथा प्राचीन मिश्र के अट्ठाइसवें राजवंश की क़ब्र में मिले हुए रथ की ओर ध्यान दिलाया था (चाइल्ड-'दि आर्यन्स' पृ० २६)। इस रथ की अक्ष में बंधी हुई भूर्ज-छाल को देख कर मेयर महोदय ने बताया कि मिश्र के निकट काकेशस (काफ़) पर्वत के अतिरिक्त और कहीं निकट भूर्ज वृक्ष नहीं मिलता था। अतः आर्यों का आदि देश काकेशस पर्वत के ही निकट होना चाहिये, जहां से वे बैबिलोनिया आदि देशों में फैले और अपने रथ का प्रचार किया (चाइल्ड-'दि आर्यन्स' पृ०२६-२७। परंतु राजशेखर सदृश प्राचीन और विज्ञ विचारक के 'तथ्यहिमवानेव भूर्जोत्पत्ति स्थानम्'—को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त आर्य देश सम्बन्धी धारणा को अटकल के अतिरिक्त और क्या कहा जाय। भूर्ज भारत के धार्मिक और साहित्यक क्षेत्र में सुपरिचित था। राजशेखर कहते हैं—

संजादा णब भुज्जपिंजर मूही जोशाहस्र पुब्बा दिसा।

(संस्कृत—सन्जाता नव भुर्जपिञ्जर मुखी ज्योत्स्नया पूर्वा दिशा ॥)

कपूर मंजरी ३।२५

हेमकूट

इसे एक वर्ष पर्वत भी कहा गया है (का०मी० ९२।६) जिसका सम्बन्ध किंपुरुष वर्ष से है।

पुराणों की कुलपर्वतों की तालिका में भी हमें हेमकूट का उल्लेख (स्कन्द पु० ५-३-१७-३३) मिलता है। यहां पर यह पर्वत हिमवन्त का ही प्रतिनिधित्व करता है (स्कन्द पु०६-२६८-११), क्योंकि प्रत्येक कुलपर्वत एक

१—कर्ण के रेवा अभिलेख में भी हिमालय को भूर्ज वृक्ष से विशेषतः सम्बद्ध किया गयाहै :

भूर्जत्वचः···मषीवर्ण विशेषभाजः। हिमाचले येन···भुजिष्यपत्राणि ॥

श्लोक २९ कार्पस इ—इ। भाग ४ पृ० २७०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूखण्ड विशेष का परिचायक है। राजशेखर ने इसे हिमालय से मिला हुआ वहीं पर स्थित बताया है (हिमवति हेमकूट लग्ने-का० मी० ५९।२)। महाभारत अर्जुन की उत्तरी दिग्जय वर्णन में उल्लेख करता है (सभापर्व २८।६)। यह कैलाश का ही नामान्तर है (डे० ज्या० डिक्शनरी पृ० ७५)।

कैलाश

(का० मी० ८५।१५) यह शंकर का आवास पर्वत है।

द्रोणाचल

यह भी हिमालय का एक शिखर है जिसे तोड़ कर हनुमान जी लक्ष्मण की औषधि उपचार के लिये ले गये थे। यहीं मृतसंजीवनी बूटी होती थी

द्रोणाचलं पवनसूर्नुरिवोद्धरामि ॥ का० मी० ८७।४

नदियां

राजशेखर के अनुसार देश में १०५ या ५०० नदियां (पंच शतानि जलं का० मी० ९२।९-१०) थीं। रामायण, (युद्ध का० १२८।५२ (१)) में भी नदियों की संख्या ५०० बतायी गयी है:—

नदीशतानां पञ्चानां जलं कुम्भैरुपाहरन्।

परन्तु काव्य मीमांसा में उल्लिखित नदियों की संख्या बहुत ही कम है। कवि नदियों के पद्मों (का० मी० ७९।६) तथा नीलोत्पलों (का० मी० ७९।१०) आदि का भी उल्लेख करता है।

आकाश[1] गंगा (अभ्रगंगा[2]) प्रसिद्ध ही है। हिमालय पर प्रवाहित होने वाली देवनदी[3]-गंगा भी सुपरिचित है। गौरी (पंजकोरा) और सरस्वती नदियों के भी नाम हैं जो हिमालय से सम्बद्ध थीं[4]। हिमालय से ही निसृत चन्द्रभागा (चिनाब) की घाटी में भी भूर्ज वृक्ष होते थे:

चुम्बन्तश्चन्द्रभागा सलिलमविकलं भूर्जकाण्डैक चण्डाः ॥

नर्मदा विन्ध्याद्रि को अभिसिंचित करती थी:— का० मी० ९९।२५

विन्ध्यस्याद्रेः परिसरनदी नर्मदा सुभ्रु सैषा ॥ का० मी० ६८।४

ताम्रपर्णी मलय पर्वत पर बहने वाली (मलयोपकण्ठ सरिता[5]) प्रसिद्ध नदी थी।

इस प्रकार सम्पूर्ण देश ऐसी ही अन्य पवित्र और प्रसिद्ध नदियों से अभिसिंचित होता था।

---

१ का० मी० ४१।११
२ वही ६।१८-१९
३ वही २९।२२-२३
४ वही १०।८-९
५ वही ४५।१८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४—देश-विभाग

काव्यमीमांसा का १७वां अध्याय देश-विभाग है। इसमें भारत को पांच भागों में विभक्त कर प्रत्येक देश-विभाग की स्थिति और विस्तार के साथ ही साथ उसमें स्थित जनपदों, पर्वतों और नदियों की सूची के अतिरिक्त इस क्षेत्र की प्रसिद्ध उपज का उल्लेख किया गया है। इससे स्पष्ट है कि राजशेखर का भौगोलिक ज्ञान कितना महत्वपूर्ण था और इससे भी अधिक विशेष रूप से उल्लेखनीय बात यह है कि उनका यह भौगोलिक वर्णन करने का ढंग भी अपने ही प्रकार का है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि प्राचीन युग में हिन्दुओं ने भूगोल विद्या की उपेक्षा नहीं की थी और इस विद्या का भी यथेष्ट विकास हुआ था।[1] प्रत्येक दरबार में एक भूमि-भाग विशारद होता था।[2]

आर्यावर्त

पूर्व और पश्चिम समुद्र के बीच, तथा हिमालय और विन्ध्य पर्वतों के बीच में स्थित भूखण्ड को ही आर्यावर्त कहा गया है जो चातुर्वण्य और चातुराश्रम तथा शिष्टाचार का मूल स्थान था:—

पूर्वापरयोः समुद्रयोर्हिमवद्विन्ध्ययोश्चान्तरमार्यावर्तः।
तस्मिंश्चातुर्वण्यं चातुराश्रम्यं च। यन्मूलश्च सदाचारः॥
का० मी० ९३। १७-१८

मनु भी कहते हैं:—

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तुपश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्तम् विदुर्बुधाः॥ मनुस्मृति २। २२

अन्तर्वेदी

'विनशनप्रयागयों गंगायमुनयोश्चान्तरमन्तर्वेदीति'
का० मी० ९४।१८

पश्चिम में विनशन (जहाँ सरस्वती अदृष्ट हो जाती है) से लेकर पूर्व में प्रयाग तक गंगा और यमुना नदियों के बीच का भूखण्ड अन्तर्वेदी कहलाता था।

१—एलफ़िन्स्टन (हिस्ट्री ऑफ़ इण्डिया पृ०१४५) साहब ऐसा नहीं मानते हैं।
२—मानसोल्लास (मैसूर संस्करण), १। २। १३४ : भूमिभागविशारदः।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यहाँ ही महोदय (कन्नौज) प्रधान स्थान था (तत्रापि महोदयं—का० मी० ९४। २४)।

भारत या कुमारी द्वीप के स्थलीय विभाग

स्थल विभाग

राजशेखर कुमारीद्वीप या भारत को पांच विभागों में विभक्त करते हैं, (पंच स्थलमिति विभागेन)[१]। अथर्व वेद[२] भी देश-विभाजन पर प्रकाश डालता है। एतरेय ब्राह्मण[३] में पांच विभागों का उल्लेख मिलता है जिनके बीच में मध्यदेश स्थित था—**मध्यमायां प्रतिष्ठा दिशि या मध्य देश।**

इसी देश-विभाग की परम्परा को महाभारत[४] और पुराणों[५] ने भी अपनाया। युअनच्वांग भी 'पंच-भारत (फ़ाइव इन्डीज़) का उल्लेख करता है। वस्तुत: ये भी भारत के पांच विभाग ही हैं। सोम देव सूरी ने यशस्तिलक में भारतवर्ष को ६ भागों में विभक्त बताया है :

अस्ति खल्विहैवषटखंडमंडलीविभागविचित्रे भरत क्षेत्रे।[६]

वायु पुराण के अनुसार 'हिमाह्वं दक्षिणं वर्षं' अथवा भारत वर्ष (वायु पु० ३३। ५२) या भारती धरा (वायु पु० ३३। ६२) को सात खण्डों में विभक्त किया गयी है :

तैरिदं भारतं वर्षं सप्तखंडं कृतं पुरा॥

वायु पु० ३३।६१

परन्तु जनपदों के वर्णन में ९ विभागों का उल्लेख (वायु पु० अध्याय४५) मिलता है जो मत्स्य पुराण (अध्याय ११४) से मिलता है मार्कण्डेय पुराण[७] और वराह मिहिर की वृहत्संहिता[८] में भी भारत को ९ विभागों में बाँटा गया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि यह देश विभाग कालांतर में भी मनीषियों का चिंत्य विषय बना रहा और वे अपनी-अपनी दृष्टि से इन देश विभागों में वृद्धि करते

१—का०मी० ९२।१०

२—अथर्ववेद १२-१-१२ वही १९-१ (-१७-२) से ९ तक

३—एतरेय ब्राह्मण ३८-३

४—सभा पर्व अध्याय २५-३२

५—स्कन्द पु० ३-१-२१—३५, ३९ से ४२ तक

६—यशस्तिलक-भाग १, पृ० १०४ (बनारस संस्करण)

७—मार्कण्डेय पुराण अध्याय ५८

८—वृहत्संहिता अध्याय १४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रहे। परन्तु यह देश विभाग की परम्परा पांच विभागों पर ही आधारित है। प्राचीन साहित्य और इतिहास में दिग्जय के वृत्तांत मिलते हैं। देश विभाजन भी दिग् भागों के आधार पर प्रचलित था। यह दिग्जय और दिग्-भागों की परम्परा रामायण, महाभारत और पुराणों तथा अन्य संस्कृत ग्रंथों में भी उल्लिखत की गयी है।

रामायण

प्राच्योदीच्या प्रतीच्या च दाक्षिणात्याश्चभूमिपाः ॥ अयोध्या० ३।२५

उदीच्याश्चप्रतीच्याश्च दाक्षिणात्याश्च केवलाः।

कोटचापरान्ताः सामुद्रारत्नान्युपहरन्तु ते ॥ वही ८२।८

इसी प्रकार किष्किंधा का० में जनपद वर्णन दिग्भागों के आधार पर किया गया है:

दिशं पूर्वां (किष्किंधा का० ४०।१९), दक्षिणां (किष्किंधा का० ४१।१, ६), प्रतीचीदिशं या पश्चिमां (किष्किंधा का० ४२।५,१०,५५,५८) और उदीची दिशं (किष्किंधा का० ४३।४) का उल्लेख मिलता है।

महाभारत

प्राची, दक्षिणां दिशं (आदि पर्व ३३।१६) और दिशं प्रतीचीम् तथा उत्तरां दिशम् (आदि पर्व ३३।१७) का भी प्रचुर उल्लेख मिलता है। भीम ने प्राची दिशा की विजय की और इसी प्रकार अर्जुन, नकुल और सहदेव ने भी क्रमशः उदीची, प्रतीची तथा दक्षिण दिशाओं को जीतकर सम्पूर्ण भारत वर्ष पर यौधिष्ठिर साम्राज्य की स्थापना की (आदि पर्व ६२।३७-३९)। इस प्रकार महाभारत के अनुसार भी प्राच्यानुदीच्यान् पाश्चात्यान् दक्षिणात्यान् (आदि पर्व १२०।१२) की परम्परा परिलक्षित होती है। यही चार दिग्भाग थे।

तथा प्राच्यः प्रतीच्याश्च दाक्षिणात्योत्तरापथा ॥

भीष्मपर्व १५।१७ (१)

जनपद वर्णन में 'जनपदा दक्षिणा' (भीष्मपर्व ९।५८) तथा "जनपदाः प्राच्योदीच्यास्तथैव च (भीष्मपर्व ९।७०) के उल्लेखों से भी दिग्भागों के आधार पर देश विभाग की परम्परा का प्रचलन ज्ञात होता है:

हरिवंश पुराण

इसमें निम्नलिखित देश-विभागों का उल्लेख मिलता है

उत्तरापथ देश—हरिवंशपर्व ११-१४ } यह भारत के दो ही मुख्य
दक्षिण दिशा वही १-१५ } विभाग हैं, जो प्रसिद्ध ही हैं।

या दक्षिणापथ वही १८-६८, विष्णुपर्व ३९।१०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मध्य देश वही १०-२१, विष्णुपर्व
५२ । ४; ५७ । २, ३, ४ ।

प्राची दिशम् वही ३१-५
पूर्व पश्चिमजांश्चैव उत्तरापथिकान्—विष्णुपर्व ५२ । ५
दक्षिणापथिका वही ५२ । ८, ४८

हरिवंश 'नाना दिग्देशों' (विष्णुपर्व ५५ । ८०) के अतिरिक्त उत्तरापथ (विर्ष्णपर्व १०९ । २५), दक्षिणापथ (विष्णुपर्व १०९ । २९) और प्राच्य दिश तथा पश्चिमामाश्रिता दिशम् (विष्णुपर्व १०९ । ३४) में प्रवाहित होने वाली नदियों का भी विभाग-वर्णन करता है । इस प्रकार हरिवंश में भी भूमि-भाग (प्रविभागं क्षितेः······भविष्यपर्व ३५ । २) की परम्परा 'चतुरन्तां धरां' (भविष्यपर्व ३५ । ४) पर ही आधारित है ।

वायु, मत्स्य और मार्कण्डेय पुराणों में निम्नलिखित नौ भूखण्डों का उल्लेख हुआ है :

मध्य देश	वायुपुराण ४५।१११	मत्स्य ११४।३६	मार्कण्डेय ५८।३३
मनोरम प्रदेश	वही ४५।११२-११४	वही ११४।३७-३९	वही ५८।३४
अपरांता	वही ४५।११५, १२८	वही ११४।५१	वही ५८।३६, ४९
उदीच्या	वही ४५।१२१	वही ११४।४३	वही ५८।४२
प्राच्या	वही ४५।१२१, १२३	वही ११४।४५	वही ५८।४२
दक्षिणापथ	वही ४५।१२४, १२८	वही ११४।४६	वही ५८।४५, ४९
अन्तर नर्मदा	वही ४५।१३०	वही ११४।५०	उत्तर नर्मदा: वही ५८।५१
विंध्य (पृष्ठ)	वही ४५।१३१, १३४	वही ११४।५४	वही ५८।५२
पर्वताश्रयिण	वही ४५।१३५	वही ११४।५५	वही ५८।५६

इन तीन देश-भाग तालिकाओं में प्रायः सभी नाम मिलते हैं। केवल वायु और मत्स्य के अन्तर्नर्मदा खण्ड को मार्कण्डेय पुराण में 'उत्तर नर्मदा' खण्ड कहा गया है। इससे इस खण्ड की स्थिति भी स्पष्ट हो जाती है। वामन पुराण में इसी देश भाग को 'सुनर्मदा' (१३-५२) बताया गया है। वामन पुराण के अनुसार कुमार द्वीप के निम्नलिखित खण्ड हैं :

१—मध्य देश	वामन १३ । ३५, ३७
२—उत्तरापथ	,, १३ । ४४
३—प्राच्य	,, १३ । ४६
४—दाक्षिणात्य	,, १३ । ५०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५—सुनर्मदाः	,,	१३ । ५२
६—पश्चिम	,,	१३ । ५३
७—विन्ध्य-मूलस्थ	,,	१३ । ५६
८—पर्वताश्रयिणः	,,	१३ । ५७

इस प्रकार यहां पर 'मनोरम देश' का उल्लेख नहीं है। परन्तु अन्यत्र 'देशं सप्तगोदावरं शुभम्' (वामन ६३ । ७७) का उल्लेख मिलता है।

विष्णु पुराण में मध्य देश (२ । ३ । १५) पूर्वदेश (२ । ३ । १५ दक्षिणाद्या (२ । ३ । १६) और अपरान्ता (२ । ३ । १६) का उल्लेख भुवन कोश खण्ड में मिलता है। इसी पुराण में अन्यत्र उत्तरापथ (४-२–१३) और दक्षिणापथ (४। २। १४) तथा दक्षिणपूर्व, प्रतीच्य और दक्षिण (४। १०। ३१) तथा उदीच्य (४ । १० । ३२, ४ । १७ । ५) के भी उल्लेख मिलते हैं। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में निम्नलिखित देश-भागों का उल्लेख मिलता है, जिनका उल्लेख गरुड़ पुराण में भी प्राप्त होता है:

१—मध्य देश	वि० धर्म०	१ । ९ । २	गरुड़ पु० पू०	५५ । १०
२—पूर्व	,,	१ । ९ । ३	,,	५५ । ११
३—पूर्वदक्षिण	,,	१ । ९ । ४	,,	५५ । १२
४—दक्षिणापथ	,,	१ । ९ । ५	,,	५५ । १३
५—दक्षिण पश्चिम	,,	१ । ९ । ६	,,	५५ । १४
६—पश्चिम	,,	१ । ९ । ७	,,	५५ । १५
७—उत्तरपश्चिम	,,	१ । ९ । ८	,,	५५ । १६
८—हिमवान-उदीची	,,	१ । ९ । ९	,,	५५ । १७
९—उदक्पूर्व	,,	१ । ९ । १०	,,	५५ । १८

विष्णुधर्मोत्तर का यह दिग्देश (१ । ९ । ११) वर्णन अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जिसमें मध्य देश से प्रारम्भ होकर परिक्रमानुसार सम्पूर्ण देश के भूभागों का वर्णन किया गया है[१]। आगे चलकर यही 'नव खण्ड' परम्परा प्रसिद्ध होगई। राजशेखर भी काव्यमीमांसा में दिग्भागों का विवेचन करते हुए कहते हैं कि दिशा-विभाग (देश-विभाग) अन्तर्वेदी के सम्बन्ध से करना चाहिये। यही (पूर्व) आचार्यों का भी मत था:

"......**अन्तर्वेदीति। तदपेक्षया दिशो विभजेत" इत्याचार्याः॥**

का० मी० ९४ । २३-२४

परन्तु इस सम्बम्ध में भी महोदय (**कन्नौज**) को मुख्य केन्द्र मानकर देश-विभाजन करना चाहिये (तत्रापि महोदयं मूलमवधीकृत्य" इति यायावरीयः। का० मी० ९४ । २४-२५)। दिग्विभाग अनिश्चित ही है, क्योंकि जो वामन स्वामी के पूर्व है वही ब्रह्मशिला के पश्चिम है, जो गाधिपुर के दक्षिण है वही कालप्रिय के उत्तर हैं (का० मी० ९४ । २५-२८)।

१—बृहत्संहिता १४ । १ : भारतेवर्षे मध्यात् प्रागादि विभाजिता देशाः।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस अनिश्चयता के होते हुए भी राजशेखर ने पंच-स्थल विभाग की प्राचीन परम्परा को ही माना है। उनके अनुसार निम्नलिखित देश भाग हैं :—

१—पूर्व-देश	का० मी०	९३ । २०
२—दक्षिणापथ	वही	९३ । २५
३—पश्चाद्देश	वही	९४ । ४
४—उत्तरापथ	वही	९४ । ९
५—मध्य देश	वही	९४ । १५
द्वीपान्तर	वही	९४ । २१-२२

द्वीपान्तर भी एक देश विभाग के रूप में ही उल्लिखित होता है; क्योंकि कवि इस खण्ड के देशों पर्वतों, सरिताओं आदि के लिये भी औत्सुक्य दिखलाता है। परन्तु कवियों द्वारा अतिप्रयोज्य न होने के कारण इनका वर्णन नहीं किया गया है :—

द्वीपान्तराणां ये देशाः पर्वताः सरितस्तथा।
नातिप्रयोज्याः कविभिरिति गाढं न चिन्तिताः॥
का० मी० ९४ । २१-२२

कवि ने पंचस्थल विभाग को विभिन्न क्षेत्रों के निवासियों के रंगों का वर्णन करने में (वर्णनियम का० मी० ९६ । २३-२५) भी अपनाया है :

तद्वद्वर्ण नियमः। तत्र पौरस्त्यानां श्यामो वर्णः, दाक्षिणात्यानां कृष्णः, पाश्चात्यानां पाण्डुः, उदीच्यानां गौरः, मध्यदेश्यानां कृष्णः श्यामो गौरश्च।

वृहत्संहिता (अध्याय १४-१) तथा मार्कण्डेय (अध्याय ५८ । २-४) नारद पुराण (पू० ३६-७३९) और स्कन्द पुराण (७ । १ । १६७ । ३३) में भारत को कूर्म रूप में स्थित बताया गया है। इस प्रकार से अवस्थित भारत को भी नौ भागों में विभक्त किया गया है :

भगवन्! कथितं सम्यक भवता भारतं मम्।
सरितः पर्वतादेशा ये च तत्र वसन्ति वै॥ मार्क०पु० ५८ । १
किन्तु कूर्मस्त्वया पूर्वं भारते भगवान हरिः।
कथितस्तस्य संस्थानं श्रोतुमिच्छाम्यशेषतः॥ वही ५८ । २
कथं स संस्थितो देवः कूर्मरूपी जनार्दनः।
शुभाशुभं मनुष्याणां व्यज्यते च ततः कथम्॥ वही ५८ । ३
यथा मुखं यथापादन्तस्य तद ब्रूह्यशेषतः।
प्राङ् मुखो भगवान देवः कूर्मरूपो व्यवस्थितः।
आक्रम्य भारतं वर्षं नवभेदमिदं द्विज॥ वही ५८ । ३

इस प्रकार स्थित भारत को ही कूर्म-मूर्ति कहा गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५—पूर्व देश

आर्यावर्त का वर्णन करने के बाद ही राजशेखर देश वर्णन करते हैं।

जनपद वर्णन

"तत्र वाराणस्या पुरतः पूर्व देशः यत्राङ्गवंगकलिंगकोसलतोसलोत्कल-मगधमुद्गरविदेहनेपालपुण्ड्रप्राग्ज्योतिषताम्रलिप्तकमलदमल्लवर्त्तकसुह्मब्रह्मोत्तर प्रभृतयो जनपदाः[1]। का० मी० ९३। २०-२२

'तत्र'[2] शब्द से ज्ञात होता है कि पूर्व देश आर्यावर्त का ही एक उपखंड था, जो वाराणसी से पूर्व दिशा में पूर्व समुद्र तक विस्तृत था, क्योंकि आर्यावर्त की पूर्वी सीमा पूर्व समुद्र थी। वाराणसी के पूर्व ही मगध आदि देश स्थित थे।[3] काव्य मीमांसा तृतीय अध्याय में भी उलिखित है—

अथ सर्वं प्रथमं प्राची दिशं शिश्रियुर्यत्राङ्गवङ्गसुह्मब्रह्मपुण्ड्राद्या जनपदाः।
का० मी० ८। ३-४

वायु पुराण के अनुसार प्राच्य देशों के नाम निम्नलिखित हैं :—

अन्ध्रवाकाः सुजरका अन्तर्गिरि बहिर्गिराः।
तथा प्रवङ्गवङ्गेया मालदा मालवर्तिनः॥
वायु पु० ४५। १२२

ब्रह्मोत्तराः प्रविजया भार्गवा गेयमर्थकाः।
प्राग्ज्योतिषाश्च मुण्डाश्च विदेहास्तामलिप्तकाः।
माला मगधगोविन्दाः प्राच्यां जनपदाः स्मृताः॥
वायु पु० ४५। १२३

१—चौखम्बा संस्करण का०मी० पृ० २७६ में यत्रांगवंगकलिंग······आदि पाठ मिलता है। परंतु बड़ौदा (जी० ओ० एस०) संस्करण में (पृ० ९३) ऊपर दी हुई तालिका में वंग का उल्लेख नहीं है।

२—तत्रार्यावर्ते वाराणस्या पुरतः पूर्वस्यां दिशि पूर्व देशः। का० मी० ९३। २०

३—'वाराणसीतः पूर्वेण ये केचिन्मगधादयः। का० मी० ३३। २६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मत्स्य पुराण के अनुसार—

प्राच्यान्देशान्निबोधत । ११४ । ४३

अंगा वंगा मद्गुरका अन्तर्गिरिर्वहिर्गिरी ।
ततः प्लवङ्ग मातङ्गा यमकामल्लवर्णकाः ॥
सुह्मोत्तराः प्रविजया मार्गवागेयमालवाः । वही ११४ । ४४
प्राग्ज्योतिषाश्च पुण्ड्राश्च विदेहास्ताम्रलिप्तकाः ।
शाल्व मगध गोनर्दाः प्राच्या जनपदाः स्मृताः ॥

वही ११४ । ४५

इस प्रकार राजशेखर की देश तालिका पौराणिक सूची पर ही आधारित है, केवल कुछ भेद हैं जो अन्य पुराणों में भी मिलते हैं। भागवत पुराण के अनुसार राजा बलि की पत्नी के गर्भ से दीर्घतमा मुनि ने ६ पुत्र—अंग, वंग, कलिंग, सुह्म, पुण्ड्र और अन्ध्र—पैदा किये। इन लोगों ने अपने नाम से छः प्रदेश पूर्व देश में स्थापित किये :—

ततो हेमोऽथ सुतपा बलिः सुतपसोऽभवत् ॥ भागवत पु० ९ । २३ । ४
अंग वंग कलिंगाद्याः सुह्म पुन्ड्रान्ध्रसंज्ञिताः ।
जज्ञिरे दीर्घतमसो बलेः क्षेत्रे महीक्षितः । वही ९ । २३ । ५
चक्रुः स्वनाम्नाविषयान् षडिमान् प्राच्यकांश्च ते ॥ वही ९।२३।६ (१)

अंग

इस प्रकार राजा बलि के पुत्र (मुनि दीर्घ तमस—जात) अंग के नाम से ही इस प्रदेश का नाम करण हुआ। महाभारत के अनुसार भी यह पूर्वी क्षेत्र में स्थित था (वनपर्व २५४ । ८) और भीम ने इसको जीता था (उद्योग पर्व ५० । १९) ।

दुर्योधन ने कर्ण को अंग देश का राज्य दिया था (आदि पर्व १३५-३६)। इसमें मालिनी नगर सम्मिलित था।[1] चम्पा इसकी राजधानी थी।[2] चम्पा और मालिनी एक ही थीं।[3] यह भागीरथी (गंगा) के तट पर स्थित[4] पवित्र स्थान था।[5]

१—शान्ति पर्व ५-६ : प्रीत्या ददौ स कर्णाय मालिनीम् नगरीमथ ।
अंगेषु नरशार्दूल स राजासीत् सपत्नजित ॥

२—वही ५-७ : पालयामास चम्पां च कर्णः परबलार्दनः ।
दुर्योधनस्यानुमते तवापि विदितं तथा ॥

३—मत्स्य पु० ४८।९७ : चम्पस्य तु पुरी चम्पा पूर्वं या मालिनीऽभवत् ।

४—वनपर्व ८५-१४

५—वही ११३—१५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामायण के अनुसार अयोध्यानाथ महाराज दशरथ और अंग-राज में मित्रता थी।[१] यह राज्य एक प्रथित देश था।[२] रुद्र के क्रोध से कामदेव के सभी अंग जीर्णशीर्ण होकर नष्ट हो गये और जहाँ उसने अपने अंग को छोड़ा, वही भूखण्ड अंग देश कहलाने लगा।[३] रामायण भी इसे पूर्व में[५] स्थित बताती है।

मत्स्य पुराण के अनुसार भी अंग राज्य की प्रतिष्ठा बलि और सुदेष्णा के ज्येष्ठ पुत्र अंग से ही हुई (मत्स्य पु० ४८।२५-२६,७७)। अंग का उत्तराधिकारी दधिवाहन था जिसकी आठवीं पीढ़ी में चम्प नाम का राजा हुआ। उसी से चम्पा नामक नगरी भी प्रसिद्ध हुई जो पहले मालिनी कहलाती थी :

पृथुलाक्षस्सुतश्चापि चम्प नामा बभूव ह।
चम्पस्यु तु पुरी चम्पा पूर्वं या मालिनीऽभवत्॥

मत्स्य ४८।९७

विष्णु धर्मोत्तर के अनुसार इस देश का आराध्य देव 'गजेंद्र-मोक्षण देव' था :

गाजेन्द्रमोक्षणं देवमङ्गेषु यदुनन्दन॥

वि० धर्म० ३।१२१।९

गरुड़ पुराण इसे पूर्व दक्षिण दिशा में स्थित (गरुड़ पु० पू० ५५।१२) बताता है।

काव्य मीमांसा के अनुसार पौरस्त्य (पूर्वी) देश में अंग की स्त्रियाँ श्याम वर्णीया बतायी गई हैं (का०मी०,९६।२६)।

बौद्ध साहित्य में भी अंग जनपद महाजनपद युग (ई० पू० ६वीं शती) में ही प्रसिद्धि पा चुका था :

१—बाल कां० ११-२-५

२—वही ९-८

३—वही २३।१३-१४:

तस्य गात्रं हतं तस्य निर्दग्धस्य महात्मनः।
अशरीरः कृतः कामः क्रोधाद् देवेश्वरेण ह॥१३॥
अनङ्ग इति विख्यातस्तदा प्रभृति राघव।
सा चाङ्ग विषयः श्रीमान् यत्राङ्गं स मुमोच ह॥१४॥

४—किष्किधा का० ४०-२३

५—वही ४०-१९

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सोडसन्नं महाजनपदानं......अंगुत्तर निकाय १। पृ० १९७। पंक्ति ६

अंगानं मगधानं...........वही १। १९७। ७

इस प्रकार स्पष्ट है कि बुद्ध कालीन १६ महाजनपदों में अंग एक प्रसिद्ध देश था। अस्सपुर इस का प्रसिद्ध नगर था (अंगेसु......अस्सपुरं नाम अङ्गानं निगमो)।[१] महावस्तु[२] और दिव्यावदान[३] के अनुसार अंग की राजधानी चम्पा थी।

इस जनपद की आधुनिक स्थिति बिहार प्रदेश के मुंगेर और भागलपुर जिलों में मानी गई है। प्राचीन राजधानी चम्पा भागलपुर जिले का चम्पापुर ही है।

वंग – प्राची या पूर्व देश का प्रसिद्ध-प्राचीन प्रदेश[४] (का० मी० ८। ३) था। वायु (४५। १२२) और मत्स्य ११४। ४४) भी प्राच्य में स्थित बताते हैं। गरुड़ पुराण (पू० ५५। १२) और वृहत्संहिता (१४। ८) पूर्व दक्षिण में स्थित बताते हैं। राजा बलि के पुत्र वंग के नाम पर ही इस देश का यह नाम प्रसिद्र हुआ।[५]

अंगुत्तर निकाय की १६ महाजन पद तालिका में वंग का भी नाम प्राप्त होता है।[६] अन्यत्र भी उल्लेख मिलते हैं।[७] वंग की अधिष्ठात्री देवी कालिका या काली थी (वंगमिव कालिकां)।[८] इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि आधुनिक कलकत्ता के आस-पास का क्षेत्र ही प्राचीन वंग प्रदेश था जिसका नाम-रूप बंगाल में भी अक्षुण्ण बना हुआ है। डा० बी० सी० ला के अनुसार यह बंगाल

१—मज्झिम निकाय-महाअस्सपुर सुत्तं पृ० ३३३, ३४४।

२—महावस्तु, जिल्द ३। २०८-२०९।

३—दिव्यावदान, पृ० १७०। ३०।

४—देखिये अध्याय ३०, 'स्टडीज इन इण्डियन ऐण्टीक्विटीज' (डा० राय चौधरीकृत) 'वंग देस कौन' पृ० २६४-२७०

५—भागवत पुराण ९।२२।५
मत्स्य ४८।२५

६—अंगुत्तर निकाय, प्रथम भाग, पृ० १९७। ६-१० (भिक्षु जगदीश कश्यप संस्करण नालन्दा) : सोडसन्नं महाजनपदानं।
अंगानं मगधानं कासीकोसलानं वज्जीनं मल्लानं चेतीनं वङ्गानं कुरुनं पंचालानं...........।

७—वही, भाग १, २४। २०, २१; दिव्यावदान ४५९। २९।

८—का० मी० १४। १२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का प्राचीन नाम है ।[1] डा० डी० सी० सरकार के अनुसार यह दक्षिण पूर्वी बंगाल था ।[2] इसमें चटगांव और ढाका के प्रांत सम्मिलित थे । वात्सायन कृत कामसूत्र की जयमंगला टीका से ज्ञात होता है कि लौहित्य (ब्रह्मपुत्र) के पूर्व वंग देश था :—

वङ्गा लौहित्यात्पूर्वेण

कलिंग—यद्यपि कलिंग देश को पूर्व देश की तालिका (का० मी० ९३ । २०) में रखा गया है, परन्तु अन्यत्र (का० मी० ९ । ११-१२) इसे दक्षिण दिशा में रखा गया है ।

गरुड़ पुराण (पू० ५५ । १२) और बृहत्संहिता (१४ । ८) इसे पूर्व दक्षिण में स्थित बताते हैं । वायु (४५ । १२५) और मत्स्य पुराणों में (११४ । ४७) इसे दक्षिणापथ में स्थित बताया गया है । वात्सायन-कामसूत्र की जयमंगला टीका में इसे गौड विषय के दक्षिण रखा गया है (कलिङ्गा गौड विषयाद्दक्षिणेन) । डा० सरकार के अनुसार इसमें पुरी और गंजाम के आधुनिक प्रांत और आस-पास के क्षेत्र सम्मिलित थे ।[3]

इस जनपद की भी प्रतिष्ठा राजा बलि के पुत्र कलिंग के नाम पर ही हुई ।[4]

महाभारत के अनुसार कलिंग की राजधानी दन्तकूर[5] (दन्तपुर) थी । दन्तपुर ही कलिंग की राजधानी थी (कलिंगेषु दन्तपुरं नाम नगरम्)[6] जिस की पहचान पुरी से की गई है ।[7]

कोसल

काव्यमीमांसा की भांति ही विष्णुधर्मोत्तरं (१ । ९ । ३—पूर्वस्यां कोशलास्तथा) और गरुड़पुराण (पू० ५५ । ११) में इसे पूर्व में स्थित बताया गया

१—हिस्ट० जाग० पृ० २६७
२—जाग० ए० मेडि० इ० पृ० २७, नोट ५.
३—वही पृ० ३०, नोट २ ।
४—भागवत पु० ९ । २३ । ५, हरिवंश—हरिवंश पर्व ३१ । ३४, ४२
५—उद्योग पर्व ४८ । ७६
६—महावस्तु जि० ३ । ३६१ । १२
७—डे० जाग० डि०, पृ० ५३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में पुनः 'पूर्वस्यां कोशलास्तथा' (पूर्व में कोशल है) की व्याख्या सी की गई है, क्योंकि केवल इतने उल्लेख से कुछ भ्रम सा फैला है। विष्णुधर्मोत्तर के अनुसार भारतवर्ष के नवे भाग (कुमारी द्वीप) में पूर्व की दिशा में कोशल नामक समृद्ध और विस्तृत तथा सम्पन्न प्रदेश है, जिसकी उर्वर भूमि पवित्र नदियों द्वारा अभिसिंचित होती रहती है। वहां के निवासी भी सुन्दर तथा पुरुषार्थी हैं। देवों से भी अविजित अयोध्या उसकी राजधानी है जो प्राकार—परिखा से युक्त सरयू नदी के तट पर स्थित है[1] :—

भारतस्यास्य वर्षस्य भेदेऽस्मिन्नवमे नृपा।
नवमे च दिशां भागे पूर्वस्यां दिशि यादव ॥ वि० ध० १। १२। २

कोशलो नाम विषयः प्रभूतधनधान्यवान्।
स्फीतग्रामगुणाढचोऽस्तिनित्यं मुदितमानवः ॥ वही १। १२। ३

पयस्विन्यः पयस्विन्यो यत्र सस्यधरा धरा।
मनोभिरामाश्च पुरुषा पौरुषाग्रगा ॥ वही १। १२। ४

कोसला विषये—

देवानामपि अयोध्यास्ति तु अयोध्या नामतः पुरी ॥ वही १। १३। १
प्राकारपरिखोपेता सरयूतीरशोभिता ।
शोभिता भवनैर्मुख्यैः सुविभक्त महापथा ॥ वही १। १३। २

विष्णुधर्मोत्तर के अनुसार ही इक्ष्वाकु वंशीय सम्राट श्रावस्तक ने श्रावस्ती का निर्माण कराया :

तस्य पुत्रः पृथुः श्रीमान् विश्वदासस्तदात्मजः।
तस्य श्रावस्तको नाम श्रावस्ती येन निर्मिता ॥
वि० ध० १। १३। २

इस प्रकार स्पष्ट है कि पूर्व देश में स्थित कोशल (पूर्वस्यां कोसलास्तथा) निश्चयतः आधुनिक अवध प्रदेश है, जिसमें गोंडा, बहराइच, बाराबंकी और फैजाबाद तथा लखनऊ के प्रान्त सम्मिलित थे।

मार्कण्डेय पुराण के अनुसार कोशल कूर्म के मुख में (५८। १४) अर्थात् पूर्व देश में तथा दक्षिण पाद में विन्ध्य वासियों और कलिंग-चेदि आदि के साथ (५८।१५-१६) स्थित बताया गया है। बृहत्संहिता इसे पूर्व में (१४। ७) और पूर्व दक्षिण (१४। ८) में स्थित बताती है। इसके आयोध्यकान् (बृ० सं० १। २४) सरयू (सरयूतट देश—बृ० सं० ५। ६५), कोसलकान् (बृ० सं०

१—रामायण, बाल का० ५। ५-८

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५ । ७०) कोसलका (वृ० सं० १४ । ७) साकेत (वृ० सं० १४ । ४) कोशल (कोशल भरुकच्छ...वृ० सं० (१६ । ६) कौशलक रत्न (वृ० सं० ८० । ६) और काशि-पांचाल के साथ कोशल देश (वृ० सं० १० । ४) के उल्लेखों से स्पष्ट है कि उत्तर और दक्षिण (विन्ध्यस्थ) नामक दो कोशल थे। दक्षिण कोशल, निश्चयतः, विन्ध्य पर्वत पर स्थित था :—

कुशस्य कोशला राज्यं पुरी वापि कुशस्थली ,
रम्या निवेशिता तेन विन्ध्यपर्वतसानुषु ॥

वायु० उत्तर० २६ । १९८

यही विन्ध्यमूलस्थ कोशल (वामन १३ । ५५-५६) था।

काव्यमीमांसा (९७ । २१) भी उत्तर कोसल का उल्लेख करती है जिसे मध्य देश में स्थित बताया गया है (का० मी० ९७ । २०-२१) मत्स्य (१४ । ३५) और वायु (४५ । ११०) पुराण इसे काशी के साथ (काशि-कोशलाः) मध्य देश में स्थित बताते हैं। महाभारत के अनुसार सरयू के उस पार (पूर्व दिशा में) पूर्व कोशल को स्थित बताया गया है :

उत्तीर्य सरयूं रम्यां दृष्ट्वा पूर्वांश्च कोसलान् ॥

सभापर्व २० । २८

इस प्रकार मध्यदेशस्थ अथवा पूर्व में स्थित कोशल ही उत्तर कोशल था। मध्य और पूर्व देश की परस्पर सीमाओं में परिवर्तन होता रहा। अतः उत्तर कोसल भी कभी मध्यदेश और कभी पूर्व देश में सम्मिलित किया जाता रहा।

अयोध्या (का० मी० ८५ । २७) रामराज्य की राजधानी थी। इस प्रकार काव्य मीमांसा का कोशल उत्तर कोसल ही है जिसे मध्य देश या पूर्व भाग में स्थित कहा गया है।

तोसल

काव्य मीमांसा इसे पूर्व देश में स्थित बताती है। मार्कण्डेय (५७ । ५४), मत्स्य (११४ । ५३) और वायु पुराण कोशल और तोसल या तोशल नामक जनपदों को विन्ध्यपृष्ठ पर स्थित बताते हैं (वायु पु० ४५ । १३३)।

अशोक के धौली लेख में तोषली का उल्लेख मिलता है, जो कलिंग की तत्कालीन राजधानी थी। अतः तोसल या तोशल कलिंग का ही एक भूभाग था। डा० डी० सी० सरकार के अनुसार तोशली उड़ीसा में भुवनेश्वर के निकट स्थित आधुनिक धौली ही थी।[1]

१—जाग० ए० मेड० इ० पृ० ३४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्कल

सुद्युम्न के पुत्र उत्कल के नाम से ही इस देश का यह नाम पड़ा[१]। इस पवित्र देश को दक्षिण समुद्र के तट पर ऋषिकुल्या नदी तक स्वर्ण रेखा और महानदी के बीच में स्थित बताया गया है :

उत्कलो नाम देशोऽस्ति ख्यातः परम पावनः ॥ स्कन्द पु० २।२।६।२

दक्षिणस्योदधेस्तीरे स तु देशः प्रतिष्ठितः ॥ वही २ । २ । ६ । ३

ऋषिकुल्यां समासाद्य दक्षिणोदधि गामिनीम् ।

स्वर्णरेखामहानद्योर्मध्ये देशः प्रतिष्ठितः । वही २ । २ । ६ । २७

मगध

पूर्व देश[२] का प्रसिद्ध और प्राचीन जनपद है । जो वैदिक युग से लेकर मध्य युग तक इतिहास के उतार-चढ़ाव देखता रहा । वायु पुराण (४५।१११) इसे मध्य देश का जनपद बताता है । विष्णु (२।३।१६) और कूर्म (४७।३९) पुराणों में इसे दाक्षिणात्य बताया गया है । महाभारत युग में यह अत्यंत शक्तिशालीराज्य था (आदि पर्व ११२।२७) जिसकी राजधानी राजगृह थी । इसे महाराज पाण्डु ने जीता था (आदि पर्व ११२ । २६-२७ । परंतु जरासंध के राज्य-काल में यह विस्तृत साम्राज्य था[३]। उससे पराजित होकर भोजों की १८ शाखाएँ पश्चिमी भारत को चली गयीं[४] । कृष्ण, भीम और अर्जुन कुरु-राजधानी (हस्तिनापुर) से कुरु-जांगल, कालकूट, गण्डकी, सदानीरा, पूर्व कोसल तथा मिथिला होते हुए गंगा और शोण को पारकर मगध क्षेत्र में घुसे । गोरथगिरि (बराबर की पहाड़ियाँ) होते हुए वे लोग मागधपुर पहुँचे[५] । यह राजनगर गिरिवृज था[६] । इससे स्पष्ट है कि गंगा और शोण (सोन) नदियाँ उत्तर और पश्चिम में मगध की सीमायें बनाती थीं ।

इसकी प्राचीन राजधानी गिरिव्रज का निर्माण चेदिराज उपरिचर के पुत्र सम्राट बृहद्रथ[७] ने कराया था । इसीलिये इसे बार्हद्रथपुर भी कहते थे[८] ।

१—वायु पु० ३७ । २६६; मत्स्य पु० १२ । १६
हरिवंश, हरिवंश पर्व १० । १९ : उत्कलस्योत्कला: ।

२—वामन पु० १३ । ४६

३—सभा पर्व १५ । २०-२१, वही १७ । १३-२० ।

४—वही १४ । २५

५—वही २० । २६-३०

६—वही २१ । १३-१५

७—हरि वंश, विष्णु पर्व ५९।२०, { चेदिराजस्य तु वसोरासीत पुत्रो बृहद्रथः । मगधेषु पुरा येन निर्मितोऽसौ गिरिव्रजः ॥

८—महाभारत, सभी पर्व २४।४४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रामायण के अनुसार गिरिव्रज की स्थापना राजा वसु ने की थी। इसीलिये यह वसुमती भी कहलायी जिसके चारों ओर पांच सुंदर पर्वत स्थित थे :

चक्रे पुरवरं राजा वसु नाम गिरिव्रजम् ।। बाल का० ३२ । ७

एषा वसुमती नाम वसोस्तस्य महात्मनः ।
एते शैलवराः पञ्च प्रकाशन्ते समन्ततः ।। वही ३२ । ८

महाभारत में भी इन पांचों पर्वतों और उनसे घिरे हुए गिरिव्रज का सुंदर चित्र प्राप्त होता है :

एष पार्थ महान् भाति पशुमान् नित्यमम्बुमान् ।
निरामयः सुवेश्माढ्यो निवेशो मागधः शुभः ।।
सभा पर्व २१ । १

वैहारो विपुलः शैलो वराहो वृषभस्तथा ।
तथा ऋषिगिरिस्तात शुभाश्चैत्यकपञ्चमाः ।।
वही २१ । २

एते पञ्च महाश्रृङ्गाः पर्वताः शीतलद्रुमाः ।
रक्षन्तीवाभिसंहत्य संहताङ्गा गिरिव्रजम् ।।
वही २१ । ३

ये पांच पहाड़ियाँ थीं—वैहार, वराहशैल, वृषभ, ऋषिगिरि और चैत्यक। ये पांचों पर्वत एक दूसरे के साथ मिलकर गिरिव्रज की रक्षा करते थे।

इन पर्वतों पर लोध के पुष्पित वृक्षों से ये बन अत्यंत मनोहर थे और वहीं महात्मा गौतम का आश्रम भी था (सभा पर्व २१ । ४-६)। सुंदर सोन नदी भी, जिसे मागधी नदी कहा जाता था, इन पांचों पहाड़ियों के बीच माला की भांति मगध जनपद में बहती हुई शोभित होती थी। यह मागधी नदी भी उन महात्मा वसु से सम्बद्ध है तथा सदैव ही यह शस्यमाला से अलंकृत रहती थी :

सुमागधी नदी रम्या मागधान् विश्रुताऽऽययौ ।
पञ्चानां शैलमुख्यानां मध्ये मालेव शोभते ।।
बाल का० ३२ । ९

सैषा हि मागधी राम वसोस्तस्य महात्मनः ।
पूर्वाभिचरिता राम सुक्षेत्र सस्यमालिनी ।।
वही ३२ । १०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजशेखर ने इसे मध्य देश के बाहर वाराणसी से पूर्व (वाराणसीतः पूर्वेण ये केचिन्मगधादयः का०मी० ३३।२६) रखा है। यहां प्राचीन राजा शिशुनाग का उल्लेख किया गया है :

श्रूयते हि मगधेषु शिशुनागो नाम राजा, तेन दुरुच्चारानष्टौ वर्णानपास्य स्वान्तः पुर एव प्रवर्तित नियमः टकारादयश्चत्वारो मूर्द्धन्यास्तृतीयवर्जमूष्माणस्त्रयः क्षकारश्चेति। का० मी० ५०। ११-१४

इसकी राजधानी पाटलिपुत्र (पटना) में शास्त्रकार परीक्षा हुई थी :

श्रूयते च पाटलिपुत्रे शास्त्रकार परीक्षा—का० मी० ५५। २१

जिसमें वर्ष, उपवर्ष, पाणिनि, पिङ्गल, व्याडि, वररुचि, पतञ्जली परीक्षित होकर संसार में यशस्वी हुए :

अत्रोपवर्षवर्षाविह पाणिनिपिङ्गलाविह व्याडिः।
वररुचिपतञ्जली इह परीक्षिताः ख्यातिमुपजग्मुः॥
का० मी० ५५। २२-२३

मुद्गर

मार्कण्डेय पुराण (५७। ४२) व मत्स्य पुराण (११४। ४४) भी इसे प्राच्य में स्थित बताते हैं। इसे (मद्गुरवाः) वामन पुराण (१३। ४४) भी प्राच्य जनपद बताता है। इसकी पहचान बिहार प्रदेश के आधुनिक मुंगेर ज़िले से की गई है। यह महाभारत का मोदागिरि ही है जिसे भीम ने अपनी पूर्व दिग्जय में जीता था।[१]

विदेह

पूर्व देश का प्राचीन प्रसिद्ध जनपद था। गरुड़ पुराण (पू० ५५। ११, विदेहाश्च पूर्वस्यां) विष्णुधर्मोत्तर (१। ९। ३) और वायु (४५। १२३) तथा मत्स्य (११४। ४५) में भी प्राच्य जनपद बताया गया है। स्कन्द पुराण में इसे ही मिथिला[३] और जनक देश[४] भी कहा गया है। मार्कण्डेय पुराण (५८। १२) के अनुसार मैथिलाः कूर्म के मुख में स्थित थे।

राजा निमि की देह गिर जाने के कारण या भौतिक प्रपञ्च से रहित—वीत राग—विदेह कहलाये। इन के ही नाम पर मिथिला को विदेह कहा जाता

१—सभापर्व ३०। ३१ : अथ मोदागिरौ चैव राजानं बलवत्तरम्।
पाण्डु बाहुवीर्येण निजघान महामृधे॥

३—स्कन्द पुराण २। ७। ६। १५

४—वही, कुमारिकाखण्ड (लखनऊ संस्करण) ३३-६५ (१)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था। जनक, निमि और याज्ञवल्क्य ऐसे ही ब्रह्मिष्ठ पुरुष थे जिनका विदेह देश के साथ अटूट सम्बन्ध बना रहेगा। सरस्वती के तट से विदेघ माधव धूमाग्नि (यज्ञ-अग्नि) अपने देश में ले आये।[१] इससे यहां आर्य संस्कृति के प्राचीन स्वरूप कर्म-मार्ग का प्रभाव परिलक्षित होता है। विदेघ से ही यह पुण्य यज्ञभूमि कहलाई। परन्तु विदेह-दर्शन (तत्वज्ञान) से ही यह ब्रह्मज्ञान का प्रथित क्षेत्र बन गया जहां आगे चल कर महावीर और गौतम बुद्ध ने भी ज्ञानवाद का प्रचार किया।

मिथिला के विदेह लोग[२] बुद्ध युग में गणतांत्रिक थे।

नेपाल

प्रसिद्ध प्राचीन प्रदेश है जो आज भी पर्वतीय खण्ड है और भारत के उत्तर-पूर्व में स्थित है। काव्य मीमांसा इसे पूर्व देश में स्थित बताती है (का० मी० ९३। २१)। यहीं (का० मी० ९३। २२-२३) नेपाल को पर्वत भी बताया गया है। यहां की स्त्रियों (नेपाल्यो—का० मी० ३९। १८) को उदीच्य से सम्बद्ध किया गया है। महाभारत के अनुसार भी इसे हैमवतिकों (हिमालय के निवासियों) के साथ इसे उत्तर दिशा में रखा गया है जहां कर्ण ने इसे जीता था।

अथोत्तरां दिशं गत्वा वशे चक्रे नराधिपान्॥ वन पर्व २५४।४
भगदत्तं च निर्जित्य राधेयो गिरिमारुहत्।
हिमवन्तं महाशैलं युध्यमानश्च शत्रुभिः॥ वही २५४। ५
प्रययौ च दिशः सर्वान् नृपतीन् वशमानयत्।
स हैमवतिकाञ्जित्वा करं सर्वानदापयत्॥ वही २५७। ६
नेपालविषये च राजानस्तानवाजयत्॥ वही २५४।७(१)

स्कन्द पुराण के अनुसार (१। २। ३९। १३९) इसमें एक लाख गांव सम्मिलित थे।

पुण्ड्र

प्राचीन भारत का अत्यन्त प्रसिद्ध प्राच्य जनपद था[३] (का० मी०

१—'वैदिक एज' पृ० २५४

२—महाभारत, सभा पर्व ११२-२८ : पाण्डुना मिथिलां गत्वा विदेहाः समरे जिताः।

३—रामायण, किष्किधा का० ४०। २३;
महाभारत, सभा पर्व ३०। २२;
वृहत्संहिता ५। ८०; १४। ७;
का० मी० ८। ३-४ : प्राची दिशं शिश्रिर्युयत्राङ्गवंग ब्रह्मपुण्ड्राद्या जनपदाः॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

९३ । २१)। एक विशेष प्रकार के गन्नों (कृष्णेक्षूणां पुण्ड्रकाणां च[1] के लिये प्रसिद्ध था जिसे पौंडा कहा जाता है। विष्णुधर्मोत्तरं (१ । ९ । ४) और गरुड़ पुराण (पू० ५५ । १२) में पूर्व दक्षिण में स्थित बताया गया है। मार्कण्डेय पुराण (५७ । ४५) इसे दक्षिण में स्थित बताता है। राजा बलि के पुत्र पुण्ड्र के नाम पर ही इसका यह नाम प्रसिद्ध हुआ।[2] लिंग पुराण के अनुसार यहां अच्छी वर्षा होती थी और शीतकालीन अन्नों की उपज होती थी।[3] राजशेखर ने भी यहां गन्नों का उल्लेख किया है।

इसकी पहचान उत्तरी बंगाल से की गई है। जिसकी राजधानी पुण्ड्र नगर या पुण्ड्रवर्धन (आधुनिक महास्थान, बोगरा ज़िला) थी[4]।

प्राग्ज्योतिष

यह भी पूर्व देश का प्रसिद्ध देश है[5]। महाभारत के अनुसार यहां का राजा भगदत्त[6] था जिसकी सेना में किरात, चीन और समुद्र-द्वीपों के योद्धा भी सम्मिलित थे जिन्हों ने अर्जुन से युद्ध किया था। प्राग्ज्योतिषपुर एक महान दुर्ग था[7]।

अभिधान चिन्तामणि के अनुसार प्राग्ज्योतिष और कामरूप एक ही थे :

प्राग्ज्योतिषाः कामरूपाः

राजशेखर कामरूप को पर्वत बताते हैं (का० मी० ९३ । २३)।

यह आधुनिक आसाम का प्राचीन नाम था। प्राग्ज्योतिषपुर की पहचान गौहाटी से की गई है।

१—वही १०३ । १०

२—भागवत पु० ९ । २३ । ५

३—लिंग पु०, पूर्वार्ध ५४ । ५७

४—जा० ए० मेडि० इ०, पृ० २८

५—वृहत्संहिता १४ । ६

६—महाभारत, सभापर्व २६ । ७-९; आश्वमेधिक पर्व ७५ । १;

७—वही, उद्योग पर्व ४८ । ८०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ताम्रलिप्तक

मत्स्य (११४।४५), वायु (४५। १२३) सभा पर्व (३०। २४) तथा काव्य मीमांसा में इसे पूर्व देश का जनपद बताया गया है। मिदनापुर (बंगाल) जिले का तामलुक ही प्राचीन ताम्रलिप्त है। वृहत्संहिता (१४। ७) और वायु पुराण में (४५। १२३) क्रम से तामलिप्तिक और तामलिप्तक मिलता है। स्कन्द पुराण (७। १। १०७। ८१) में तमोलिप्त पाठ मिलता है। ताम्रलिप्त के इन अपभ्रंश रूपों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि किस प्रकार आधुनिक युग तक आते आते यह तमलुक या तामलुक हो गया।

मलद

यह पूर्वी बंगाल का माल्दा प्रान्त ही मालुम पड़ता है। भीम ने अपनी पूर्वीदिग्विजय में इसे जीता था (सभा पर्व ३०।८)।

मल्लवर्तक

वायु पुराण (मालवर्तिनः ४५। १२२), मत्स्य (११४। ४४-मल्लवर्णक) और ब्रह्मांड पुराण (पूर्व० १६। ५३) भी इसे प्राच्य में स्थित बताते हैं। इसकी पहचान करना कठिन है। संभवतः इसकी स्थिति मल्लपर्वत या पार्श्वनाथ गिरि पर थी, जो इस समय बिहार प्रदेश के हजारी बाग और मानभूमि जिलों में स्थित है (का० मी० पृ० ३०२ अपेन्डिक्स १, श्री सी० डी० दलाल)।

सुह्म

इस जनपद का भी नाम राजा बलि के पुत्र पर ही हुआ था।[1] विष्णु धर्मोत्तर (१। ९। ३) भी इसे पूर्व देश[2] में स्थित बताता है, जहाँ का राजा दधिकर्ण था (सुह्मराजो दधीकर्णो—१। १। ५)। यह प्राचीन राढ देश का ही दूसरा नाम था।[3] परन्तु डा० ला के अनुसार यह राढ देश का एक भाग ही था।[4]

कृष्ण मिश्रकृत प्रबोधचन्द्रोदय में राढापुरी को गौड राष्ट्र का नगर कहा गया है :—

१—भागवत पु० ९। २३। ३

२—महाभारत, आदि पर्व ११२। २९, सभा पर्व ३०। १६।

३—जाग० ऐ० मेड० इ०, पृ० ११४,

४—हिस्टा० जाग० पृ० २६१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गौडं राष्ट्रमनुत्तमम् निरुपमा तत्रापि राढापुरी ।

प्र० च० अंक २ । ७

राढा नामक जनपद भी था, जिसे भागीरथी नदी के सन्निकट स्थित बताया गया है । इसमें स्थित ही चक्रतीर्थ भी एक पवित्र स्थान था :—

अस्ति राढाभिधानो जनपदः । तत्र भागीरथी परिसरालंकारभूते चक्र तीर्थे............। प्रबोधचन्द्रोदय अंक ४, पृ० १३८

प्रबोधचन्द्रोदय दक्षिण राढा को भी प्रसिद्ध प्रदेश बतलाता है :

दक्षिण राढा प्रदेश प्रसिद्ध......प्र० च० अंक २, पृ० ५९ । इसी नाटक के अनुसार 'दक्षिण राढा प्रदेश' (प्र० च० अंक २ पृ० ५२) अहंकार के लिये प्रसिद्ध था ।

बृहत्कथामंजरी के अनुसार राढा (९ । २ शशांकवत्याम् भीमभटाख्या-यिक पृ० २७९, श्लोक ७८३):

राठायामभवद्भूपः श्रीमानुग्रभटाभिधः

अथवा राढा प्रसिद्ध राजधानी थी :

स्वयं स्थितः स राढायां पञ्चगौडमहीपतिः ।
दिशो भीमभटः सर्वाञ्जित्वा साम्राज्यमाप्तवान् ।।

वही श्लोक ८७०

कथा सरित्सागर के अनुसार भी राढा प्रसिद्ध नगर (राढायां—कथा० स० सा ७४ । २९, राढायां पुरी ७४ । ३५, राढापते: ७४ । २५५, २९७) और राज्य (राढा राज्ये कथा स० सा० ७४ । २६३, २८०) भी था । राढा सुह्म देश का ही नगर था (राढा सुह्मेषु शोभायाम् इति हैमः) । बुद्ध चरित (२१ । १३) के अनुसार भी सुह्म एक प्रसिद्ध देश था ।

दशकुमार चरित के अनुसार दामलिप्त या तामलिप्त नगर सुह्म देश में स्थित था (सुह्मेषु दामलिप्ताह्वयस्य नगरस्य...षष्ठोच्छ्वास पृ० २०५ । पंक्ति २) । वही दामलिप्त नगर समुद्र तट के निकट स्थित था (दश० कु० च०, उच्छ्वास ६, पृ० २३३ । पंक्ति १४) । अत: स्पष्ट है कि सुह्म प्रसिद्ध और विस्तृत राज्य था जो समुद्र (बंगाल की खाड़ी) के निकट दक्षिण पश्चिमी बंगाल में स्थित था, जिसे देश के प्राच्य भाग में रखा गया है ।[१] सुह्म राज्य की भी संज्ञा दीर्घतपस मुनि और बलि की रानी के संयोग से उत्पन्न राजपुत्र (सुह्म) के नाम पर पड़ी थी ।[१]

१—का० मी० ८ । ३७, ९३ । २२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मोत्तर

देश विभाग (अध्याय १७) में जनपद सूची इस प्रकार दी हुई है—

"पूर्व देशः । यत्राङ्गकलिग कोसल......विदेह नेपाल पुण्ड्र प्राग्ज्योतिष ......सुह्म ब्रह्मोत्तर प्रभृतयो जनपदाः । का० मी० ९३ । २०-२२

काव्यमीमांसा में ही अन्यत्र भी (अध्याय ३) एक जनपद-सूची मिलती है :—

प्राची दिशं शिश्रियुर्यत्राङ्ग वङ्ग सुह्म ब्रह्म पुण्ड्राद्या जनपदाः ॥

का० मी० ८ । ३

स्पष्टतः, इस प्रकार, ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर जनपद के दो नाम हैं। यू० पी० हिस्टारिकल सोसाइटी के जर्नल में (वाल्यूम ६, भाग२, १९५८) राजशेखर कालीन भारत की भौगोलिक सीमाएँ शीर्षक निबन्ध[3] में ब्रह्म और पुण्ड्र को[४] एक जनपद बताया गया है। श्रीमोहन लाल निगम कहते हैं :

"ब्रह्म पुण्ड्र : राजशेखर ने प्रस्तुत जनपद को अंग वंग एवं सुह्म जनपदों के साथ पूर्व में वर्णित किया है।"

ब्रह्म और पुंड्र दो पृथक जनपद हैं, जैसा कि जनपद तालिकाओं से स्पष्ट ज्ञात होता है। काव्य मीमांसा (बड़ौदा संस्करण) के विज्ञ सम्पादक दलाल महोदय (अपेन्डिक्स १, पृ० २९९) ब्रह्म जनपद की पहचान बर्मा से करते हैं। यही डा० सरकार का भी मत है।[६] ब्रह्म का ही अपभ्रंश रूप बर्मा है।

ब्रह्मोतर एक प्रसिद्ध नगर था जहाँ जहाज़ों द्वारा जाया जाता था। वाराणसी का वणिज सार्थवाह पांच सौ वणिकों के साथ चल कर समुद्र तट पर पहुँचा, जहाँ वे सब भयानक समुद्र में उतर पड़े।[७] वे महा-समुद्र में चलते हुए रमणक या रमण्णा नगर में पहुँचे।[८]

१—भागवत पुराण ९ । २३ । ५-६, मत्स्य पुराण ४८ । २५-२६

२—का० मी० ९३ । २२

३—जर्नल यू० पी० हिस्ट० सो० जिल्द ६, भाग २ पृ० ७७ (१९५८)

४—वही पृ० ७७

५—वही पृ० ७७

६—जाग० ए० मेडि० इ०, पृ० २८, नोट ४

७—दिव्यावदान ४९९ । २-२९

८—वही ५०३ । २७, ५०४ । १५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसके आगे जाते हुए 'सदामत्तकं नाम नगरं' में पहुचे ।[१] वहां से भी दक्षिण की ओर जाते हुए उन्होंने नन्दन नगर को देखा ।[२] इस के बाद समुद्र की थपेड़ें सहते हुए (वाताहताम्भोधि तरंग लोले) ब्रह्मोत्तार नामक नगर को गये (ब्रह्मोत्तारं नाम नगरं ययौ) ।[३] इसी महा समुद्र में वाणिग्यात्रा का वर्णन अवदानशतक में भी प्राप्त होता है । वाराणसी का वणिक रमणक, सदामत्तं और नन्दन नामक नगरों में होता हुआ ब्रह्मोत्तार नगर में पहुँचा ।[४]

अतिक्रम्य रमणकं सदामत्तं च नन्दनम् ।
ब्रह्मोत्तरं च प्रासादं केन त्वमिहागतः ।।

अवदानशतक भाग २, पृ० २०३ । १-२

ये चारों नगर सुख-सम्पदा से भरे हुए थे ।[५] संभवत: यह समुद्र यात्रा बर्मा के प्रोम नगर तक की प्राचीन यात्रा का वर्णन है । रमणक और सदामत्त क्रमशः, रैमरो (द्वीप) और सैंडोवे मालूम पड़ते हैं । ब्रह्म का विकृत रूप ही प्रोम है ।

इस प्रकार इसकी स्थिति ही ऐसी थी कि वणिक ब्रह्मोतर को अत्यधिक व्यापारिक लाभ से आकृष्ट होकर वहां जाते थे । स्कन्द पुराण से भी ज्ञात होता है कि यह देश अपनी समृद्धि और व्यापारिक सम्पत्ति के लिये इतना प्रसिद्ध था कि सैकड़ों व्यापारी वहां द्रव्य-लाभ के लिये जाते रहते थे :

पण्यानां शतसंख्यानां व्यवहार-निर्दशिनः ।
ब्रह्मोत्तराणि तन्वंति वणिजो लाभकांक्षिणः ।।

स्कन्द पुराण ७ । १ । २४ । ७४

परन्तु 'ब्रह्मोत्तराणि' क्षेत्र से यहां द्वीपांतार का बोध होता है, क्योंकि द्वीपांतर के साथ भारतीय भूमि के राजनैतिक और आर्थिक सम्बन्धों का उल्लेख करते हुए ब्रह्मोत्तार-देशों (ब्रह्मोत्तराणि) का वर्णन किया गया है :

जंबूद्वीपाधिपाः सर्वे भवतामत्रवासिनाम् ।
आदेशं च करिष्यंति शिरस्याधाय शोभनं ।।

स्कन्द पु०, ७ । १ । २४ । ७२

१—वही ५०६।१८
२—वही ५०६ । २०
३—वही ५०६ । २१
४—अवदान शतक जिल्द२—पृ० १९९-२०२,
५—वही २०३ । १२

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

द्वीपांतरादागतैश्च कर्पूरागुरूचंदनैः ।
अन्यैश्च विविधैर्द्रव्यैः संपूर्णा भवता गृहाः ।।

स्कन्दपु० ७ । १ । २४ । ७३

इस प्रकार ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर के पृथक उल्लेखों से ब्रह्म (बरमा) और इसके उस पार के देशों-द्वीपांतर-का भी अभीष्ट उद्देश्य था इसीलिये राजशेखर ने इनका दो स्थानों पर इन्हीं रूपों में उल्लेख किया है । वायु पुराण में भी ब्रह्मोत्तराः पूर्व देश में स्थित (वायु ४५ । १२३) बताये गये हैं ।

राजशेखर की काव्यमीमांसा में उपर्युक्त प्रदेशों के अतिरिक्त कुछ अन्य जनपदों के भी नाम प्राप्त होते हैं जिनको पूर्व देश में रखा जा सकता है । ये हैं :

ओड्र

इसका उल्लेख औड्री प्रवृत्ति (का०मी० ८।५) के प्रसंग में मगध के साथ किया गया है । यह आधुनिक उड़ीसा का ही प्राचीन नाम है । आधुनिक युग में भी अपनी निकट-स्थिति के कारण बिहार के साथ सम्बद्ध रहा है (बिहार-उड़ीसा) । अतः राजशेखर ने भी 'सा प्रवृत्तिरौड्रमागधी' द्वारा दोनों जनपदों (ओड्र-मगध) का सान्निध्य ही बताया है ।

स्कन्द पुराण (वैष्णवखंड, पुरुषोत्तम मा० अध्याय ६) में ओढ्र देश का सुन्दर और स्पष्ट वर्णन मिलता है । बताया गया है :—

ओढ्र देश इतिख्यातो वर्षे भारत संज्ञिते ।
दक्षिणस्योदधेस्तीरे क्षेत्रं श्रीपुरुषोतमं ।।

स्कन्द पु० २ । २ । ७ । २३

यत्र नीलगिरिर्नाम समंतात काननावृतः ।।
तस्योत्संगे कल्पवृक्षः संगात्क्रोशसंमितः ।।

वही २ । २ । ७ । २४

मलिक मोहम्मद जायसी ने इसे ओडैसा (पद्मावत छं० ४९८ । पंक्ति ५) लिखा है । इससे ओड्र की उड़ीसा तक पहुँचने में इसके रूप पर प्रकाश पड़ता है ।

किरात

भारत की प्रसिद्ध वन्य जाति है जिसे प्रायः पूर्व में (पूर्वे किरातास्तस्यांते[1]) रखा गया है । इनकी पहचान पूर्व देश में आसाम की पर्वतीय और वन्य जातियों से की जा सकती है ।

१—गरुण पु० पू० ५५ । ५, वामन पु० १३ । ११, कूर्म पु० ४७ । २४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गौड

पूर्व देश का अति प्रसिद्ध जनपद था परन्तु आश्चर्य है कि काव्यमीमांसा के पूर्व देशस्थ जनपद-सूची में इसका उल्लेख नहीं किया गया है।[1]

गौडीया रीति[2] और गोडाङ्गनाओं[3] की विशिष्टताओं के उल्लेख से इस भूखण्ड का महत्व और विस्तार परिलक्षित होता है। वस्तुत: गौड प्राय: पूर्व देश का ही परिचायक बन गया[4] और राजशेखर भी इसे इसी रूप में प्रस्तुत करते हैं।[5]

गोनर्द

इसे पूर्व देश में स्थित बताया गया है।[6] मार्कण्डेय पुराण इसे (५८।२३) कूर्म के दक्षिण पाद (मार्क० ५८।२८) में महाराष्ट्र कर्णाट आदि देशों के साथ रखता है। वृहत्संहिता (१४।१२) भी दक्षिण में ही इसको स्थित बताती है। यही स्थिति योगवशिष्ठ में भी है।[7] राजशेखर (का०मी० २६।१५-१६) गोनदीर्य मत का उल्लेख करते हैं (……इति गोनर्दीय:)। महाभाष्य में यह उपाधि पतञ्जलि के लिये प्रयुक्त की गई है। इसकी ठीक पहचान करना कठिन है। डॉ० सरकार इसे विदिशा के निकट मालवा में स्थित मानते हैं।[8]

हरिकेलि

अभिधान चिन्तामणि के अनुसार हरिकेलि वंग का नाम है :[9]

वंगास्तु हरिकेलिया

१—का० मी० ३३।२८, ३४।२, ५१।५

२—वही ८।१५, ३१।६

३—वही ८।१०, २२।१६, ९६।२६

४—जाग ए० मेड० इ०, पृ० ११७

५—का० मी० २६।१६

६—मत्स्य पु० ११४।४५ **मागध गोनर्दाः प्राच्याः…………॥**

वायु पृ० ४५।१२३ : **मगध गोविन्दाः प्राच्यां………॥**

यहाँ गोविन्द पाठ अशुद्ध है

७—योगव० ३।३६।३५

८—जाग० ए० मेड० इ०, पृ० २०९

९—कर्पूर मंजरी, पृ० १५।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परन्तु डॉ० सरकार का विचार है कि वंग के लिये यह नाम उसी समय प्रयुक्त किया गया जब कुछ समय के लिये वंग हरिकेलि साम्राज्य में मिल गया। कल्पद्रु कोश के अनुसार हरिकेलि श्रीहट्ट या सिलहट का नाम था :

श्रीहट्टे हरिकेलिः स्याच्छ्रीहटोपिक्वचिद् भवेत् ।[1]

पर्वताः

राजशेखर निम्नलिखित पर्वतों को पूर्व देश में स्थित बताते हैं :

"बृहदगृहलोहितगिरिचकोरदर्दुरनेपालकामरूपादयः पर्वताः ।"

का० मी० पृ० ९३ । २२-२३

इसके अतिरिक्त उदयाद्रि (का० मी० ६७ । १९) भी पूर्व देश और दिशा का प्रसिद्ध पर्वत है।

बृहदगृह

इसकी ठीक पहचान नहीं हो सकती। इसकी पहचान 'माउन्ट एवरेस्ट' से की गई है।[2]

लोहितगिरि

यह हिमालय का वह भाग माना गया है जहाँ से लोहित (लौहित्य) नदी (ब्रह्म पुत्रा) निकलती है।[3]

स्कन्द पुराण (४ । १ । २५ । २-६) इसे दक्षिण में श्रीपर्वत और स्कन्द वन के निकट स्थित बताता है।

चकोर और दर्दुर, दोनों ही पर्वत, दक्षिण के प्रसिद्ध पर्वत हैं। परन्तु राजशेखर इन्हें पूर्व देश में रखते हैं। सम्भव है कि इन्ही नाम के पर्वत पूर्व में भी हों।

चकोर

इस पर्वत को दक्षिण भारत का पर्वत बताया गया है। यह श्री पर्वत के निकट ही स्थित था:[4]।

१—जाग० ए० मेड० इ०, पृ० १२५

२—का० मी०, एपेन्डिक्स १ पृ० २९९

३—वही पृ० ३०६

४—वामन १३ । १९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऋष्यमूकः स गोभन्तः कूटशैलः कृतस्मरः ॥ मार्कण्डेय पु० ५७ । १८

श्रीपवर्तश्चकोरश्च शतशोऽन्ये च पर्वताः ॥ वही ५७ । १५

वायु पुराण में इसे त्रिकूट शैल (नासिक) और श्री पर्वत के साथ रखा है।[1]

गौतमी-बल श्री वाले प्रसिद्ध नासिक लेख (वाशिष्ठी पुत्र पुलुमावी के १९वाँ राज्य वर्ष) में गौतमी पुत्र शात कर्णी के राज्य में भी श्री पर्वत (सिरिटन) और चकोर पर्वतों का उल्लेख मिलता है :

विझछवत् पारिचात सहृय कण्हगिरि मचसिरिटन मलग्र महिद सेट गिरि चकोर पवतपतिस (पंक्ति यां २-३)

सिरिटन को श्रीशैल या श्री पर्वत माना गया है। परन्तु चकोर पर्वत की पहचान अभी तक नहीं की जा सकी है।

हर्ष चरित (पृ० १९९) में चकोर का एक देश के रूप में उल्लेख होता है :

चकोरनाथं शूद्रकद्भूतश्चन्द्रकेतुं

परन्तु निश्चित रूप से पहचान नहीं की जा सकती।

दर्दुर

महेन्द्र व मलय पर्वतों से मिला हुआ दक्षिण का प्रसिद्ध पर्वत था।[2] यह भी चन्दन और अगुर का उत्पत्ति स्थान था[3] तथा चोल व पाण्डयों से सम्बद्ध था।[4] कालिदास ने भी इसे ताम्रपर्णी नदी और मलय के निकट ही स्थित बताया है।[5] अतः इसकी समानता दक्षिण के नील गिरि से की गई है। परन्तु पूर्व देश (का० मी० ९३ । २२) में स्थित होने के कारण इसकी पहचान विन्ध्य के पूर्वी भाग में स्थित देवगढ़ से की गई है।[6]

१—वायु ४५ । ९२: **श्रीपर्वतश्चकारुश्च तिकूट शैलो गिरिस्तथा ॥**
यहाँ चकारुश्च अशुद्ध पाठ है।

२—सभा पर्व (महाभारत) १० । ३२ :

मलयाद् दरर्दुराच्चैव चन्दनागुरुसंचयान् ।
मणि रत्नानि भास्वन्ति काञ्चानं सूक्ष्मवस्त्रकम् ॥

३—वही ५२ । ३४

मलयो दर्दुरश्चैव महेन्द्रो गन्धमादनः ।
इन्द्रकीलः सुनामश्च तथा दिव्यौ च पर्वतौ ॥

४—वही ५२ । ३५

५—रघुवंश ४ । ५०-१

६—काव्य मीमांसा एपेन्डिक्स १, पृ० २९४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नेपाल और कामरूप (आसाम) भी पूर्वदेश के पर्वतों में उल्लिखित किये गये हैं।

कामरूप का उल्लेख कर्पूरमंजरी में देश के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।[१]

नदियाँ

निम्नलिखित नदियाँ पूर्व देश में बहती थीं:—

"शोणलौहित्यौ नदौ। गंगाकरतोयाकपिशाद्या नद्यः।

का० मी० ९३। २३-२४

शोण

यह आधुनिक सोन नदी ही है।

लौहित्य

यह ब्रह्मपुत्र ही है।

गंगा

प्रसिद्ध ही है[२] जिसे सुरापगा (हिमशैल·········सुरापगा)[३], स्वर्ग तरङ्गिणी[४], जान्हवं (का० मी० ८५। ४) और मन्दाकिनी (का० मी० ८५। ९) के प्रसिद्ध नामों से भी जानते हैं। इस की महिमा महान थी :—

स ददर्शपुरो गंगा सप्तसागरवल्लभाम्॥

का० मी० ८१। २४

यह पूर्व-पयोधि (का० मी० ७०। १०) या बंगाल की खाड़ी में मिलती है।

करतोया

गंगा के डेल्टा के निकट रंगपुर, दीनाजपुर और बोगरा के प्रान्तों में बहती हुई ब्रह्मपुत्रा नदी से मिलती है। यह एक पवित्र नदी थी,[५] जिसे महाभारत में भी लौहित्य[६] और गंगा सागर संगम के निकट बहता हुआ बताया गया है।[७]

१—कर्पूर मंजरी पृ० १५, १-१४ के बाद है।

२—का०मी० ६०। ६, १४, ६३। १४, १९, ७१। २७, ८८। ८

३—वही २९। २३

४—वही ३९। ८

५—महाभारत, सभा पर्व ९। २२

६—वही, वन पर्व ८५। २-३

७—वही, वन पर्व ८५। ४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कपिशा नदी

यह पश्चिमी बंगाल के मिदनापुर प्रान्त में बहने वाली कशाई नदी है।[1]

उत्पाद (देशोत्पत्ति)

पूर्व देश की उत्पत्ति में लवली (लौंग), ग्रन्थिपर्ण (एक सुगन्ध वृक्ष) अगरू (अगर) द्राक्षा (दाख) और कस्तूरिका (कस्तूरी) इत्यादि हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि इन वस्तुओं में वेलावन (समुद्र तट) की प्रसिद्ध वनस्पतियाँ और पवर्तों में पाई जाने वाली वस्तुएँ शामिल हैं।

महाभारत के उद्योग पर्व अध्याय १०८ में पूर्व दिशा का विशेष माहात्म्य वर्णन किया गया है। यहीं भगवान सूर्य उदित होते हैं,[2] यहीं बुद्धि का विकास हुआ। यस्यां पूर्वं मर्तियाता यया व्याप्तमिदं जगत[3]। यहीं स्वर्ग का द्वार है। देवताओं की लक्ष्मी का मूल स्थान पूर्व दिशा ही है। यहीं ब्रह्मा ने पूर्व में वेदों का गान किया था और यहीं ब्रह्मवादियों को सविता ने सावित्री मन्त्र का उपदेश दिया। यहीं सूर्य ने याज्ञवल्क्य को यजुर्वेद पढ़ाया।[4]

रामायण के भी अनुसार दिव्य उदय पर्वत से सुशोभित पूर्व-दिशा ब्रह्मलोक का द्वार है।[5]

''ईसा की ७ वीं शताब्दी में पूर्वी-भारत में आसाम, बंगाल,

जिसमें गंगा का डेल्टा भी सम्मिलित था, सम्बलपुर, उड़ीसा और गंजाम सम्मिलित थे। ह्वेन सांग इस क्षेत्र को ६ भागों में विभक्त करता है जिनके नाम कामरूप, समतट, ताम्रलिप्ति, किरनसुवर्ण, ओड्र और गंजाम थे[6]।

कामरूप (प्राग्ज्योतिष), ताम्रलिप्त, और ओड्र नामक भूखण्डों का उल्लेख काव्य मीमांसा में ही किया गया है। समतट, वंग का ही एक भाग था

१—जाग० ए० मेड०, पृ० ५७
२—महाभारत, उद्योग पर्व १०८। ३
३—वही, १०८। ४
४—वही, अध्याय १०८। ५-११, आदि
५—रामायण, किष्किंधा का० ४०। ६४
६—कनिंघम ए० जा०, पृ० ४२१

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जिसका उल्लेख काव्य मीमांसा में हुआ है। कर्पूर मंजरी में कर्ण सुवर्ण का उल्लेख मिलता है।[१]

सातवीं शताब्दी में कर्ण सुवर्ण का शासक शे-शंग-किय या शशांगक था जो बौद्ध धर्म का विनाशक था।[२] स्पष्टतः यह उल्लेख शशांक के लिये किया गया है। कर्ण सुवर्ण गौड़ देश का मुख्य नगर था और शशांक को गौड़ाधिप कहा गया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि युअनच्वांग कालीन पूर्व देश के भौगोलिक स्वरूप में राजशेखर युगीन पूर्व-देश का सुन्दर साम्य है।[३]

१—कर्पूर मंजरी पृ० १५, १-१४ के बाद : 'अवमानिद कण्णसुवण्ण दाण।'

२—कनिंघम-ए०जा० पृ० ४३०

३—वाटर्स-युअनच्वांग्स ट्रेवेल्स पृ० १९१-१९२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

६—दक्षिणापथ

स्थिति और विस्तार

इसे दक्षिण देश (का० मी० ९७ । २४) भी कहा गया है। राजशेखर के अनुसार माहिष्मती के उस ओर दक्षिण में दक्षिणापथ है :

माहिष्मत्याः परतो दक्षिणापथः ॥

का० मी० ९३ । २५

जिसमें महाराष्ट्र, माहिषक, अश्मक, विदर्भ, कुन्तल, क्रथ, कैशिक, सूर्पारक, काञ्ची, केरल, कावेर, मुरल, वानवासक, सिंहल, चोल, दण्डक, पाण्ड्य, पल्लव, गाङ्ग, नाशिक्य, कौंकण, कोल (कोल्ल) गिरि और बेल्लर (वल्लर) आदि जनपद सम्मिलित थे :

"यत्र महाराष्ट्र माहिषकाश्मक विदर्भकुन्तल क्रथकैशिक सूर्पारककाञ्ची केरल कावेर मुरल वानवासक सिंहल चोल दण्डक पाण्ड्यपल्लवगाङ्ग नाशिक्य कौंकणकोल्ल (ल) गिरि वेल्लर प्रभृतयो जनपदाः।"

का० मी० ९३ । २५–२८

इस दृष्टि से दक्षिणापथ, स्पष्टतः, महाराष्ट्र से लेकर सिंहल तक विस्तृत था।

इसमें निम्नलिखित पर्वत सम्मिलित थे :—

"विन्ध्यदक्षिणपादमहेन्द्रमलयमेकलपालमञ्जरसह्यश्रीपर्वतादयः पर्वताः ॥"

का० मी० ९३ । २८–९४ । १

पर्वतों की दृष्टि से विन्ध्याचल के दक्षिणी भाग से लेकर मलय तक फैला हुआ सम्पूर्ण दक्षिण प्रायद्वीप दक्षिणापथ में सम्मिलित था। मलय पर्वत सिंहल (लंका) तक फैला हुआ था। दक्षिणापथ में निम्नलिखित नदियाँ बहती हुई बताई गई हैं :

नर्मदा तापी पयोष्णी गोदावरी कावेरी भैमरथी वेणा कृष्णवेणी वञ्जुरातुंगभद्राताम्रपर्ण्युत्पलावती रावणगंगाद्या नद्यः। का० मी० ९४ । १–३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अत: सत्य ही विन्ध्य और नर्मदा के दक्षिण स्थित भूखंड दक्षिणापथ कहलाता था ।

दक्षिणापथ की स्थिति मध्य देश की दक्षिणी सीमा पर भी आधारित रही है । राजशेखर के अनुसार विन्ध्य ही मध्य देश की दक्षिणी सीमा थी और विन्ध्य दक्षिणपाद से ही दक्षिणापथ भी प्रारम्भ हो जाता है । अत: भारत के दो महा-खण्डों—उत्तर और दक्षिण—के बीच विन्ध्य पर्वत ही सीमा-पर्वत था । अगस्त्य के दक्षिण जाने की कथा से स्पष्टत: विन्ध्य श्रेणी ही दक्षिणापथ के द्वार पर खड़ा था । राजशेखर के अनुसार नर्मदा विन्ध्याद्रि की ही नदी थी और माहिष्मती पुरी भी नर्मदा के तट पर ही स्थित विन्ध्याद्रि की नगरी थी । अत: पर्वत, नदी और नगर तथा जनपदों की स्थितियों से विन्ध्य और नर्मदा के दक्षिण ही दक्षिणापथ स्थित था ।

परन्तु जैसा कि ऊपर देश-विभाग-वर्णन करते हुए बताया गया है कि वायु और मत्स्य पुराणों में सात तथा नौ खण्डों का उल्लेख मिलता है । इन नये खण्डों की स्थिति मुख्यत: पर्वताश्रयी को छोड़ कर मध्य देश और दक्षिणापथ के बीच ही मानी गई है । ये नये देश हैं :—

अन्तर्नर्मदा (या उत्तर नर्मदा) और विन्ध्य पृष्ठ तथा गोदावरी तट देश (मनोरम देश) हैं । बौधायन धर्म सूत्र (१ । २ । १०) के अनुसार आर्यावर्त की दक्षिणी सीमा पारियात्र थी । अश्वघोष ने भी मध्य देश की दक्षिणी सीमा पारियात्र (सौन्दर नन्द २ । ६२) को ही माना है । वामन पुराण के अनुसार हिमालय के दक्षिण और कालंजर के उत्तर तथा कुशस्थल (द्वारका) के पूर्व तथा वसु पुर (वसुमती या राजगृह जो मगध की राजधानी थी) के पश्चिम एक महापुण्य देश की प्रतिष्ठा की गई है :

कालंजरस्योत्तरतः सुपुण्यो देशो हिमाद्रे रपि दक्षिणस्थः ॥

वामन पु० ६ । ५५ (२)

तस्मिन्सुपुण्ये विषये निविष्टो रुद्र प्रसादादपि पूज्यतेऽसौ ॥

वही ६ । ५६ । (१)

कालंजरस्योत्तरतः सुपुण्यस्तथा हिमाद्रे रपि दक्षिणस्थः ।
कुशस्थलात्पूर्वत एव विश्रुतो वसोः पुरात्पश्चिमतोऽव तस्थे ॥

वही ७६ । १४

यह इतना सुपुण्य और विश्रुत देश था कि यहां पूर्व युग में महाराज गय (जिनके नाम से गया का नाम पड़ा) ने सैकड़ों अश्वमेध यज्ञों का सम्पादन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया था..................।[1] इस प्रकार इतना प्रसिद्ध पुण्यस्थल और यज्ञ क्षेत्र मध्य देश ही था जिसकी वामन पुराण ने नयी व्याख्या की है।

इस प्रकार यही निष्कर्ष निकलता है कि पारियात्र और विन्ध्य तथा कालिंजर और विन्ध्य के मध्य एक नया भूखण्ड था जिसके रूप-लक्षण विशेष के आधार पर उसका अपना नाम भी आवश्यक था। यह नाम अन्तर-नर्मदा अथवा उत्तर नर्मदा ही था जिसका पुराणों में वर्णन मिलता है और उत्तर-नर्मदा अथवा अन्तर्नर्मदा ही अभिलेखों का 'कालिन्दी-नर्मदयों मध्य' प्रान्त था जिसको एक शासकीय प्रदेश मांना गया था।[2]

भरत मुनि भी कालंजर के निकटस्थ भागों (दक्षिणी भागों) को दक्षिणापथ में ही सम्मिलित करते हैं।

संभवत: इसी संकर के कारण राजशेखर मध्य देश के देश-पवर्तों और नदियों तथा उत्पाद का वर्णन न कर इसे **'तत्प्रसिद्धिसिद्धमिति न निर्दिष्टम्'** कहकर छोड़ देते हैं। इसी कारण काव्य मीमांसा में वत्स, मत्स्य, चेदि, कालिंजर, जेजाभुक्ति (जजहोति), आदि जनपदों का उल्लेख नहीं किया गया है। ये प्रदेश इस युग में प्रसिद्ध ही थे।

कर्पूर मंजरी में भी 'दक्खिड़ाबह(पृ० १२, जब० १)का उल्लेख मिलता है।

जनपद

देश-विभाग में दी हुई जनपद सूची के अतिरिक्त अध्याय तीन में भी दक्षिण के जनपदों की सूची मिलती है। यह है—

दक्षिणां दिशमाससाद यत्र मलय मेकल कुन्तल केरल पाल मञ्जर महाराष्ट्र गंग कलिंगादयो जनपदाः।

तत्राभियुञ्जाना.........दाक्षिणात्या प्रवृत्तिः।

का० मी० ९। ११-१३

इस प्रकार दाक्षिणात्य जनपदों की सूची इस प्रकार है:

सूर्पारक, कौंकण, महाराष्ट्र, नासिक्य, अश्मक, वेल्लर, विदर्भ, क्रथ, कैशिक, पाल, मञ्जर, दण्डक, कुन्तल, माहिषक, गंगा या गांग, कोल्लगिरि वानवासक, काञ्ची, पल्लव, चोड, कावेर, पाण्ड्य, मलय, केरल, मुरल, सिंहल, मेकल और कलिंग।

१—वामन पुराण ७६/१५–१६

२—बुध गुप्त का एरण स्तम्भ लेख (१६५ गु० सं०) पंक्ति ३–४

कालिन्दी नर्मदयोमध्यं पालयति लोकपाल गुणैंजगति

महाराज श्रियमनुभवति सुरश्मिचन्द्रे च ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दक्षिण की दो जनपद तालिकाओं (का०मी०अ० ३, पृ० ९) और (का०मी०अ० १७, पृ० ९३) में कुछ अन्तर है। पहली सूची (का०मी० पृ० ९) में कलिंग भी दक्षिण में रखा गया है जब कि इसका उल्लेख देश विभाग (अ० १७) में पूर्व देश के साथ किया गया है। यहाँ दक्षिणापथ के जनपदों में (का०मी० पृ० ९३) कलिंग का उल्लेख नहीं है। दूसरी सूची (का० मी० पृ० ९३) में पाण्डच और पहली सूची (पृ० ९) में पाण्डच का नाम न होकर मलय जनपद का नाम है। अतः पाण्डच और मलय एक ही प्रदेश के पर्याय मालुम पड़ते हैं।

इन दो सूचियों में दिये गये नामों के अतिरिक्त अन्यत्र भी काव्य मीमांसा में दक्षिणापथ के निम्नलिखित जनपदों के नाम मिलते हैं:

कर्णाट—का०मी० ३४ । ४, कर्पूर मंजरी (पृ० १६) में इसका प्राकृत रूप 'कण्णाड' (कण्णाडीणं)

द्रविड—का०मी० ३४ । ६

द्रमिल—का०मी० ३९ । १३

अन्ध्र—का०मी० ८४ । ९, १०० । ४

महाराष्ट्र

दक्षिण का यह प्रसिद्ध प्रदेश है। जिसका उल्लेख बाल रामायण (१०-७४) में भी मिलता हैं। कर्पूर मंजरी[1] में महाराष्ट्री (स्त्री) के स्थान पर इसका प्राकृत रूप मरठी मिलता है। स्कन्द पुराण में भी इस देश[2] (स्कन्द पु० २-१-१४-५, २-५-११-८९, ३-१-३४-४५) और यहाँ की विशिष्ट शैली-महाराष्ट्री (स्कन्द पु० ४-१-२-११) का उल्लेख मिलता है। वायु[3], मार्कण्डेय[4] और ब्रह्मवैवर्त[5] पुराणों में भी इसे दाक्षिणात्य देश बताया गया है। मार्कण्डेय पुराण अपनी दूसरी जनपद तालिका (कूर्म रूप-नवभेद विषयांश्च-अध्याय ५८) में इसे कूर्म की दक्षिण कुक्षि में स्थित बताते हैं।[6]

१—कर्पूर मंजरी, प्रथम जव०, पृ० १७

२—स्कन्द पु० २।१ । १४ । ५ : महाराष्ट्राभिधे देशे.......................

३—वायु पु० ४५ । १२५ : महाराष्ट्रा माहिषकाः कलिङ्गाश्च सर्वशः ॥

४—मार्कण्डेय ५७ । ४६ : महाराष्ट्रा माहिषका कलिङ्गाश्चैव सर्वशः ॥

५—ब्रह्म वै० श्री १०५ । ५७

६—मार्कण्डेय पु० ५८ । २३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अशोक के शिला लेखों (पंचम शिला लेख) में रिस्टिक (गिरनार), लठिक (धौली), रस्तिकनं (शाहबाजगढ़ी) तथा रट्क्र (मान सेहरा) का उल्लेख अपरांत के साथ मिलता है। प्रो० भण्डारकर (सर, आर० जी०) का मत है कि "रास्टिक या मनसेहरा पाठ का रट्रक (संस्कृत राष्ट्रिक) संभवत: महाराष्ट्र के निवासी थे क्योंकि दक्षिण में बहुत ही प्राचीन "काल से रट्ट नामक जाति शासन करती थी। इनकी ही एक शाखा ने राष्ट्रकूट के नाम से चालुक्यों के पहले शासन भी किया।............बाद में जिस प्रकार भोजों (बरार के निवासी) ने महाभोज का नाम धारण कर लिया, उसी प्रकार राष्ट्रिकों, रट्टियों, रट्ठियों अथवा रट्ठों ने भी अपने आपको महारठी या महारट्ठ कहने लगे।"[1]

राष्ट्र कूट वंश का पूर्व पुरुष रट्ट बताया गया है (क्षितितलतिलक:.........रट्ट:। तमनु च सुत राष्ट्रकूट नाम्ना भुवि विदितोजनि राष्ट्रकूट वंश:)।[2] इसलिये राष्ट्र कूट राज्य को रट्ट राज्य[3] कहा गया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि रट्ट राज्य ही महारट्ट राज्य था जो महाराष्ट्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसकी राजधानी मान्यखेट (मालखेड) थी। यह देश आधुनिक महाराष्ट्र कहलाता है।

माहिषक

महाराष्ट्र के साथ सम्बद्ध (महाराष्ट्रा मार्हिषका)[4] दक्षिण[5] का जनपद था। डा० सरकार का मत है कि यह देश या तो प्राचीन महिष विषय (मैसूर-महिषासूर विषय) है या नर्मदा तटपर स्थित माहिष्मती देश है।[6] रामायण के अनुसार यह दक्षिण का रम्य देश था, जिसे विदर्भ और ऋष्टिकों के साथ रखा गया है :—

१—सर आर० जी० भण्डारकर के कलेक्टेड वर्क्स-जिल्द ३ (अर्ली हिस्ट्री ऑफ डेकन) पृ० १८-१९

२—वही पृ० ३१३, पंक्ति ११-१२
(राष्ट्र कूट देउली ताम्रपत्र लेख) (प्राय: सभी राष्ट्र कूट अभि लेखों में रट्ट नामक पूर्व पुरुष का उल्लेख मिलता हैं।

३—वही, पंक्ति २९, पृ० ३१४, पृ० ३२२, ३२६,

४—का० मी० ९३। २५

५—मत्स्य ११४। ४७, वायु पु० ४५। १२५, मार्कण्डेय ५७। ४६, दिव्यावदान ३४१। २६-२७, ३६१। १८

६—जाग० ए० मेड० इ०, पृ० ३०,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विदर्भानृष्टिकांश्चैव रम्यान् माहिषकानपि ।।

किष्किधा का० ४१ । १०

महाभारत दाक्षिणात्य जनपदों में इसे कर्णाट के साथ रखता है :—

कर्णाटका महिषका विकल्पा मूषकास्तथा ।

झिल्लिकाः कुन्तलाश्चैव सौहृदा नभकानना ।। भीष्म पर्व १०-५९

महाभारत में माहिषक देश को त्याज्य बताया गया है, क्योंकि वे धर्म-हीन थे ।[1] वे क्षत्रिय होते हुए वृषलत्व को प्राप्त कर चुके थे ।[2] द्रविड और अन्ध्र के साथ इसको रखा गया है :

तत्रापि द्रविडैरान्ध्रै रौद्रैर्माहिषकैरपि ।

तथा कोल्लगिरेयैश्च युद्धमासीत किरीटिन ।।

आश्वमेधिक ८३ । ११

डॉ० मीराशी के अनुसार दक्षिण में महिष या महिष्य वंश शासन करता[3] था जिसके सिक्के कोण्डापुर और मास्की (हैदराबाद प्रान्त) से प्राप्त हुए हैं । संभवतः महिष या महिष्य राजवंश का मूलाधार माहिषक देश था[4] जिसे डा० मीराशी हैदराबाद प्रदेश के दक्षिण भाग में स्थित बताते हैं जैसा कि उनके सिक्कों की प्राप्ति से ज्ञात होता है ।[5]

अश्मक

यह दक्षिण का प्राचीन प्रसिद्ध जनपद है ।[6] गरुड़ और विष्णु धर्मोत्तर पुराणों में इसे पुलिन्दों के साथ रखा गया है ।[7] महाभारत के अनुसार कलमाष-पाद का अश्मक नामक पुत्र था जिसने पौदन्य नाम की नगरी का निर्माण कर

१—कर्णपर्व ४५ । ४३ : कारस्करान्माहिषकान् कुरण्डान् केरलांस्तथा ।
कर्कोटकान् वीरकांश्च दुर्धर्मांश्च विवर्जयेत् ।।

२—अनुशासनपर्व ३३ । २२

३—स्टडीज इन इण्डोलॉजी-तृतीय भाग पृ० ७२-७३

४—वही पृ० ६०, ७९-८१

५—वही पृ० ६१

६—वामन पु० १३ । ४९, मार्कण्डेय पु० ५७ । ४८

७—गरुड़ पु० ५५ । १३ : पुलिन्दाश्मकजीमूत नय राष्ट्र निवासिनः ।
कार्णाटाः काम्बोजा घाटा दक्षिणापथ वासिनः ।।
विष्णुधर्मोत्तर १ । ९ । ५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाया था।[1] स्पष्ट है कि इस देश का नाम अश्मक नाम राजर्षि के नाम पर ही पड़ा और इसकी राजधानी भी उसी से बनी।

वृहत्संहिता (५ । ७३) में इसे अवन्ति और मेकल के (वंगाश्मकावन्तक मेकलानाम्) साथ रखा गया है। इसी ग्रन्थ में अश्मक को पश्चिमोत्तर देश में भी (वृहत्संहिता १४ । २२) रखा गया है। यह प्रसिद्ध असकेनियन देश था जो सुवास्तु और गौरी की घाटी में उत्तरापथ का जनपद था।

उपरोक्त उल्लिखित अश्मकावन्त महाजनपद युग का 'अस्सकानं अवन्तीनं' (अस्सक और अवन्ति)[2] स्वरूप ही है। बुद्ध कालीन १६ महाजन पदों में इन दोनों देशों का स्थान था। अवन्ति का दक्षिणी भाग माहिष्मती प्रदेश अस्सक को छूता था। अस्मक या अस्सक जनपद गोदावरी तट पर स्थित था जहाँ इसकी राजधानी पौदन्य या पोतन थी।

विदर्भ

यह दक्षिणापथ का प्रसिद्ध देश था।[3] गरुड़ और विष्णुधर्मोत्तर पुराणों के अनुसार इसे पूर्व दक्षिण में विन्ध्य पर्वत पर स्थित बताया गया है[4]। मत्स्य पुराण में इसे दण्डक के साथ (वैदर्भा दण्डकैः सह)[5] दक्षिणापथ में रखा गया है। योगवशिष्ठ में भी इसे प्राग्दक्षिण में विन्ध्य पर स्थित बताया गया है।[6]

१—महा भा० आदि पर्व १७६ । ४७ :
अश्मको नाम राजर्षिः पौदन्यं यो न्यवेशयत् ॥

२—अंगुत्तर निकाय भाग १, पृ० १९७ पंक्ति ७-१०

३—का० मी० २२ । १५ : दयितसुवृत्तयो विदर्भाः।
क० मंजरी पृ० ३८, प्रथम जवनिका।
रामायण, किष्किंधा का० ४१ । १०; उत्तर काण्ड ७८ । ३ : वैदर्भको।
महाभारत भीष्म पर्व ९ । ६४; सभा पर्व ३१ । ११–१२
भागवत पु० ४ । २८ । २८, ४०; ८ । २० । ३४; १० । २ । ३; १० । ५२ । २१; १० । ५३ । ६; १० । ८२ । १३।
बृहत संहिता १४ । ८
वृहत क० म० १०वां लम्बक श्लोक १५१, १५२

४—गरुड़ पुराण ५५ । १२ : कलिंग वङ्ग पुण्ड्राङ्गा वैर्दभा मूलकास्तथा।
विन्ध्यान्तर्निलया देशाः पूर्वदक्षिणतः स्मृताः ॥
विष्णुधर्मोत्तर पु० १ । ९ । ४

५—मत्स्य पु० ११४ । ४८

६—यो० व० ३ । ३६ । २७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर्पूरमंजरी के अनुसार इसकी राजधानी विदर्भपुर थी[१] जिसे कुण्डिन या कुण्डिनपुर[२] भी कहा गया है। शिशुपाल ने कृष्ण से पराजित हो कर भोजकट नामक दूसरे राजनगर की स्थापना की।[३] काव्य मीमांसा के अनुसार वत्सगुल्म विदर्भ का नगर था (विदर्भेषु वत्सगुल्म नाम नगरम्—का० मी० १०। ३)। संस्कृत्य साहित्य और काव्य शास्त्र में वैदर्भी (का० मी० ९। २३) रीति का विशेष महत्व है :

वैदर्भी गौडीया पाञ्चाली चेति रीतयस्तित्र:। का० मी० ३१। ६

विदर्भ आधुनिक बरार है। डे महोदय के अनुसार कुण्डिन नगर की पहचान बरार प्रांत के कोण्डवीर से गई है।[४] परन्तु इसकी पहचान बरार के अमरावती ज़िले के चन्दौर तालुक में वर्धा के तट पर स्थित कौण्डिन्युपुर से करना ठीक है। वत्सगुल्म की पहचान अकोला प्रांत के बसीम नामक स्थान से की गई है।

क्रथ-कैशिक

शैव्या के गर्भ से विदर्भ का जन्म हुआ[५] और विदर्भ के कुश, क्रथ तथा रोमपाद नामक तीन पुत्र हुए[६]। इस प्रकार स्पष्ट है कि क्रथ—कैशिक विदर्भ के ही भाग थे जो क्रमश: क्रथ और कैशिक द्वारा शासित होने के कारण ही अलग देश माने गये[७]। रघुवंश (५। ३९-४०) में विदर्भ को क्रथ-कैशिक देश ही कहा गया है। राजशेखर इन्हें अलग देश मानते हैं। उन्होंने कैशिकी वृत्ति की विशेषताओं का भी उल्लेख किया है :

यद्विचित्रनृत्तगीतवाद्यविलासादिकमाविर्भावयामास सा कैशिकी वृत्तिः।
का० मी० ९। २०-२१

१—क० मंजरी पृ० ३८ :
अत्थिएत्थ दक्खिणावहे वेदब्भं णाम णअरं
(अस्ति तत्र दक्षिणापथे वैदर्भं नाम नगरं)
भागवत पु० १०। ५३। ३६;
विष्णुधर्मोत्तर १। १६७। २; मार्कण्डेय ५८। १७

२—वही १०। ५३। ७, १५; वामन ८४। ३४; पद्म पु०, उत्तर ७८। ४५। रूपषट्कं, रुक्मिणी हरण १। १५ के बाद पृ० ४१; २। ६ के बाद पृ० ४८; २। १७ के बाद पृ० ५१

३—भागवत पु० १०। ५४। ५२

४—जाग० डिक० पृ० १०६

५—भागवत पु० ९। २३। ३९

६—वही ९। २४। १

७—महाभारत, सभा पर्व १४। २१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाभारत क्रथ और कैशिकों को अलग-अलग देश मानता है ।[१]

कुन्तल[२]

यह दक्षिणापथ का प्रसिद्ध देश था । वहां सातवाहन शासन करता था जिसने प्राकृत भाषा को विशेष प्रश्रय दिया :—

श्रूयते च कुन्तलेषु सातवाहनो नाम राजा ;
तेन च प्राकृत भाषात्मकमन्तःपुर एवेति समानं पूर्वेण ।
का० मी० ५० । १७-१८

इस देश का सम्बन्ध वाकाटकों से भी था जैसा कि निम्नलिखित उद्धरणों से ज्ञात होता है:—

असकलहसितत्वात्क्षालितानीव कान्त्या ।
मुकुलित नयनत्वद्व्यक्तकर्णोत्पलानि ।।
का०मी० ६० । २५-२६

पिबति मधु सुगन्धीन्याननानि प्रियाणां ।
त्वयि विनिहितभारः कुन्तलानामधीशः ।।
का०मी० ६१ । १-२

पिबतु मधुसुगन्धीन्याननानि प्रियाणां ।
मयि विनिहितभारः कुन्तलानामधीशः ।।
का०मी० ६१ । ३-४

उपर्युक्त उदाहरण स्वरूप में उद्धृत श्लोक कालिदास कृत 'कुन्तलेश्वर दौत्यम्' नामक संस्कृत ग्रन्थ से लिये हुए माने गये हैं और कुन्तलेश्वर वाकाटक सम्राट थे जिनके दरबार में कालिदास चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य द्वारा दूत बनाकर भेजे गये थे । काव्य मीमांसा स्वयं चन्द्रगुप्त (विक्रमादित्य-द्वितीय) का उल्लेख करती है :

"इह कालिदासमेण्ठावत्रामररूपसूरभारवयः ।
हरिचन्द्रचन्द्रगुप्तौ परीक्षिताविह विशालायाम् ।।
का०मी० ५५ । १९-२०

कालिदास और चन्द्रगुप्त उज्जयिनी की काव्यकार परीक्षा के प्रथित रत्न थे जिनकी ज्योति से रात दिन प्रकाश बना रहा:—

१—महाभारत, सभा पर्व १४ । २१

२—का० मी० ९ । ११; ३९ । १६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यद्दन्तर्ज्योतिमर्काभमुर्व्याम्भाति निरन्तरम् ।
दिवाविभावरी व्यापि चन्द्रगुप्ताख्यमद्भुतम् ॥

चन्द्रगुप्त, कालिदास और प्रवरसेन (द्वितीय, जो चन्द्रगुप्त द्वितीय के नाती थे) की त्रिवेणी का संगम और इसके पावन प्रवाह से समुद्र पार स्थित द्वीपान्तर प्रदेश भी पवित्र हो गया । बाण भी इस त्रिवेणी की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं :

कीर्तिः प्रवरसेनस्य प्रयाता कुमुदोज्ज्वला ।
सागरस्य परं पारं कपिसेनेव सेतुना ॥

हर्ष चरित १।१४

अर्थात् प्रवर सेन (द्वितीय-वाकाटक सम्राट) की चन्द्राश्रया (कुमुदोज्ज्वला) अर्थात् चन्द्रगुप्त द्वितीय के आश्रय से प्रतिष्ठित कीर्ति सेतु (श्लेष, सेतु बन्ध पुल और सेतुबन्ध नामक प्राकृत काव्य) द्वारा समुद्रपार, परं पारं (पारे सिन्धु = पालेसमुन्द = लंका) आदि देशों में उसी प्रकार पहुँच गई जिस प्रकार रामाश्रयी बानर सेना लंका पहुंची । इस तथ्य की पुष्टि कम्बुज देश में (कम्बोडिया) प्राप्त यशोवर्मन् के लेख से भी होती है :

येन प्रवरसेनेन धर्मसेतुं विवृण्वता ॥
पर प्रवरसेनोपि जितः प्राकृतसेतुकृत ॥

इस्टर्न बैरे लेख, श्लोक ३४

अस्तु स्पष्ट है कि काव्य ने कितने सुन्दर ढंग से प्राचीन भारतीय इतिहास के स्वर्ण युग की कान्ति को सुरक्षित रखा । संस्कृत साहित्य के इतिहास में भी कालिदास के युग-सम्बन्धी विवाद को यहीं से खतम समझना चाहिए । वह निश्चयतः गुप्तकालीन विभूति थी ।

राजशेखर के अनुसार कुन्तल देश में विदर्भ नामक नगर है जहां सम्पूर्ण जनता का प्रिय वल्लभराज शासन करता था—

अत्थि एत्थ बिदब्भं णाम णअरं कुंतलेसु तहि सअलजण बल्लहो बल्लहराओ णाम राजा ।

कर्पूर मंजरी पृ० ४९

बल्हराओ को ही अरब-भूगोलवेत्ता बल्हरा कहते हैं । "भारतीय शासकों में बल्हरा ही सर्वशक्तिमान राजा है जिसकी शक्ति को भारत वर्ष में सभी मानते हैं ।......बल्हरा इस वंश के सभी राजाओं की उपाधि है ।...... बल्हरा का राज्य समुद्रतट से प्रारम्भ होता है जहां पर कोंकण स्थित है ।"[1]

1—ईलियट ऐन्ड डाउसन, भाग १, पृ० ३—४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अरब लेखकों के विवरण से यही ज्ञात होता है कि बल्लभीपुर का राजवंश ही बल्हरा कहलाता था और शासक बल्लभी या बल्लभराय कहलाते थे जिन्होंने बल्लभी संवत चलाया।[१] मसूदी के अनुसार बल्हरा की राजधानी मानकीर[२] थी जिसकी पहचान राष्ट्रकूट सम्राटों की राजधानी मान्यखेट से की गई है। बल्हरा के देश के विषय में अनिश्चयता सी रही है। परन्तु राजशेखर के अनुसार 'सअल जन बल्लहो वल्लहराओ (सकलजन वल्लभो बल्लभराजो नाम राजा) कुन्तल देश का राजा था, जहां विदर्भ नगर (बरार) भी स्थित था। कुन्तलेश्वर (राष्ट्रकूट सम्राट) महान शासक था[३] (कर्पूर मंजरी ४।२२)। यहां के पुरुष[४] और स्त्रियाँ[५] भी प्रसिद्ध थीं।

राजशेखर कुन्तलों को पल्लवों के साथ रखते हैं—

श्रोणीभारः कृतपरिचयः पल्लवैः कुन्तलानाम्।

का० मी० ६७। २

कलचुरि सम्राट कर्ण के रेवा लेख (सं० ८००) में भी यही पाते हैं—

हठग्रहान्दोलित कुन्तलश्रीविखण्ड्यमानाधर पल्लवा च ॥

कार्पस इ० इ० भाग ४, पृ० २७० श्लोक २५

कलचुरि शासकों विशेषकर कर्ण के आघात कुन्तलों पर पड़ते रहे। डा० मीराशी के अनुसार कुन्तल देश में दक्षिण मराठी-भाषी देश और पड़ोस के कनाड़ी प्रान्त सम्मिलित थे।[६]

नासिक्य

यस आधुनिक नासिक ही है। इसके विभिन्न रूप—नासिक्य[७] तथा नैषिक[८]—मिलते हैं।

पुराणों और काव्यों में गोदावरी की घाटी में स्थित मनोरम देश का उल्लेख मिलता है:—

१—वही पृ० ३५४—३५५

२—वही पृ० ३५५

३—कर्पूर मंजरी, अ० १। १२

४—का० मी० ६७। २२

५—वही ९७। ६

६—कार्पस इ० इ०, भाग ४, पृ० २२६

७—मार्कण्डेय पु० ५८। २४ कावेरी ऋष्यमूकस्था नासिक्य श्चैव ये जनाः।

८—मार्कंडेय पु० ५७। ४८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सह्याद्रेरुत्तरे भागे यत्र गोदावरी नदी।
पृथिव्यामिह कृत्स्नायां स प्रदेशो मनोरमः ॥
का० मी० ९६। १९-२०

सह्यस्य चोत्तरार्द्धे तु यत्र गोदावरी नदी।
पृथिव्यामिह कृत्स्नायां स प्रदेशो मनोरमः ॥
वायु पु० ४५। ११२

तत्र गोवर्धनो नाम सुरराजेन निर्मितः।
रामप्रियार्थं स्वर्गोऽयं वृक्षा ओषधयस्तथा ॥
वही ४५। ११३

भरद्वाजेन मुनिना तत् प्रियार्थेऽवतारिताः।
अन्तः पुरवनोद्देशस्तेन (तत्रेति च) जज्ञे मनोरमः ॥
वही ४५। ११४

सह्यस्यानन्तरे चैते तत्र गोदावरी नदी।
पृथिव्यामपि कृत्स्नायां स प्रदेशो मनोरमः ॥
मत्स्य पु० ११४। ३४

यत्र गोवर्धनो नाम मन्दरो गन्धमादनः।
रामप्रियार्थं स्वर्गीया वृक्षा दिव्यास्तथौषधीः ॥
वही ११४। ३८

भरद्वाजमुनिना प्रियार्थमवतारिताः।
ततः पुष्पवरो देशस्तेन जज्ञे मनोरमः ॥
वही ११४। ३९

सह्यस्य चोत्तरे यास्तु यत्र गोदावरी नदी।
पृथिव्यामपि कृत्स्नायां स प्रदेशो मनोरमः ॥
मार्कण्डेय पु० ५७। ३४

गोवर्धनपुरं रम्यं भार्गवस्य महात्मनः।
वही ५७। ३५ (१)

सह्य के उत्तरी भाग में जो गोदावरी से अभिसिंचित होता था, वही पृथ्वी का मनोरम देश था जिसमें रम्य गोवर्धन पुर (नासिक) स्थित था। इस की प्रतिष्ठा भरद्वाज ऋषि ने राम के लिये अथवा सीता राम के लिये ही की थी। वहां ही गोवर्धन गिरि भी जो मन्दर और गन्धमादन पर्वतों के समान सुन्दर स्थित था। इस प्रकार नासिक और उसके आस-पास का भूखंड ही मनोरम देश था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कौंकण[१]

प्रसिद्ध प्राचीन जनपद है जो पश्चिमी घाट और अरब सागर के बीच स्थित था। इसे अपरान्त (रघुवंश ४। ५८) भी कहते थे।

स्कन्द पुराण (१–२–३९–१४३) के अनुसार क्रमश: कौंकण और लघु कोंकण ३६ हज़ार तथा १४२२ ग्रामों के देश थे। इस प्रकार कोंकण दो प्रधान भागों-कोंकण और लघुकोंकण-में बँटा हुआ था। इसे ७ विभागों वाला देश भी बताया गया है[२]।

सूर्पारक

इसे भी अपरान्त में स्थित बताया गया है (वायु पु० ४५। १२८)। यह प्राचीन युग में पश्चिमी समुद्र तट का प्रसिद्ध बन्दरगाह था। श्रावस्ती के व्यापारी अपना माल लेकर यहाँ तक जाते थे।[३] सामुद्रिक व्यापार का भी यह प्रसिद्ध केन्द्र था।[४] यह महाराष्ट्र में थाना जिले का सोपारा है। यहां अशोक का शिला लेख भी प्राप्त हुआ था जो इसकी प्राचीन प्रसिद्धि और महत्व का परिचायक है।

दण्डक

दक्षिण का प्रसिद्ध दण्डकारण्य ही है। वायु पुराण (४५। १२६) में इसे विदर्भ के साथ रखा गया है, जो दोनों देशों का सान्निध्य बताता है। भण्डारकर (सर आर० जी०) इसे महाराष्ट्र मानते हैं।[५]

रामायण के अनुसार यह जनस्थान प्रदेश ही था।[६] इसे ही पंचबटी देश[७] भी कहा गया है। पुराणों[८] और काव्य-मीमांसा[९] में इसे मनोरम देश कहा गया है। रामायण भी इसे सुन्दर और श्रीमान देश बताती है।[१०]

१—महाभारत, भीष्म पर्व ९। ६०
२—राज तरंगिणी ४। १६०
३—दिव्यावदान २१। ३-४ श्रावस्तेया वणिज: पण्यमादाय सूर्पारकं नगरं गता:।
४—वही १९। २४-२५ यावन्महासमुद्रात्···वणिकशतानि···सूर्पारकं नगरमनुप्राप्तानि।
५—भन्डारकर के कलेक्टेड वर्क्स, भाग ३, पृ० ८
६—रामायण किष्किंधा कां० ३३। १२, ३० इत्यादि
७—वही आरण्य कां० १५। २
८—ऊपर देखिये पृ० ६४–६५
९—का० मी० ९६। १५-२०
१०—रामायण आरण्य का० अध्याय १५
वही आरण्य का० ४५। १० अयं देश: सम: श्रीमान् पुष्पितैस्तरुभिर्वृत:।
वही १५। १२ : इयं गोदावरी रम्या पुष्पितैस्तरुभिर्वृता॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोल्लगिरि (या कोलगिरि)—

कोल्लगिरि और कोलगिरि दोनों ही पाठ मिलते हैं। महाभारत में कोल्लगिरि को दक्षिण समुद्र तट के निकट द्रविड़, आन्ध्र और माहिषकों के साथ रखा गया है। सुराष्ट्र भी इसके समीप ही स्थित था।[1] दक्षिण भारत की विजय में सहदेव ने कोलगिरि जनपद को जीता था।[2] कोल्लगिरि और कोलगिरि एक ही हैं। वायुपुराण (४५ । १२८) में कोलवन नामक जनपद का उल्लेख अपरान्त के जनपदों में किया गया है।

इसकी पहचान कुर्ग से की गई है। कावेरी नदी यहीं से निकलती है और इसे कोलगिरि या कोडगु भी कहा जाता है।[3]

वल्लर (या वेल्लर)

संभवत: एलोरा (औरंगाबाद प्रान्त, दक्षिण भारत) के आस-पास का भूखंड ही वल्लर या वेल्लर कहलाता था। वृहत्संहिता का वेल्लर (वृ० सं० १४/१४) और वल्लर एक ही हैं जिनका ही आधुनिक रूप एलोर है जहां की गुफायें विश्व विश्रुत हैं।

काञ्ची

समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भ लेख में विष्णुगोप द्वारा शासित कांची राज्य (कांचेयक विष्णुगोप) का उल्लेख मिलता है। यह चोलों और पल्लवों की राजधानी भी थी। परन्तु काव्यमीमांसा में दक्षिण की जनपद-सूची में चोल और पल्लव देशों का भी अलग-अलग उल्लेख किया गया है। दशकुमार चरित (उच्छ्वास ६, पृ० २१८) के अनुसार कांची द्रविड़ देश का नगर था (अस्ति द्रविडेषु काञ्ची नाम नगरी) अत: कांची-राज्य से द्रविड़ देश का ही बोध होता है जिसका उल्लेख राजशेखर ने दूसरी जगह किया है। यहां की स्त्रियां (कंचि बाला = कांची बाला, कर्पूर मं० १ । १५) प्रसिद्ध थीं। यह दक्षिणापथ का प्रसिद्ध नगर (का० मी० ९६ । १०) भी था, जो इस समय कांजीवरम के नाम से प्रसिद्ध है। यह पवित्र-प्रसिद्ध सात नगरियों में से एक थी। इसका एक भाग

१—महाभारत, आश्वमेधिक पर्व ८३ । १०-१२

२—वही, सभा पर्व ३१ । ६८

३—का० मी० पृ० २८७ (अपेन्डिक्स १)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विष्णुकांची और दूसरा शिवकाञ्ची कहलाता है, जहां क्रमश: विष्णु और शिव तथा वैष्णवों और शैवों की प्रधानता थी।

द्रविड़

दक्षिणापथ के जनपदों में इसका उल्लेख नहीं किया गया है। परन्तु फिर भी दक्षिण का प्रसिद्ध प्रदेश था, जिससे राजशेखर सुपरिचित थे (का० मी० ३४।६)। इसे द्रमिल (का० मी० ३९।१३) भी कहा गया है। डे महोदय के अनुसार मद्रास से लेकर श्री रंगपट्टम और कुमारी अन्तरीप तक फैले हुए भूखण्ड को द्रविड़ कहते थे (डे ज्याग० डिक्श० पृ० ५४)।

कावेर

कावेरी नदी का तटवर्ती प्रदेश (कावेरी परिसरभुव:—का० मी० ११०।१९) ही कावेर जनपद कहलाता था। मत्स्य पुराण (११४।४८) में (कावेराश्च सहैषीका:) भी इस जनपद का उल्लेख दक्षिण के जनपदों में किया गया है।

चोल

दक्षिण का प्रसिद्ध देश था[१] जिसका नाम चक्रवर्ती सम्राट चोल के नाम पर ही हुआ और इस की राजधानी कांची थी।[२] चोड देश भी इसका नामान्तर था।[३] मद्रास प्रदेश के तंजवुर और तिरुचिरपल्ली प्रान्तों में इसे स्थित माना गया है।[४]

कर्णाट

इसका वर्णन राजशेखर ने दक्षिणापथ के राज्यों में नहीं किया है। परन्तु वे इससे परिचित थे (सर्व कर्णाटाष्टंकारोत्तर पाठिन:)।[५] इसका प्राकृत रूप कण्णाड[६] दिया गया है जो कन्नड़ प्रदेश का परिचायक है। यह कर्णाटक प्रदेश ही है जिसमें मैसूर और कुर्ग के भू भाग सम्मिलित थे।

१—कर्पूर मं० १।१६
२—स्कन्द पु० २।४।२६।५
३—वही १।२।४८।२
४—जाग० ए० मेड० इं० पृ० २९, नोट ७.
५—का० मी० ३४।४
६—कर्पूर मं० १।१५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वानवासक

वानवासक देश उत्तरी कनारा प्रदेश में आधुनिक बनवासी के आस-पास स्थित भूखण्ड था। टॉलमी ने इसका बनाओसेई के नाम से उल्लेख किया है।[१] अशोक के समय रक्खित नामक बौद्ध भिक्षु यहां बौद्ध धर्म का प्रचार करने भेजा गया था।

गांग-जनपद

यहां कदम्ब-वंश ने शासन किया था।[२]

यह मैसूर का गंगवाडी ही है, जिसके पश्चिम में कदम्ब राज्य और पूर्व में पल्लवों का राज्य था।[३]

पल्लव

दक्षिण का प्रसिद्ध राज्य था। यह तोण्ड मण्डल या तुण्डीर मण्डल ही था। तोण्डई का संस्कृत-प्राकृत रूप पल्लव था।[४] यह द्रविड़ देश का एक भाग था। राजशेखर इनका उल्लेख कुन्तलों के साथ (का० मी० ६७। २२; ७६। २१) करते हैं।

पाण्ड्य

सुदूर दक्षिण का अत्यन्त प्रसिद्ध जनपद था, जिसमें ताम्रपर्णी नदी और मलय पर्वत स्थित थे। इसमें आधुनिक मदुरा और तिनेवेल्ली के प्रान्त सम्मिलित थे। यहां की स्त्रियाँ और मलयज शीतल वायु प्रसिद्ध थीं।[५]

केरल

यह भी दक्षिणी भारत का प्राचीन तथा प्रसिद्ध देश है जो मलाबार तट पर स्थित है। इसमें ट्रावनकोर और कोचीन के प्रान्त सम्मिलित थे। आज भी यह अपने प्राचीन नाम से विख्यात है।

१—क्लासिकल अकाउन्ट्स पृ० ३७६

२—प्रो० नीलकंठ शास्त्री-हिस्ट्री ऑफ़ इण्डिया भाग १, पृ० १४५-१४६

३—वही पृ० १४६-१४७

४—वही पृ० १४१

५—कर्पूर मं० १। १५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुरल

मुरला नदी के तट पर स्थित होने के कारण ही यह इस नाम से प्रसिद्ध हुआ। कालिदास के अनुसार (रघुवंश ४। ५३-५५) मुरला नदी सह्य और अपरान्त देश के निकट बहती थी। अतः इसे केरल और अपरान्त के बीच स्थित माना जा सकता है। केरल और मुरल को एक नहीं माना जा सकता। उत्तर रामचरित में मुरला नामक नदी का उल्लेख गोदावरी की सहायक नदी के रूप में किया गया है (अंक ३)। विद्धशाल भंजिका (अंक ३। १८) में मुरल देश का उल्लेख मिलता है। डा० मीराशी के अनुसार यह हैदराबाद राज्य का उत्तरी भाग था।[1]

सिंहल

यह लंका द्वीप ही है। इसे भी दक्षिणापथ के जनपदों में सम्मिलित किया गया है। चोल सम्राटों ने अपनी विजय द्वारा सिंहल के उत्तरी भागों को अपने साम्राज्य में मिला लिया था। लंका, ताम्रपर्णी और मलयाचल इस क्षेत्र के प्रसिद्ध भौगोलिक अंग थे।[2]

पर्वत मालाएं

दक्षिणापथ में निम्नलिखित पवर्तों[3] को स्थित बताया गया है :—

विन्ध्य दक्षिणपाद

यह विन्ध्याचल का दक्षिणी भाग है।

महेन्द्र—पूर्वी घाट है। यह प्रसिद्ध कुल पर्वत था।

मलय—यह पांड्य देश का पर्वत था (का० मी० ४१। २) जिसे अद्रिराज (का० मी० ४१। ५) भी कहा गया है। यह भी प्रसिद्ध कुल पर्वत था जो पश्चिमी घाट का दक्षिणी भाग था। इस नाम के जनपद का भी उल्लेख (का० मी० ९। ११) दक्षिण के राज्यों में किया गया है।

मेकल—नर्मदा नदी का स्रोत मेकल पर्वत ही था। मध्य प्रदेश के गोंडवाना में ही मेकल पर्वत स्थित है।

१—कार्पस इ० इ० भाग ४, पृ० ३१४

२—कर्पूर मं० १। १७

३—का० मी०, पृ० ९३। २८ से ९४। १ : विन्ध्य दक्षिण पादमहेन्द्र मलय मेकल पाल मञ्जर सह्य श्रीपर्वतादयः पर्वताः।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पाल—यह पश्चिमी घाट में स्थित पाल घाट ही था।

मञ्जर—इसकी स्थित निश्चित नहीं है। संभवतः इसका सम्बन्ध दक्षिण की गोदावरी की सहायक नदी मञ्जोरा से हो जो बाला घाट की पहाड़ियों से निकलती है।

सह्य—प्रसिद्ध कुलपर्वत है जिसकी पहचान पश्चिमी घाट से की गई है।

श्रीपर्वत—दक्षिण का प्रसिद्ध और पवित्र पर्वत है। अग्नि पुराण के अनुसार कावेरी संगम (नर्मदा और कावेरी) पर ही श्रीपर्वत स्थित था (अग्नि पुराण ११३।३,४)। यह एक सिद्ध पीठ था।

नदियाँ

काव्य मीमांसा के अनुसार ही नर्मदातापीपयोष्णीगोदावरीकावेरीभैमरथी-वेणाकृष्णवेणीवञ्जुरातुङ्गभद्राताम्रपर्ण्युत्पलावतीरावणगंगाद्या नद्यः। (का० मी० ९४। १–३) दक्षिणापथ में बहती थीं।

नर्मदा—पवित्र व प्रसिद्ध नदी है, जो विन्ध्याचल की घाटी में बहती हुई (विन्ध्यस्याद्रेः परिसर नदी नर्मदा—का० मी० ६८। ४) बतायी गई है। इसे यादव-सम्राट से भी सम्बद्ध किया गया है[1]। इसे रेवा [2] भी कहते थे जहाँ लाट देश की स्त्रियों के स्नान करने का उल्लेख मिलता है[3]। इस प्रकार ज्ञात होता है कि यादव राज्य और लाट देश इसकी घाटी में बसे हुए थे।

तापी—प्रसिद्ध नदी ताप्ती ही है। यह विन्ध्य पाद से निकलती है (वायु० पु० ४५। १०२)।

पयोष्णी—यह भी विन्ध्य पाद से निकल कर (वायु० ४५। १०२) विदर्भ (बरार) देश में बहती थी। कुछ विद्वानों ने इसकी पहचान पेन या पेन गंगा से की है, जो गोदावरी की सहायक नदी है[5]। डे महोदय इसकी

१—का० मी० ६८। ४-७

२—वही ६८। १०, ९९। २०

३—वही ६८। १०-११

४—महा, वनपर्व १२०। ३१-३२

५—जाग० ए० मेड०, ई०, पृ० ५०, नोट २

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समानता ताप्ती की सहायक पूर्णा नदी से करते हैं[1]। परन्तु पुराणों और महाभारत में पूर्णा और पयोष्णी अलग-अलग नदियाँ मानी गई हैं।

महाभारत के अनुसार यह पुण्य नदी वैदूर्य पर्वत और नर्मदा के निकट ही बहती थी[2]। वैदूर्य पर्वत, दक्षिण की बीडर पहाड़ी ही है, जो बरार के निकट स्थित था।

गोदावरी—दक्षिणापथ की प्रसिद्ध नदी है, जो सह्य पाद से निकलती है (वायु० पु० ४५। १०४) यह दक्षिण की अत्यन्त पवित्र नदी है जो गोदावरी ज़िले में बहती हुई बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसके ही तट पर अश्मक जनपद या प्रतिष्ठान देश स्थित था।

कावेरी

यह भी पवित्र और सुप्रसिद्ध नदी है जो अब भी अपने नाम और स्वरूप से प्रसिद्ध ही है। कांची और कावेरीपट्टन सदृश प्रसिद्ध नगर और कावेर तथा चोल देश इसके तट पर स्थित थे।

कावेरी तथा भीमरथी, कृष्णा, तुंगभद्रा, वञ्जुला (का०मी०, वञ्जुरा) और वेणा नामक नदियाँ सह्यपाद से निकलती हैं (वायु पु० ४५। १०४)।

कृष्णा वेणी—यह दक्षिण की प्रसिद्ध नदी कृष्णा ही है जिसमें वेणा या वेणी नदी के संगम से इसे कृष्णवेणा, कृष्णवेणी या कन्हवेणा के नाम दिये गये हैं। यह पश्चिमी घाट से निकल कर पूर्वी घाट को पार कर बंगाल की खाड़ी में मसलीपट्टम के समीप गिरती है।

वेणा—(या वेण्वा) कृष्णा की सहायक नदी है।

भैमरथी— या भीमरथी अथवा भीमा भी कृष्णा की प्रसिद्ध सहायक नदी है। पूना प्रान्त के उत्तर-पश्चिमी भाग में बहती हुई रायचूर ज़िले के उत्तरी भाग में कृष्णा से मिलती है।

तुङ्गभद्रा—यह भी कृष्णा की सुप्रसिद्ध सहायक नदी है।

वंजुरा—(या वञ्जुला) और मञ्जीरा एक ही हैं जो गोदावरी की सहायक नदी है।

१—जाग० डिक० पृ० १५६

२—महा० वन पर्व १२१। १६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ताम्रपर्णी

ताम्रपर्णी और उत्पलावती नामक नदियाँ मलय पर्वत से निकल कर दक्षिण समुद्र में गिरती हैं।

ताम्रपर्णी मलय पर्वत की घाटी में बहने वाली (मलयोपकण्ठ सरिता का० मी० ४५ । १८-२१, ८२ । ३) पाण्ड्य देश की प्रसिद्ध नदी है। यह (दक्षिण) समुद्र के निकट बहती थी (तम्मबण्णी णई संगदं समुद्दं अर्थात् ताम्रपणी नदी संगतं समुद्रं)[१]। यहां मोती-मुक्ता भी मिलते थे। साथ ही चन्दन, कपूर, कालीमिर्च और ताम्बूल की लताओं तथा सुगन्ध से सुरभित तंबवण्णि का जल अत्यन्त प्रसिद्ध था[२]।

उत्पलावती—यह टिनेवली प्रान्त में ताम्रपर्णी के समानान्तर बहती हुई दक्षिण समुद्र में गिरती है। डा० ला ने इसे प्राचीन भारत के नक्शे में इसी नाम से दिखाया है।[३]

रावण गंगा—इसकी पहचान नहीं हो सकती है। यह लंका की नदी है (गरुड़ पु० पू० ७० । १–४)।

दक्षिणापथ की उत्पन्न वस्तुएं (उत्पाद)

यहां का उत्पत्ति मलयोत्पत्ति हो बतायी गई है (तदुत्पत्तिमलयोत्पत्त्या व्याख्याता)[४]। ये चन्दन, कर्पूर, मणि-मुक्ता, एला, लवंग और कालीमिर्च आदि थीं।

१—कर्पूर मं० ११८
२—वही १।१७
३—हिस्ट० जाग० ए० इ०
४—का० मी० ९४ । ३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७—पश्चाद्देश

राजशेखर के अनुसार देवसभा के परे पश्चाद्देश स्थित है :

देवसभायाः परतः पश्चाद्देशः । का० मी० ९४ । ४

देवसभा या देवसभ अज्ञात है। इसे अपरान्त (कूर्म पु० ४७ । ३९) भी कहा गया है जिसमें सौराष्ट्र, शूद्र, आभीर, अर्बुद, मालका, मलपा (या मलया), पारियात्र प्रदेश, सौवीर, सिन्ध, हूण, माल्य, माद्र, राम, अन्ध्र और पारसीक जनपद स्थित बताये गये हैं (कूर्म पु० ४७ । ३९-४१)। इस प्रकार अपरान्त नामक देश-विभाग और अपरान्त जनपद (कोंकण) एक ही नहीं हैं जैसा कि माना गया है। इसे पाश्चात्य[१] (का० मी० ९६ । २४) भी कहा गया है। काव्य मीमांसा के अनुसार इस भूखण्ड में निम्नलिखित जनपद सम्मिलित थे—

तत्र देवसभ सुराष्ट्र दशेरक त्रवण भृगुकच्छ कच्छीयानर्त्तार्बुद-ब्राह्मणवाह यवन प्रभृतयो जनपदाः । का० मी० ९४।४-५

अर्थात् देवसभ, सुराष्ट्र, दशेरक, त्रवण, भृगुकच्छ, कच्छीय, आनर्त्त, अर्बुद, ब्राह्मणवाह, यवन ।

राजशेखर 'अवन्तीन्' को भी पश्चाद्देश के अर्थ में प्रयुक्त करते हुए उस विभाग में निम्नांकित जनपदों को रखते हैं—

सोऽवन्तीन्प्रत्युच्चाल यत्रावन्ती वैदिश सुराष्ट्र
मालवार्बुद भृगुकच्छादयो जनपदाः । का० मी० ९ । ३-४

अर्थात् अवन्ती, वैदिश, सुराष्ट्र, मालव, अर्बुद, भृगुकच्छ ।

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित जनपद भी पश्चिम देश में ही स्थित थे—

सिन्ध[२], लाट[३], मरुभुव[४], पारियात्रा[५], दशपुर[६], रोहीतक[७] ।

१—का० मी० ९७ । ५, ९९।४, १७, १८ ।
२—का० मी० २२ । ६ : सैन्धवं ; ८७ । १ : सिन्धुनाथं
३—वही ३४ । ७, ५१ । ५
४—वही ५१ । ६
५—वही ५१ । ७
६—वही ५१ । ७
७—वही १०५ । १९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देवसभ

राजशेखर देवसभा (संभवतः नगरी), देवसभ जनपद और देवसभ नामक पर्वत का उल्लेख पश्चाद्देश के अन्तर्गत करते हैं। देवसभा से ही पश्चिम देश भी प्रारम्भ होता था।

इसकी पहचान "देवास या उदयपुर प्रान्तों से की गई है जहां धेबर झील स्थित है। उदयपुर के निकट यहीं से सरस्वती और साबरमती नदियाँ निकलती हैं। कोटिल्य के अर्थशास्त्र में दैवसभेय चन्दन का उल्लेख है (अर्थशास्त्र-शामशास्त्री, पृ० ७९)। इससे देवसभा के चन्दन का बोध होता है"[1]।

महाभारत में देवसम नामक पर्वत का उल्लेख मिलता है जो गोकर्ण और अगस्त्य आश्रम के पास ही स्थित था[2]। संभवतः देवसम और देवसभ पर्वत एक ही थे। महाभारत में इसे दक्षिण में स्थित बताया गया है।

सुराष्ट्र (का० मी० ३४।९)

देवसभ पर्वत के बाद ही सुराष्ट्र का वर्णन मिलता है :

सुराष्ट्रेष्वपि वक्ष्यामि पुण्यान्यायतनानि च।
आश्रमान् सरितश्चैव सरांसि च नराधिप॥
वनपर्व ८८।१९

चमसोद्भेदनं विप्रास्तत्रापि कथयन्त्युत।
प्रभासं चोदधौ तीर्थं त्रिदशानां युधिष्ठिर॥
वही ८८।२०

तत्र पिण्डारकं नाम तापसाचरितं शिवम्।
उज्जयन्तश्च शिखरी क्षिप्रं सिद्धिकरो महान्॥
वही ८८।२१

पुण्ये गिरौ सुराष्ट्रेषु मृगपक्षि निषेविते।
उज्जयन्ते स्म तप्तांगो नाक पृष्ठे महीयते॥
वही ८८।२३

पुण्या द्वारावती तत्र यत्रासौ मधुसूदनः।
साक्षाद देवः पुराणोऽसौ स हि धर्मः सनातनः॥
वही ८८।२४

१—का० मी० पृ० २९४
२—महाभारत वन प० ८८।१७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार सौराष्ट्र प्रदेश पवित्र भूखण्ड था, जिसमें पुण्य स्थानों, आश्रमों, नदियों और चमसोद्भेद, प्रभास, उज्जयन्त पर्वत तथा कृष्णस्थली द्वारका के समान पवित्र तीर्थ स्थित थे।

पश्चिम में स्थित[१] सौराष्ट्र देश में ५५ हज़ार ग्राम सम्मिलित थे[२]। इसे प्राय: सिन्धु सौवीर के साथ ही रखा गया है[३] जो इन देशों की निकटता का परिचायक हैं। महाभारत में इसे अवन्ति (पश्चिमी मालवा) के साथ (सुराष्ट्रावन्तयस्तथा)[४] रखा गया है। यह काठियावाड़ ही है और आज भी सौराष्ट्र अपने प्राचीन नाम से प्रसिद्ध है।

स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ शिलालेख से ज्ञात होता है कि सुराष्ट्र देश प्रतीच्य (श्लोक ११–१३) का प्रसिद्ध देश था। शक महाक्षत्रप रुद्रदामन प्रथम की जूनागढ़ लिपि (सं० ७२ = १५० ई०) से ज्ञात होता है कि ऊर्जयत पर्वत से निकलने वाली सुवर्णसिकता और पलाशिनी नदियों के पानी को बाँध कर सुदर्शन सेतु अथवा सुदर्शन झील (तडाग) का निर्माण प्रजा और कृषि की उन्नति के लिये चन्द्रगुप्त मौर्य (३१७ ई० पू० के लगभग) के समय में किया गया था। अशोक के समय में इसमें से सिँचाई के लिये नहरें बनाई गईं। परन्तु रुद्रदामन के समय (लगभग १५० ई०) में यह बाँध टूट गया था। इसीलिये शक शासक ने प्रजा के कल्याण के लिये ही इसकी मरम्मत करवाई थी। महाराज स्कन्द गुप्त के समम में भी (लगभग ४५५—४५७ ई०) यह बाँध पुन: टूट गया और स्कन्दगुप्त ने भी फिर इसकी मरम्मत करवायी। इससे आनर्त्त और सुराष्ट्र (रुद्रदामन का जूनागढ़ लेख पं० १८) अर्थात् गुजरात और काठियावाड़ के प्रदेशों में सिँचाई होती थी।

१—मार्कण्डेय पु० ५७। ५२

कूर्म पु० ४७। ३९ : तथापरान्ता: सौराष्ट्रशूद्राभीरास्तथार्बुदा:।

२—स्कन्द पु० १। २। ३९। १४५ : पंचपंचाशतसहस्रग्रामा: सौराष्ट्रमुच्यते।

३—रामायण अयोध्या १०। ३७ :

द्राविडा: सिन्धु सौवीरा सौराष्ट्रा दक्षिणापथा:।

४—विराट पर्व १। १३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दशेरक

इसे उत्तरापथ का भी जनपद बताया गया है[1]। विष्णु धर्मोत्तर में इसका विशेष परिचय मिलता है :—

देशा दाशेरका नाम तेषां भागे तु पश्चिमे ।
अस्ति राजन्मरुर्देशः सर्व सत्त्व भयंकरः ॥

विष्णु धर्म० १ । १६२ । २

इस प्रकार स्पष्ट है कि दाशेरक देश एक विस्तृत भूखण्ड था जिसका पश्चिमी भाग मरु देश था। डा० सरकार ने दशेरक की समता मरु अथवा मारवाड़ से की है।[2]

दशेरक ऊँट को भी कहते हैं और इस देश की यही विशिष्टता भी थी। इसीलिये इस क्षेत्र (पश्चाद्देश) के उत्पाद में भी करभ (ऊँट) का उल्लेख किया गया है।

मरुभूमि

राजशेखर ने इसका उल्लेख पश्चिम की जनपद तालिका में नहीं दिया है। संभवतः राजशेखर भी इसे दशेरक देश का ही पर्याय मानते थे। इतना तो उन्होंने भी बताया है कि मरुभूमि विस्तृत थी (सकल मरुभुवः)[3]। दाशेरक देश के साथ ही मरुदेश (जो उसका पश्चिमी भाग था) का भी वर्णन किया गया है :—

देशा दाशेरका नाम तेषां भागे तु पश्चिमे ।
अस्ति राजन्मरुर्देशः सर्वसत्त्व भयंकरः ॥

विष्णु धर्म १ । १६२ । २

१—वामन पु० १३ । ४१

वृहत सं०, ५ । ६७ :

भृगुतनेयराहुगते दसेरकाः केकयाः स यौधेयाः ।

वही १४ । २६ :

केशधर चिपिट नासिक दासरेक वाटधानशरधानाः ।
तक्षशिलपुष्कलावतकैलावत कण्ठधानाश्च ॥

हर्ष चरित पृ० १३०

२—जाग० ए० मेड० इ०, पृ० २६

त्रिकाण्ड शेष २ । १ । ९ में भी इसे 'मरुदेशः' बताया गया है।

३—का० मी० ५१ । ६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुतप्त सिकता भूमियत्र दुष्ट महोरगा।
स्वल्पच्छाया समाकीर्णा मृतप्राणि समाकुला।।
वही १। १६२। ३

शमीखदिर फुल्लास करीराः पैलुभिः सह।
तत्र भीमा द्रुमगणाः कण्टकैरावृताः समम्।।
वही १। १६२। ४

चण्डप्राणिगणाकीर्णा तत्र भूमिस्तथा क्वचित।
अत्यन्त पाप विषमा निस्तृणा परुषोपला।।
वही १। १६२। ५

नाश्रयस्तत्र नाहारो ज्वलिताग्निसमे भृशम्।।
तथापि तत्र जीवन्ति जनाः कर्म निबन्धनात्।।
वही १। १६२। ६

नोदकं नोदकधरा राजंस्तत्र बलाहकाः।
कदाचिदपि दृश्यन्ते देशे निरयसन्निभे।।
वही १। १६२। ७

तत्र पक्षान्तरगतैस्तृषितैः शिशुभिः सह।
उत्क्रान्त जीविता राजन्दृश्यन्तेऽथ विहंगमाः।।
वही १। १६२। ८

उत्प्लुत्योत्प्लुत्य सहसा मृगाः सैकतमालयात्।
सैकतेष्वेव नश्यन्ति जले सैकतसेतुवत्।।
वही १। १६२। ९

तस्मिंस्तथाविधे देशे कश्चिद्दैववशाद्वणिक।
वनमातपविभ्रष्टः प्रविष्टस्तु परिभ्रमन्।।
वही १। १६२। १०

उस प्रकार के निर्जल और बालुकार्णव देश में जहां कांटे-करील के वृक्षों से लोगों का रहना मुश्किल था, मनुष्य-पशु और पक्षी भी किसी तरह जीते ही थे।

ऊपर लिखी हुई उत्पन्न वस्तुओं और वनस्पतियों को ही राजशेखर ने भी महत्व दिया है—

क्रीरपीलु गुग्गुल खर्जूर करभादीनामुत्पादः।
का० मी० पृ० ९४। ७–८

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्रवण—पश्चिम देश में स्थित बताया गया है। यह भी अपभ्रंश-भाषा प्रधान देश था जिसके विषय में निश्चित ज्ञान नहीं है। उनकी पहचान राजपूताना की तवुरी जाति से की जा सकती है जो ऊँटों के साथ सम्बद्ध थे (टॉड-राजस्थान २, पृ० २६१)।

लाट—(का० मी० ३४ । ७; कर्पूर मं० पृ० १७६) लाट देश की स्त्रियों को रेवा में नहाते हुए (का० मी० ६८ । ११) बताया गया है। यह पश्चिमी भारत का प्रसिद्ध जनपद है। कुमार गुप्त और बन्धुबर्मन के मन्डसोर लेख में बताया गया है कि यहां के तंतुवायों का शिल्प विश्व-विश्रुत था और लाट विषय सुन्दर तथा रमणीय मन्दिरों, सभा, विहारों और पर्वतों तथा वृक्षों से भरा हुआ था—

कुसुमभरानत तरुवर देवकुल सभा विहार रमणीयात् ।
लाट विषयान्नगावृत शैलाज्जगति प्रथित शिल्पाः ॥

मण्ड सोर प्रशस्ति श्लोक ४

यह दक्षिणी गुजरात ही था जो आज भी अपने वस्त्र उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। यहां की स्त्रियां भी प्रसिद्ध थीं (का० मी० १०९ । ५, ११० । २२) साथ ही यहां की प्राकृत भी प्रसिद्ध[१] थी।

भृगुकच्छ

पुराणों में अधिकांशतः इसे अन्तर्नर्मदा खण्ड में स्थित बताया गया है।[२] राजशेखर के पंचस्थल विभाग में यह पश्चिम देश में था। यह नर्मदा-सागर संगम पर बसा था। प्रसिद्ध बन्दरगाह भी था। पेरिप्लस के लेखक ने इसे बेरीगज़ा बताया है जो आधुनिक भड़ोच है।

कच्छीय—यह प्रसिद्ध कच्छ देश ही है। वायु पु० (४५ । १३१) में भी कच्छीय नाम मिलता है जहां इसे अर्न्तनर्मदा या उत्तर नर्मदा खण्ड में स्थित बताया गया है।

आनर्त्त—इसे भी अन्तर्नर्मदा या उत्तर—नर्मदा खण्ड में स्थित बताया गया है (वायु पु० ४५ । १३१)। काव्य मीमांसा में यह पश्चिम भारत का देश कहा गया है। आनर्त्त[३] नामक राजा के नाम पर ही यह देश भी इस नाम से प्रसिद्ध हुआ। आनर्त्तपुर, कुशस्थली या द्वारका इसकी राजधानी थी। इसकी पहचान उत्तरी काठियावाड़ से की गई है।

१—का० मी० ५१ । ५ : प्राकृते लाटदेश्याः ।
२—मत्स्य पु० ११४ । ५०
वायु पु० ४५ । १३० पाठ-भानुकच्छा है ।
मार्कण्डेय पु० ५७ । ५१ पाठ भीरु कच्छा है ।
३—स्कन्द पु० ३—३—१८—२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अर्बुद

इसे भी अन्तर्नर्मदा या उत्तर नर्मदा खण्ड में स्थित बताया गया है (वायु० पु० ४५ । १३१) । परन्तु काव्य मीमांसा में इसे पश्चाद्देश में स्थित बताया गया है । यह देश अर्बुद (आबू, राजस्थान) के आस-पास स्थित था ।

ब्राह्मणवाह

यह प्रसिद्ध प्राचीन देश था । वम्भणवाहक (स्कन्द पु० १-२-३९-१६१) या ब्रह्मणवाह में ३½ लाख ग्राम सम्मिलित थे[1] । यह सिन्ध के हैदराबाद प्रान्त में बसा हुआ था और बहमनाबाद भी कहलाता है ।

यवन

यह सत्य है कि यवन यूनानियों[2] के लिये प्रयुक्त होता रहा । परन्तु राजशेखर कालीन भारतवर्ष में यवन जनपद सिन्ध में प्रतिष्ठित अरब सत्ता का परिचायक है जिसकी पुष्टि ब्राह्मणवाह और यवन जनपदों के एक ही साथ उल्लेख से होती है[3] । गरुड़ और विष्णुधर्मोत्तर पुराणों से भी ज्ञात होता कि यह नास्तिक और म्लेच्छ सिन्ध के ही यवन (अरब) थे—

सैन्धवा म्लेच्छा नास्तिक्या यवनास्तथा ।।

विष्णुधर्मोत्तर १ । ९ । ७

गरुड़ पुराण पू० ५५ । १५

दोनों ही पुराणों में एक ही पाठ है और दोनों में इन्हें पश्चिम में स्थित बताया गया है ।

स्कन्द पुराण के अनुसार भी ४० हजार ग्राम वाला यवन राष्ट्र[4], सैन्धव तथा 'नास्तिक्य म्लेच्छ यवन' अर्थात् सिन्ध में अरबों की सत्ता थी ।

विष्णुधर्मोत्तर में भी यवनों को पश्चिम (१ । ९ । ७) और उत्तरापथ

१—जाग० ए० मेड० इ०, पृ० २०२

२—विष्णु धर्मोतर पु० ३ । २७ । २१ :

शकाश्च यवनाश्चैव पह्लवा बाल्हिकाश्च ये ।

वही ३ । २७ । २२ :

प्रायेण गौरा: कर्त्तव्या: उत्तरापथ सम्भवा: ।।

३—का० मी० ९४ । ५

४—स्कन्द पु०, १ । २ । ३९ । १६१ :

चत्वारिंशत् सहस्राणि ग्रामाणां यावन:स्मृत: ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(३ । २७ । २१) से सम्बद्ध किया गया है। राजशेखर भी इन दो यवन सत्ताओं को स्वीकार करते हुए पाश्चात्य यवनों का रंग पाण्डु बताते हैं—

किं चेदानी यवन तरुणी पाण्डुगण्डस्थलीभ्यः ।।

का० मी० ९७ । ७

परन्तु बाल्हीकों का रंग गौर बताया गया हैं (का० मी० ९७ । १०)। और ये उदीच्य के निवासी थे जहां गौर वर्णीय यवन, शक-पह्लवों के साथ बसे थे (विष्णु धर्म० ३ । २७ । २१)।

सिन्धु

राजगुरु-कवि राजशेखर के निम्नलिखित वचनों में सिन्धुशासक का कितना सुन्दर परिचय दिया गया है। मिहिरभोज और महेन्द्रपाल के समय सिन्ध के अरबों का पराभव हुआ था और राष्ट्रकूटों की शक्ति भी कुंठित की गई थी। सौराष्ट्र पर प्रतिहारों का अधिकार था। कवि कहता है कि यादव-महोदधि (राष्ट्रकूटों की शक्ति और अरब सागर) को ही सिन्धुनाथ (सिन्धु के शासक) पर उलट कर हाहाकार करती हुई तथा भयभीत कराने वाली सिन्धु शक्ति को उसी प्रकार उखाड़ फेंका जाय जैसे हनुमान जी ने द्रोणाचल को उखाड़ लिया था—

आपातमारुत विलोडित सिन्धुनाथो ।
हात्कार भीत परिवर्तित मत्स्यचिन्हाम् ।।
उल्लङ्घ्य यादवमहोदधिभीमवेलां ।
द्रोणाचलं पवनसूनुरिवोद्धरामि ।।

का० मी० ८७ । १–४

कितनी चातुरी से सिन्धु का देश-सूचियों में उल्लेख न करके उत्तरापथ की उत्पाद-वस्तुओं में सैन्धव का उल्लेख घोड़े के अर्थ में किया है। (सैन्धव तुरंगाणामुत्पादः)।[1] सिन्ध के घोड़े प्रसिद्ध थे।[2] इसीलिये सैन्धव भी घोड़े का पर्याय बन गया।

१—का० मी० ९४ । १४

२—स्कन्द पु०२ । २ । ४९ । ३० : सिन्धुदेशोद्भवानपि ।

वही २ । ८ । ५ । २६ : सिन्धुजानां तुरंगाणां ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सौवीर

सौवीर प्रसिद्ध प्राचीन जनपद है जिसका सिन्ध के साथ घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। विभिन्न युगों में सिन्ध और सौवीर एक ही साम्राज्य के अंग रहे हैं।[१] राजशेखर ने इसका जनपदों की तालिका में उल्लेख नहीं किया है। संभवतः राजशेखर के युग में इस पर अरब आक्रान्ताओं का अधिकार हो चुका था और यह यवन राष्ट्र में सम्मिलित था। कवि सौवीर का उल्लेख उत्तरापथ की उत्पाद-सूची में करता है।[२] इसकी पहचान निचले सिन्ध से की गई है जिसकी राजधानी रोरुव या रोरुक (वर्तमान रोड़ी) थी।[३]

मालवा— राजशेखर ने मालबा के कई विभागों का उल्लेख किया है। अवन्ती वैदिश·········मालव·········का० मी० ९। ३

हर्ष के युग में मालवा एक प्रसिद्ध देश था।[४] मालव या मालवा पूर्व मध्यकाल का प्रसिद्ध प्रदेश था। दशकुमार चरित मालव देश[५] और मालवराज[६] का विशेष उल्लेख करता है। इसके अनुसार ही उज्जयिनी मालवा की राजधानी थी।[७]

भागवत पुराण के अनुसार मालव के निवासी और गुप्तोत्तर युग के शासक धर्मच्युत कहे गये हैं—

सौराष्ट्रावन्त्याभीराश्च शूरा अर्बुद मालवाः।
व्रात्या द्विजा भविष्यन्ति शूद्र प्राया जनाधिपाः॥

भागवत १२। १। ३८

स्कन्द पुराण के अनुसार मल की बाहुल्यता के कारण ही इस भूखण्ड को मालवा कहा गया है[८]। वायु पु० (४५। १३२) इसे विन्ध्य पर्वत पर स्थित देश बताता है।

१—भागवत पुराण ५। १०। १
२—का० मी० ९४। १४
३—पाणिनि, पृ० ६४
४—हर्ष चरित, पृ० २२५, २२७
५—द० कु० च०, पृ० ९
६—वही, पृ० ५, ६, ९, १४, ४७ इत्यादि
७—वही, पृ० ९
८—स्कन्द पु०, ५। १। ११। १२ :
मलस्य बहु सम्भूत्या मालवेति प्रकीर्तिता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मालवा के दो विभाग पूर्व मालवा और पश्चिम मालवा प्रसिद्ध ही हैं जिन्हें क्रमश: आकर और अवन्ति माना गया था। काव्य मीमांसा में आकर के स्थान पर वैदिश का उल्लेख मिलता है।

शक्ति संगमतंत्र के अनुसार मालवा का धनधान्य पूर्ण देश अवन्ती के पूर्व ओर गोदावरी के उत्तर में स्थित था—

अवन्तीत: पूर्व भागे गोदावर्यास्तथोत्तरे।
मालवाख्यो महादेशो धनधान्य परायण: ॥

शक्ति सं० ३ । ७ । २१

वैदिश

यह विदिशा या पूर्व-मालवा का परिचायक है। विदिशा प्रसिद्ध नगर था। इस समय भी वेत्रवती (बेतवा) के तट पर मध्य प्रदेश का नगर है जो अपने प्राचीन नाम (विदिशा) से ही प्रसिद्ध है। इसके निकट ही हेलिओडोरस का गरुड़ध्वज और गुप्तकालीन शिल्प से अभिमंडित उदैगिरि की गुफ़ायें हैं।

दशकुमार चरित में भी (पृ० ६०) इसका उल्लेख मिलता है (वैदेशिक वणिक)।

अवन्ती—प्रसिद्ध और विस्तृत भूखण्ड था जैसा कि काव्य मीमांसा से ज्ञात होता है (का० मी० ९ । ३)। नव साहसांक चरित के अनुसार अवन्ति, अवन्तिविषय (९ । १२, २२) और मालव (९ । ४५) प्राय: एक ही देश हो गये थे जिस पर परमारों का राज्य था। काव्य मीमांसा भी उज्जयिनी के प्रसिद्ध तथा संस्कृत-भाषा के प्रेमी साहसाङ्क नामक राजा का उल्लेख करता है :—

श्रूयते चोज्जयिन्यां साहसाङ्को नाम राजा;
तेन च संस्कृत भाषात्मकमन्त:पुर एवेति समानं पूर्वेण।

का० मी० ५० । १९-२०

आवन्त्यों का सम्बन्ध पैशाची भाषा से भी बताया गया है :—

आवन्त्या: पारियात्रा: सह दशपुरजैर्भूतभाषां भजन्ते ॥

का० मी० ५१ । ७

दशपुर

ऊपर दिये हुए उद्धरण (का० मी० ५१ । ७) के अनुसार अवन्ति और पारियात्र प्रदेशों की भाँति दशपुर भी एक विशिष्ट भूखण्ड था जिसका सम्बन्ध भूत भाषा (पैशाची) से था।

कुमारगुप्त (I) और बन्धुवर्मन के मण्डसोर लेख में दशपुर का बहुत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ही सुन्दर वर्णन दिया गया हैं। यहां प्रासादों और पार्कों के अतिरिक्त एक सूर्य मन्दिर भी था[१]। इसकी पहचान मण्डसोर से की गई है[२]।

मार्कण्डेय पुराण (५८ । २२) में इसे (आवन्तयो दासपूरास्तथैव) कूर्म की दक्षिण कुक्षि में स्थित बताया गया है।

पारियात्र[३]

पुराणों में भी इसे एक जनपद माना गया है जो पारियात्र पर्वत पर स्थित था। यह पश्चिम देश का जनपद था[४]।

रोहीतक[५]

आधुनिक रोहतक और उसके आस-पास का क्षेत्र ही रोहतक देश कहलाता था। नकुल ने अपनी पश्चिमी दिग्विजय में इन्द्रप्रस्थ से पश्चिम दिशा में जाकर जीता था[६]।

पर्वत

पश्चिम देश में निम्नलिखित पर्वत स्थित थे :—

गोवर्धन गिरिनगर देवसभ माल्यशिखर अर्बुदादयश्च पर्वताः।

का० मी० ९४ । ६

गोवर्धन—संभवतः यह नासिक का प्रसिद्ध पर्वत है, यद्यपि नासिक्य को दक्षिणापथ में स्थित बताया है[७]। इसकी पहचान मथुरा के गोवर्धन से नहीं हो सकती।

गिरिनगर—यह काठियावाड़ का प्रसिद्ध और पवित्र पर्वत गिरनार ही है।

देवसभ—अज्ञात है, पीछे देखिये संभवतः महाभारत का देवसम ही है।

१—हिस्ट० इन्स० पृ० ८४ । ९०

२—ला हिस्ट० जाग० पृ० २८०-८१

३—का० मी० ५१ । ७

४—कूर्म पु० ४७ । ४०

५—का० मी० १०५ । १९

६—सभापर्व ३२ । ४

७—हिस्ट० इन्स० पृ० ५०-५१—गौतमी पुत्र शातकर्णी का नासिक १८वें राज्य वर्ष का लेख।
वही गौतमीपुत्रशातकर्णी २४वें राज्य वर्ष का लेख।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

माल्यशिखर—रामायण में माल्यवान् नामक पर्वत को किष्किधा के समीप स्थित बताया गया है[1]। यह गोकर्ण के निकट ही स्थित था[2]। परन्तु राजशेखर ने इसे पश्चिम में स्थित बताया है।

अर्बुद—प्रसिद्ध आबू की पहाड़ियाँ हैं।

नदियाँ

पश्चाद्देश की नदियाँ निम्नलिखित थीं :—

सरस्वती श्वभ्रवती वार्तघ्नी मही हिडिम्बाद्यानद्यः।

का० मी० ९४। ६-७

सरस्वती—प्राचीन भारत की यह परम पवित्र नदी थी। पुराणों में इसकी महिमा का विशद वर्णन किया गया है। हिमालय से निकल कर केदार होती हुई पश्चिम की ओर छिपती और प्रकट होती हुई बहती है। श्रीकण्ठ देश (स्थानेश्वर या थानेश्वर, कर्नाल प्रान्त), कुरुक्षेत्र, विराटनगर (बैराट, जयपुर प्रान्त), खर्जुरीवन, वटवन, उदुम्बर वन आदि क्षेत्रों को सींचती हुई पश्चिम सागर में गिरती है (स्कन्द पु० ७। १। ३५। २५-५२)

राजशेखर ने सरस्वती नामक दो नदियों को क्रमशः पश्चिम देश और उत्तरापथ में रखा है। उत्तरापथ की सरस्वती पंजाब की पाँच नदियों, सिन्ध और काबुल नदी के साथ उल्लिखित की गई है। उत्तरापथ में बाल्हीक, वोक्काण, वाणायुज आदि देश भी रखे गये हैं। अतः उत्तरापथ की सरस्वती वैदिक युग की सरस्वती (हरहुती) मालूम पड़ती है। पश्चिम देश की सरस्वती, जिसे साभ्रमती और मही नदी के साथ रखा गया है, राजपूताना और गुजरात की प्राची सरस्वती प्रतीत होती है। यह भी संभव है कि कुरुक्षेत्र की सरस्वती को गंगा, यमुना आदि के साथ उत्तरापथ में रखा गया हो और पुष्कर के आगे राजपूताना तथा पश्चिमी भारत की सरस्वती को पाश्चाद्देश में प्रवाहित होते हुए बताया गया है।

श्वभ्रवती—यह वर्तमान साबरमती नदी है जो उत्तरी गुजरात में बहती हुई खम्भात की खाड़ी में गिरती है।

१—किष्किधा का० २८। १

२—सुन्दर कां० ३५। ८१-८२ :

माल्यवान् नाम वैदेहि गिरीणामुत्तमो गिरिः॥ ८१
ततो गच्छति गोकर्णं पर्वतं केसरी हरिः॥ ८२ (१)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वार्तघ्नी—इसकी पहचान साभ्रमती या साबरमती की वारत्क नामक सहायक नदी से की गई है। दोनों नदियाँ केरा के निकट मिलती हैं।

मही—यह मालवा से निकल कर खम्भात की खाड़ी में गिरती है और आज भी इसी नाम से प्रसिद्ध है। इसका मुहाना महीसागर[1] (महीसागर संगम) अत्यन्त पवित्र तीर्थ था।

हिडिम्बा—महाभारत (आदि पर्व १२। ९३) में हिडिम्ब नामक राक्षस से सम्बद्ध हिडिम्ब वन का उल्लेख मिलता है। हिडिम्बा उस राक्षस की बहन थी जिसने भीम के साथ विवाह किया था।

इसकी पहचान यमुना की सहायक चर्मणावती (चम्बल) से की गई है जो इटावा के एकचक्रा नामक नगर के पास यमुना से मिलती है और इसके ही निकट हिडिम्ब वन था।

उत्पाद

इस खण्ड में निम्नलिखित वस्तुयेँ उत्पन्न होती थीं :—

करीर पीलु गुग्गुल खर्जूर करभादीनामुत्पादः।

का० मी० ९४। ७-८

अर्थात् करील (एक प्रकार की कटीली झाड़), हाथी (अथवा पीलु वृक्ष) खजूर, ऊँट आदि।

१—स्कन्द पु० १। २। ३। २६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८—उत्तरापथ (का० मी० ३४ । १३)

भारत के पंचस्थल विभागों में उत्तरापथ भी एक प्रथित देश-विभाग था जिसे पृथूदक (पिहोआ, कर्नाल प्रान्त) से उस ओर उत्तर पश्चिम का भाग बताया गया है :

पृथूदकात्परत उत्तरापथः । का० मी० ९४ । ९ महाभारत के अनुसार उत्तरापथ में उत्पन्न होने वाले योन, कम्बोज, गान्धार, किरात और बर्बर देश के लोग पापकर्मी थे (शान्ति पर्व २०७ । ४३) ।

इसे उदीच्य (का० मी० २२ । १६) भी कहा गया है ।

मध्य देश के उत्तर-पश्चिम में विस्तृत भूखंड ही उत्तरापथ या उदीच्य कहलाता था । अमरकोश के अनुसार शरावती नदी के उत्तर पश्चिम का भू-भाग उदीच्य कहलाता था[1] । "पाणिनि ने देश के उदीच्य और प्राच्य इन दो भागों का उल्लेख किया है । इन दोनों के बीच भरत जनपद था जहाँ इस समय कुरुक्षेत्र है ।......पतंजलि ने लिखा है कि वस्तुतः प्राच्य देश भरत जनपद के पूर्व प्रारंभ होता था ।......पाणिनि ने शरावती नदी का उल्लेख (शरादीनां च ६ । ३ । १२०) किया है । नागेश ने एक प्राचीन श्लोक का प्रमाण देते हुए लिखा है कि शरावती नदी प्राच्य और उदीच्य देशों के बीच की सीमा थी । अमरकोश से ज्ञात होता है कि गुप्त काल में भी शरावती प्राच्य और उदीच्य के बीच की विभाजक रेखा मानी जाती थी । शरावती के दक्षिणपूर्व का देश प्राच्य और पश्चिमोत्तर का उदीच्य कहलाता था ।* शरावती नदी की निश्चित

१—अमरकोश २ । १ । ८ : उदीच्यः पश्चिमोत्तरः । (पूना संस्करण)

"प्रागुदंची विभजते हंसः क्षीरोदके यथा ।
विदुषां शब्दसिद्ध्यर्थं सा नः पातु शरावती ॥

अर्थात् व्याकरण शास्त्र में शब्दों के रूपों का भेद बताने के लिये प्राच्य और उदीच्य का विचार शरावती नदी से किया जाता था ।"

पाणिनि भारत नो० १, पृ० ४२

*लोकोऽयं भारतं वर्षं शरावत्यास्तु योऽवधेः ।
देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्यः उदीच्यः पश्चिमोत्तरः ॥

अमरकोष २ । १ । ६–७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहचान नहीं हुई है। संभवतः अम्बाला ज़िले में बहने वाली घग्घर नदी शरावती कही जाती थी और वही प्राची और उदीची की सीमाओं को अलग करती थी।............... गंधार और वाहीक दोनों मिलकर उदीच्य कहलाते थे। सिंधु से शतद्रु तक का प्रदेश वाहीक था जिसके अन्तर्गत मद्र, उशीनर और त्रिगर्त ये तीन मुख्य भाग थे। तक्षशिला से काबुल तक का प्रदेश गंधार कहलाता था।"[1]

जनपद

काव्य मीमांसा में निम्नलिखित जनपदों को उत्तरापथ में स्थित बताया गया है :—

पृथूद्कात्परतः उत्तरापथः। यत्र शक केकय वोक्काण वाणायुज काम्बोज वह्लीक बह्लव लिम्पाक कुलूत कीर तङ्गण तुषार तुरुष्क बर्बर हरहूरव हूहुक सहुड हंसमार्ग रमठ करकण्ठ प्रभृतयो जनपदाः। का० मी० ९४। ९-११

अर्थात् उत्तरापथ में निम्नलिखित जनपद थे :—

शक, केकय, वोक्काण, हूण, वाणायुज, काम्बोज, बाह्लीक, वह्लव, लिम्पाक, कुलूत, कीर, तङ्गण, तुषार, तुरुष्क, बर्बर, हरहूरव, हूहुक, सहुड, हंसमार्ग, रमठ और करकण्ठ।

इस जनपद तालिका के अतिरिक्त कपिश (का० मी० १२।५; १०४।८), गन्धार अथवा गान्धार (का० मी० २८।३), काश्मीर (का० मी० ३४।११), म्लेच्छ (का० मी० ५७।१८), टक्क (का० मी० ५१।६), मातंग (का० मी० ९१।१३; ९९।२२) और तरतार (का० मी० १०१।२४) भी उत्तरापथ में स्थित थे। उत्तरापथ की जनपद-तालिका तत्कालीन इतिहास के लिये महत्वपूर्ण है। उत्तरी पश्चिमी द्वार से ही तुरुष्कों और तरतारों के आक्रमण हो रहे थे जिन्हें म्लेच्छ-मातंग[2] भी कहा गया है।

अशोक की मृत्यु और बैक्ट्रिया तथा पार्थिया की स्वतन्त्रता से भारतीय इतिहास पर बहुत ही महत्वपूर्ण प्रभाव पड़े। देश-द्वार अरक्षित था, राष्ट्र शक्ति विच्छिन्न थी और शक, यवन, पह्लव, कुषाण, हूण, बर्बर, तुरुष्क, तुषार, ततार तथार म्लेच्छ—मातंग इस देश की स्वर्ण-सम्पदा और धर्म-कला पर भूखे भेड़ियों की तरह टूट पड़े। आँधी, झंझा और उत्पातों के बाद गुप्त युग में फ़िर

१—पाणिनि भारत पृ० ४२

२—पृ० रा० विजय १। ४९-५०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक ही शक्ति की स्थापना हुई जिसने सिन्धु के सप्त मुखों (बर्बर देश) को पार कर बाह्लीक तक विजयध्वज फहराया[1]। परन्तु कुछ ही समय बाद हूणों ने भी देश को रौंदना शुरू किया। परन्तु उनको भी निर्विष कर दिया गया :

नरपति भुजगानां मानदर्पोत्फणानां।
प्रतिकृति गरुडाज्ञां निर्विषी चावकर्त्ता ॥
श्लोक २, स्कन्दगुप्त का जूनागढ़ लेख

....

अपि जितमेव तेन प्रथयन्ति यशांसि यस्य रिपवोऽपि आमूल-भग्नदर्पा निर्वचना म्लेच्छदेशेषु ॥ वही श्लोक ४

हूणों के बाद ही ताजिकों के भीषण आक्रमण प्रारम्भ हुए और उन्हें भी शान्त कर दिया गया :—

अशेष लोक संताप कलापदः ताजिकानलः।
असिधारा जलेन प्रसभं शमितः ॥
कारपस इ० इ० ४, पृ० १०६

पुन: म्लेच्छ-तुरुष्कों के आक्रमण प्रारम्भ हुए जिनसे भी मिहिर भोज आदिबराह ने देश की रक्षा की और यही समय था जब राजशेखर तत्कालीन शासकों के हृदयों में राष्ट्रीय चेतना भरते हुए उनको देश व्यवस्था से परिचित करा रहे थे।

शक

पुराणों के द्वीपाख्यान और अन्य ग्रन्थों में भी शक द्वीप का प्रचुर उल्लेख मिलता है। भविष्य पुराण (अ० १४९) से ज्ञात होता है कि "जम्बू द्वीप अर्थात् भारतवर्ष से सटा हुआ देश ही शक द्वीप है (इण्डियन एन्टीकिरी १९०८, पृ० २४)। शक द्वीप का विवरण देखने से साफ़ मालूम होता है कि किसी समय प्रचीन ईरान या फारस तक का प्रदेश शक द्वीप के अन्तर्गत माना जाता था[2]।"

शकों की निवास भूमि वक्षु नदी के तट पर थी। यूचियों के धक्कों से हट कर शकों ने भारतवर्ष में प्रवेश किया। सिन्धु नदी का डेल्टा सीथिया या शक स्थान कहलाता था। आगे चल कर उन्होंने कई क्षेत्रों में अपने राज्य

१—चन्द्र का मेहरौली लेख
२—बैनर्जी, प्राचीन मुद्रा पृ० ७४-७५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थापित किये। यहां पर शक जनपद से सीथिया या शक स्थान का ही बोध होता है। लेकिन इसका महत्व इस युग में समाप्त हो चुका था। यहां पर अरब विजेताओं ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया था।

यवन

उदीच्य के यवन प्राचीन यूनानी लोग थे जिनका रंग पाण्डु था (का० मी० ९७। ७)। ये उत्तरापथ में बसे हुए थे।

केकय

अत्यन्त प्राचीन जनपद है[1] जिसे उदीच्य में स्थित बताया गया है। शिबि के केकय नामक पुत्र से ही इस देश की यह संज्ञा प्रसिद्ध हुई।[2] यह देश गान्धार (या गन्धर्व) राज्य के निकट ही[3] स्थित था। डा० अग्रवाल के अनुसार "केकय जनपद वर्तमान झेलम, शाहपुर और गुजरात प्रदेश का पुराना नाम था, जिसमें इस समय खिउड़ा की नमक की पहाड़ी है[4]।"

वोक्काण

दिव्यावदान में भी इसे उत्तरापथ का जनपद बताया गया है जहां महाकात्यायन की माता उत्पन्न हुई थी[5]। यह अफगानिस्तान के पहाड़ी प्रदेश में स्थित वखान ही है।

हूण—हर्ष चरित के अनुसार हूण उत्तरापथ में पश्चिमी पंजाब के आस-पास रहते थे[6]। शक्ति संगम तंत्र के अनुसार यह देश काम गिरि के दक्षिण और मरुदेश के उत्तर में स्थित था जहां शूर (वीर) लोग अधिक रहते थे—

१—मार्कण्डेय पु०, ५७। ३७, ५८। ४२
भागवत पु०, ९। २४। २८, १०। ८६। २०
वायु पु०, ४५। ११६
२—मत्स्य पु०, ४८। २०
३—रामायण, उत्तर का०, अ० १००, १०१
४—पाणिनिभारत, पृ० ६७
५—दिव्यावादन ४८८। २६-२७
६—जाग० ए० मेड-इण्डि०, पृ० २७ नोट २

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

कामगिरेर्दक्षभागे मरुदेशात्तथोत्तरे ।
हूण देशः समाख्यातः शूरास्तत्र वसन्तिहि ।।[1]

शक्ति संगम तंत्र ४४

वाणायुज

प्रायः इसकी पहचान अरब से की गई है। परन्तु यह अफगानिस्तान का वाना ही मालुम पड़ता है।

काम्बोज

उत्तरापथ का अत्यन्त प्रसिद्ध देश है। इसकी पहचान और स्थिति के विषय में बहुत ही मतभेद है। "कंबोज की ठीक पहचान भारत के उत्तर पश्चिमी भूगोल के लिये महत्वपूर्ण है। गंधार, कपिश, बाल्हीक और कंबोज—इन चार जनपदों का चौगड्डा था। मध्य एशिया और अफगानिस्तान के नक्शे में इनकी भौगोलिक स्थिति स्पष्ट हो जाती है।......हिंदुकुश के उत्तर पूर्व में कंबोज, उत्तर पच्छिम में बाल्हीक, दक्षिण-पूर्व में गंधार और दक्षिण-पश्चिम में कपिश था। आधुनिक पामीर और बदख्शां का सम्मिलित प्राचीन नाम कंबोज जनपद था और उसी से सटा हुआ दरवाज़ का इलाका था, जिसकी पहचान डा० मोतीचंद्र ने द्वारका से की है। इसे पेतवत्थु (परमत्थदीपनी टीका, पाली टेक्ट सोसाइटी भाग ३, पृ० ११३) के आधार पर डा० राइस डेविड्स ने कंबोज की राजधानी मान लिया था, जो सप्रमाण नहीं है।............... प्रो० लासें ने कांबोज की पहचान काशगर के दक्षिणी प्रदेश से ठीक ही की थी किन्तु उस पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया।"[2] प्रो० जयचन्द्र विद्यालंकार के अनुसार गान्धार-कश्मीर के उत्तर आधुनिक पामीरों का पठार तथा उसके पच्छिम बदख्शां प्रदेश कम्बोज महाजन-पद कहलाता था; उसकी पूरबी सीमा सीतानदी और पच्छिम में बाल्हीक (बलख) प्रदेश था।"[3] डा० रायचौधरी का मत है कि "महाभारत के अनुसार कम्बोज का सम्बन्ध राजपुर से हे (कर्ण राजपुरगत्वा काम्बोजा निर्जितास्वया)। काम्बोजों का गान्धार के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होने से यह युवनच्वांग द्वारा उल्लिखित राजपुर-प्रदेश ही है जो पूंछ के दक्षिण पूर्व में स्थित था। काम्बोज की पश्चिमी सीमायें काफिरिस्तान तक फैलीं थीं। एलफिन्स्टन ने उसी क्षेत्र में काम्बुजी, कमोज और कमोज़ नामक जाति को

१—वही, पृ० ७८
२—पाणिनि भारत, पृ० ६१
३—भारतीय इतिहास की रूप रेखा, पृ० ३६६

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

बसा हुआ पाया जो काम्बोज जाति ही थी।"[1] डा० डी० सी० सरकार के अनुसार काम्बोज अशोक के साम्राज्य में सम्मिलित था और यह कन्दहार के क्षेत्र में बसा था।[2] परन्तु डा० अग्रवाल इस मत को नहीं मानते हैं और अग्रवाल के अनुसार यह पामीर के आस-पास ही स्थित था।[3] पुन: डा० सरकार डा० अग्रवाल के मत का खण्डन करते हुए कंबोज को पामीर से दूर गान्धार के निकट ही स्थित मानते हैं।[4] श्री के० डी० सेथना का कथन है कि ऑक्सस नदी के दक्षिणी-भूभाग को टॉलमी ने तैम्बीजोई का नाम दिया है जो लेवी के अनुसार कम्बोज का यूनानी स्वरूप है।[5] सेथना भी कंबोज को गान्धार के ही निकट स्थित बताते हैं।[6] डा० अग्रवाल पुन: अपने मत की पुष्टि उस क्षेत्र-अफगानिस्तान और इसके आसपास-की भौगोलिक स्थितियों का विशद विवेचन करते हुए कंबोजों को पामीर-क्षेत्र में बसा हुआ मानते हैं।[7] यही अधिक उपयुक्त है क्योंकि वृहत्सं-हिता (१० । ५७) में इसे काश्मीर के साथ (काश्मीर काम्बोजौ) जोड़ा गया है। वहीं अन्यत्र (१३ । ९) में शक, यवन, हारात (हेरात) के साथ रखा गया है।

वाल्हीक—बाल्हीक (का० मी० ८ । १८)

यह देश सिन्धु नदी के उस पार स्थित था, जिसकी बलख या बैक्ट्रिया से समता की गई है। प्राचीन भारतीत साहित्य और अभिलेखों का यह प्रसिद्ध जनपद है। स्कन्द पुराण के अनुसार भारतवर्ष के ७२ प्रदेशों में यह भी एक देश था जिसमें ४ लाख ग्राम सम्मिलित थे[8]। काव्यमीमांसा(९७।१०)और विष्णु धर्मोत्तर (३ । २७ । २१) के अनुसार यहां के स्त्री-पुरुषों का रंग गौर होता था। डा० अग्रवाल के अनुसार कम्बोज के पश्चिम, वंक्षु (ऑक्सस) के दक्षिण और हिन्दूकुश के उत्तर पश्चिम का प्रदेश बाल्हीक जनपद था[9]।

१—पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ एन्शेन्ट इण्डिया, पृ० १४८–१४९
२—पुराणम्, वाल्यूम ५, भाग २, जूलाई १९६३, पृ० २५१–५७
३—वही, पृ० ३५५–३५९
४—वही, वाल्यूम ६, नं० १, जनवरी १९६४, पृ० २१५–२२०
५—वही पृ० २०७–२०८
६—वही पृ० २१२
७—वही पृ० २२१–२२९
८—स्कन्द पु० १ । २ । ३९ । १५५ :
ग्रामाणां च चतुर्लक्षो बाल्हिक: परिकीर्त्यते ।।
९—पाणिनि, पृ० ६२

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वह्लव या बाह्लवेय (का० मी० ८ । १८)

इसकी पहचान "वल्लपुर (बल्लवर) नामक पर्वतीय राज्य से की गई है जिसका राजतरंगिणी में उल्लेख मिलता है। यह कश्मीर के दक्षिण पूर्व में स्थित है[१]।" बल्लरवर या बल्लपुर दार्व राज्य ही है[२]। यह पहचान सही ही है क्योंकि इस जनपद तालिका में दार्व का उल्लेख नहीं है। अत: संभव है कि वह्लव और दार्व एक ही थे। इस देश का संबंध आधुनिक 'बहाल' लोगों से था।

वाह्लवेय (का० मी० ८। १८) भी इसका नाम था और यहां की स्त्री को वाह्लवी (का० मी० ९९। २६) कहते थे। कस्तूरी इस जनपद की प्रसिद्ध विशिष्टता थी (का० मी० ९९। २६)। संभवत: चन्द्रभागा (चनाब नदी के तट पर होने वाले भूर्ज वृक्ष भी इसी जनपद की प्रसिद्ध उत्पाद थे (का० मी० ९९। २५)।

लिम्पाक[३] (लम्पाक[४]) लम्पक[५], लम्बक[६] या लम्पग[७]

यह उत्तरापथ का प्रसिद्ध जनपद था जिसकी पहचान काबुल नदी के उत्तर में स्थित लमग़ान से की गई है। डे के अनुसार इसे मुरुण्ड भी कहा जाता था, जो जलालाबाद से २० मील उत्तर पश्चिम है[८]। यह युअन च्वांग का लैंम्पो और टॉलमी का लम्बटे या लम्बगे ही है।[९]

कुलूत

यह आधुनिक कुलू की घाटी ही है। इसके इतिहास पर यहां अर्थात् कांगड़ा ज़िले से प्राप्त सिक्कों से प्रचुर प्रकाश पड़ता है। इस पर्वतीय प्रदेश में बर्फीली हवा का चलना प्रसिद्ध था (का० मी० ९९। २७)।

१—का० मी० पृ० ३०७ (अपेन्डिक्स १)

२—उपायन पर्व पृ० ८७

३—का० मी० ९४। १०

४—वही ९९। २४

५—मत्स्य पु० ११३। ४३; विष्णुधर्मोत्तर १। ९। ९

६—गरुड़ पु० ५५। १७

७—विष्णुधर्मोत्तर पु० १। ९। ९

८—डे जाग० डिक० पृ० ११३

९—कनिंघम ऐ० जाग० पृ० ३६ (काशी संस्करण)।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कीर—बृहत्संहिता (४–२३) इसे गंधार, सौवीर, सिन्धु और शैलान् (पर्वतीयों) के साथ रखता है। कूर्म विभाग के अनुसार इसे ईशान दिशा में काश्मीर, अभिसार, दरद, तंगण, कुलूत (१४ । २९) आदि देशों के साथ स्थित बताया गया है। इसकी पहचान काँगड़ा घाटी में स्थित बैजनाथ और उसके आस-पास के क्षेत्र से की गई है।[१]

धर्मपाल के खालिमपुर ताम्रपत्र लेख में (श्लोक १२) इसे गान्धार के साथ (भोजैर्मत्स्यैः समद्रैः कुरु यदु यवन आवन्ति ·गान्धार कीरै······) रखा गया है। साथ ही इसी लेख में धर्मपाल को अनेक उदीच्य राजाओं का विजेता (उदीचीनानेक–नरपति–प्राभृतीकृत)[२] कहा गया है। इसलिये कीर देश की स्थिति उत्तर पूर्वी भारत में नहीं मानी जा सकती है। यद्यपि बृहत्संहिता में इसे 'ऐशान्यां' (उत्तर पूर्व में) स्थित बताया गया है।

तङ्गण—काव्य मीमांसा इसे उत्तरापथ में और वायु पुराण (४५ । १३५) इसे पर्वताश्रयीक्षेत्र में स्थित बताता है। तंगण जनपद संभवतः उत्तर प्रदेश के गढ़वाल प्रान्त में जोशीमठ.के पास ही टंगणापुर के आस-पास बसा हुआ था[३]। डा० मोतीचन्द्र के अनुसार यह ऊपरी गंगाघाटी के पूर्व और ऊपरी सरयू के बीच (उपायन पर्व पृ० ७९, १४०) तथा रामगंगा से लेकर ऊपरी सरयू तक बसा था (उपायन पर्व पृ० ७९)।

आवश्यकचूर्णी के पूर्व भाग से उद्धृत पाठ के आधार पर इन्हें उत्तरापथ का म्लेच्छ बताया गया है ;

'उत्तरा वहे टंकणा नाम म्लेच्छा' और डा० मोतीचन्द्र इनको काशगर के आस-पास रहने वाले टंगण बताते हैं[४]।

तुषार—यह उत्तरापथ का जनपद है जिसे तुखार या 'टोकारियन' का देश (तुखारिस्तान) माना गया है। वायु पु० (४५ । ११८) इसे उदीच्य में और विष्णुधर्मोत्तर (१ । ९ । ८) तथा गरुड़ पु० (पू० ५५ । १६) पश्चिमोत्तर

१—एपी० इण्डि० भाग १, पृ० ९७
कार्पस इ० इ०, भाग ४, पृ० २५१, ३१४, ६३७, ६४२

२—धर्मपाल का खालिमपुर लेख—श्लोक १३ के बाद का गद्यांश।

३—सरकार, जाग० ऐ० मेड० इ० पृ० २६
दृष्टव्य एपी० इण्डि० वाल्यूम ३१ पृ० २८६

४—उपायन पर्व, पृ० १२४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में स्थित बताते हैं। यह देश घोड़ों की एक विशेष जाति के लिये प्रसिद्ध था जिसे 'तुखारा'[1] कहते थे।

बर्बर—यह उत्तरापथ का प्रसिद्ध जनपद है जिसे कांबोज और दरदों के साथ रखा गया है।[2] वायु पुराण तुषार और पह्लवों के साथ रखता है। डा० अग्रवाल इसे "सिंधु सागर संगम के समीप, जहां बर्बरिक नामक समुद्र पत्तन था" बताते हैं।

हर हूर

डा० मोतीचन्द्र के अनुसार संभवतः हरहूर या हारहूर हेरात देश (एरिया) ही था।[3]

हूहुक—इसको हिमालय खण्ड में नलिनी नदी द्वारा अभिसिंचित प्रदेश बताया गया है।[4]

सहुड—यह युअनच्वांग द्वारा उल्लिखित सकुट ही है।[5] यह वार्टस के अनुसार जगुड ही है जिसकी पहचान अरकोसिया (कन्धार) से की गई है।[6] कनिंघम इसकी पहचान गजनी से करते हैं।[7]

१—महाभारत सभा पर्व ५१। ३०

जायसी, पद्मावत० (देहली संस्करण १९५९) २६:

सोरस सहस घोर घोरसारा।
सांवकरन बालका तुखारा॥

मान-राजविलास १७। १८:

अंबारस भौंर मसक्कि अपार।
तुरंजे ताजि तुरक्क तुषार॥

२—मार्कण्डेय पु० ५७। ३८:

काम्बोजा दरदाश्चैव बर्बरा हर्षवर्धनाः॥

वायु पु० ४५। ११८:

काम्बोजा दरदाश्चैव बर्बराः प्रिय लौकिकाः।
पीनाश्चैव तुषाराश्च पह्लवा वाह्यतोदराः॥

३—उपायन पर्व पृ० ६५–६७

४—जाग० ऐ० मेड इ०, पृ० ३६

५—वार्टस-युअनच्वांगसट्रेवेल्स भाग २, पृ० २६४–२६६

६—वही पृ० २६६
कनिंघम ऐ० जाग० पृ० ३४

७—वही पृ० ३४–३५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हंसमार्ग—इनकी पहचान हुंज़प्रदेश मे की गई है जो उत्तरी पश्चिमी काश्मीर में स्थित था।[1]

रमठ—इस प्रदेश को गजनी और वखान के बीच स्थित बताया गया है।[2]

करकण्ठ— संभवत: यह कराकोरम पर्वत पर स्थित देश था। साल्ट रेंज (नमक की पहाड़ी) के निकट स्थित कारापथ या करबाग भी इससे साम्य रखता है।[3]

उत्तरापथ की इस जनपद सूची के अतिरिक्त अन्य जनपद भी उत्तरापथ में रखे जा सकते हैं जिनका उल्लेख काव्यमीमांसा में किया गया है। ये निम्न-लिखित हैं :—

वाहीक[4]

"गंधार और वाहीक दोनों मिलकर उदीच्य कहलाते थे। सिन्धु से शतद्रु तक का प्रदेश वाहीक था जिसके अन्तर्गत मद्र, उशीनर और त्रिगर्त ये तीन मुख्य भाग थे[5]।" इसी कारण राजशेखर ने इसे उत्तरापथ की जनपद तालिका में नहीं रखा।

महाभारत के अनुसार बाहीक देश पंजाब की छ: नदियों—सिन्ध और वितस्ता (झेलम), चन्द्रभागा (चनाब), परुष्णी (रावी), विपाश (व्यास) तथा शतुद्रि (सतलज) के बीच में और हिमालय, गंगा, सरस्वती, यमुना तथा कुरुक्षेत्र के बाहर स्थित भूखण्ड को वाहीक कहते थे जो अपवित्र और त्याज्य देश था :—

बहिष्कृता हिमवता गंगया च बहिष्कृताः।
सरस्वत्या यमुनया कुरुक्षेत्रेण चापि ये॥

कर्ण पर्व ४४। ६

पञ्चानां सिन्धु षष्ठानां नदीनां येऽन्तराश्रिताः।
तान् धर्म बाह्यानशुचीन वाहीकानपि वर्जयेत॥

कर्ण पर्व ४४। ७

१—जाग० ऐ० मेड० इ०, पृ० २६ नोट ८
२—वही, पृ० २४, नोट ५
३—का० मी०, पृ० २८३–२८४ एपेन्डिक्स १
४—का० मी०, ८। १८, ११०। ११
५—पाणिनि भारत, पृ० ४२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धर्म क्षेत्र और धर्म वाह्य होने के कारण ही वे वाहीक कहलाते थे। इलीलिये वह आर्यों के बसने योग्य नहीं था:—

पंचनद्यो वहन्त्येता यत्र निःसृत्य पर्वतात् ॥

कर्ण पर्व ४४ । ४०

आरट्टा नाम वाहीका न तेष्वार्यो द्व्यहं वसेत् ।
बहिश्च नाम ह्लीकश्च विपाशायां पिशाचकौ ॥

कर्ण पर्व ४४ । ४१

तयोरपत्यं वाहीका नैषा सृष्टिः प्रजापतेः ।
ते कथं विविधान् धर्मान् ज्ञास्यन्ते हीनयोनयः ॥

कर्ण पर्व ४४ । ४२

टक्क—(का० मी० ५१ । २) अथवा टकी भी सिन्ध से लेकर व्यास तक विस्तृत सम्पूर्ण पंजाब का प्राचीन नाम था जो उत्तर में पहाड़ों की तलहटी से लेकर दक्षिण में मुलतान तक फैला हुआ था[१]। बाहीक और टक्क एक ही माने गये हैं। इसकी राजधानी साकल (स्यालकोट) थी[२]।

गान्धार

उत्तरापथ का प्राचीन और सुप्रसिद्ध जनपद था जो "कुनड़ या काश्कर नदी से तक्षशिला तक फैला हुआ था[३]।" यहां के बने हुए कम्बल पांडु कम्बल कहलाते थे[४]। राजशेखर के अनुसार गंधार की भेड़ें भी अपनी ऊन के लिये प्रसिद्ध थीं :— **"उपोप मे परामृश मा मेद्रभ्राणि मन्यथाः ।**
सर्वाऽहमस्मि रोमशा गन्धारीणामिवाविका ।"

का० मी० २८ । २-३

गंधार की भेड़ों के ऊन के रोम इतने घने, सुन्दर और मक्खन के समान धवल (श्वेत) होते थे कि वे स्वभावतः आकर्षक बन गये :—

यस्याः प्रसन्न धवलं चक्षुः पर्यन्तपक्ष्मलम् ।
नवनीतोपमं तस्या भवति स्मरमन्दिरम् ॥

का० मी० २८ । ४-५

१—कनिंघम ऐ० जा०, पृ० १२५ (बनारस संस्करण)
२—वही पृ० १२५–१२६
वही—पृ० १२५–१३०
३—पाणिनि भारत पृ० ६२
४—वही, पृ० ६२, २२६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऋग्वेद में भी हमें उनकी भेड़ों की ऊन का यही उल्लेख मिलता है :—

उपोप मे परामृश मा मे दभ्राणि मन्यथाः ।
सर्वाहमस्मि रोमशा गन्धारीणामिवाविका ।।

ऋग्वेद २ । १ । ११ । ७

"अर्थात् (पत्नी कहती है) मुझे पास आकर स्पर्श करो । मुझे छोटे रोएँ वाली न समझो । मैं गांधारी के समान रोम वाली और अवयवों से पूर्ण हूँ ।"

इसीलिये गंधार सफ़ेद कम्बलों (पांडु कम्बल) के लिये प्रसिद्ध था और स्पष्टत: इससे राजशेखर का भूगोल-ज्ञान भी सिद्ध होता है ।

यह सिन्ध नदी के तट पर बसा हुआ देश था । आरब्ध के गान्धार नामक पुत्र के नाम पर ही यह देश इस नाम से प्रसिद्ध हुआ (भागवत पु० ९ । २३ । १५) जो उदीच्य में म्लेच्छों का देश था (भागवत पु० ९ । २३ । १६) यह गंधर्व देश भी कहलाता था जिसे जीत कर भरत ने तक्ष और पुष्कर को क्रमश: तक्षशिला और पुष्कलावती में राजा नियुक्त किया (रामायण, उत्तर का० १०१ । ११) ।

कपिश—(का० मी० १२ । ५) यह भी उत्तर पश्चिम में प्रसिद्ध क्षेत्र था । "गंधार, कपिश, बाल्हीक और कंबोज—इन चार महाजन पदों का एक चौगड्डा था ।.........हिंदुकुश के उत्तर पूर्व कंबोज उत्तर पच्छिम में वाल्हीक दक्षिण पूर्व में गंधार और दक्षिण-पश्चिम में कपिश था ।............ बाल्हीक और गंधार के बीच में गंधार से मिला हुआ उसके पच्छिम में कपिश जनपद था ।"[1] डा० अग्रवाल के अनुसार यह आधुनिक कोहिस्तान-काफरिस्तान ही था ।[2]

काश्मीर

हिमालय की कुक्षि में स्थित[3] यह अति प्रसिद्ध और प्राचीन देश था जिसका अधिष्ठान नामक नगर प्रद्युम्न शिखर पर स्थित था ।[4] बिल्हण (कर्ण सुन्दरी ग्रन्थकर्त्ता प्रशस्ति, श्लोक ४, पृ० ५६) इसे, जहां का वह स्वयं निवासी था, शारदा-देश कहता है :

१—पाणिनि भारत पृ० ६१–६२
२—पुराणम्-जनवरी १९६४ पृ० २२८
३—योग वसिष्ठ ३ । ३१ । १०, ३ । ३२ । ५, ११
४—वही ३ । ३२ । ११–१२

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सहोदराः कुंकुम केसराणां भवन्तिनूनं कविता-विलासाः ।
न शारदादेशमपास्य दृष्टस्तेषांयदन्यत्रमया प्ररोहः ॥

राजशेखर भी काश्मीर के कवियों पर शारदा की कृपा का उल्लेख करता हुआ शारदा देश की प्रतिष्ठा करते हैं ।[1] यहां की स्त्री लावण्य और खरे सोने का स्वरूप थी ।[2]

म्लेच्छ

भाषा और साहित्य पर म्लेच्छकोप का प्रभाव आवश्यक ही था—
म्लेच्छितकोप निबन्धनमूलमिदमित्येवमादिभिः कारणैः ।
का० मी० ५७ । १८–१९

पुराणों में म्लेच्छों को सीमान्त पर स्थित बताया गया है, जो नास्तिक अर्थात् आर्यधर्म विरोधी थे—

कृतघ्नान्नास्तिकांस्तद्वन् म्लेच्छ देश निवासिनः ।
त्रिशंकुर्बर्वर द्राववीत द्रविडकोंकणान् ॥
मत्स्य पु० १६ । १६

विष्णुधर्मोत्तर और गरुड़ पुराणों में इनको सिन्ध का नास्तिक-म्लेच्छ-यवन बताया गया है—

सैन्धवा म्लेच्छा नास्तिक्या यवनास्तथा ।
वि० धर्मं० १ । ९ । ७

यही गरुड़ पुराण (५५ । १५) में भी बताया गया है । परन्तु जैसा ऊपर कहा गया है ये पश्चिम के नास्तिक सैन्धव म्लेच्छ-यवन अरब आक्रान्ता ही थे ।

राजशेखर में उत्तरापथ की जनपद सूची (का० मी० ९४ । १०) में भी तुरुष्क (तुर्क देश—तुर्किस्तान) देश को स्थित बताया है । इस युग में उत्तर पश्चिम से ही तुर्कों की आंधी महमूद गजनवी के समय में आयी थी । इसी लिये वामन पुराण पश्चिम में यवनों (अरबों) और उत्तर में तुरुष्कों को बसा हुआ बताता है—

१—का० मी० ३४ । ११ :
शारदायाः प्रसादेन काश्मीरः सुकविजनः ।

२—वही ९७ । १३–१४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्वे किराता यस्यांते पश्चिमे यवनाः स्मृताः ॥
वामन पु० १३ । ११

आन्ध्रा दक्षिणतो वीर तुरुष्कास्त्वपि चोत्तरे ॥
वामन १३ । १२

वामन के अनुसार ही म्लेच्छ भी उत्तर देश में बसे थे—

म्लेच्छ मध्ये समुत्पन्नः क्षयकुष्ठ समुन्वितः ॥
वामन ४७ । २९

... ...
... ...
... ...

स गत्वा उत्तरं देशं म्लेच्छमध्ये ददर्शह ॥
वही ४७ ।३४

अतः स्पष्ट है कि म्लेच्छ-तुरुष्क एक ही थे जो उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर बसे हुए थे—

म्लेच्छ-कोप की झांकी पृथ्वीराज-विजय नामक ऐतिहासिक काव्य से होती है—

त्वया हरे तापसतामुपेत्य सख्ये गृहीते हरिणैरिदानीम् ।
निवास भूमिर्मम पुष्करं तदास्कन्दि मातङ्ग महाभयेन ॥

हरिर्विष्णुर्म्सिहश्च । हे हरे त्वया ऋषितामाश्रित्य मृगैः सह निवासे गृहीते सति मत्स्थानं पुष्करं मातङ्गेभ्यो म्लेच्छभ्यो महाभयेनास्कन्दि आक्रान्तम् । सिंहे च शान्त प्राये सति मातङ्गेभ्यो हस्तिभ्यो भयेन स्थानमास्कन्द्यते ।"
पृथिवीराज विजय १ । ४९

"चक्रे जगत्सर्ग महाध्वरान्ते मयापि यत्रावभृथाभिषेकः ।
तत्राधुना देवगृहाग्रहार हिंसाक्लमं म्लेच्छचमूश्छिनत्ति ॥

जगत्सर्ग एव महाध्वरस्तत्समाप्तौ यत्र स्थाने मयाप्यवभृथ-स्नानं कृतं शुद्धयर्थमिति शेषः । तत्राधुना म्लेच्छाः प्रासादादि ध्वंसेन खेदं निवारयन्ति । तथाविधे पुण्यायतने म्लेच्छाः पापमाचरन्तीत्यर्थः ।"
पृथ्वीराज विजय १ । ५०

स्पष्ट है कि सिंह (पृथ्वीराज) के शान्त होने पर म्लेच्छ मातंग (दुष्ट हाथी-मातंग) कितना उत्पात और उद्वेजन उत्पन्न कर रहे थे । म्लेच्छ-

State Museum Library Lucknow 51600

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मातंगों को ही गर्जन (गजनी) का निवासी भी कहा गया है जिनको चाहमान शासक ने हराया था—

अत्यंतगर्जनान्मत्तान्मातङ्गानजयद्रणे ।

पृ० रा० वि० ५ । ११३

इस प्रकार स्पष्ट है कि तुरुष्क, म्लेच्छ, मातंग और गर्जन लोग एक ही थे ।

चिन्तक पृथ्वीराज विजय (११९१ ई०) के पहले ही म्लेच्छ-मातंग के कोप और उसका भारतीय जीवन पर प्रभाव बता चुके थे । संस्कृत साहित्य में गजना देश (गर्जनक-गाजनक या गजधरा) प्रसिद्ध हो चुका था । यही गजनी देश था । इसका यह नाम गज पर्वत (वराह पुराण अ० ८१ पृ०……) पर स्थित होने के कारण ही पड़ा । संस्कृत कवियों ने गरजते हुए मत्त हाथियों से उनकी उपमा दी :

सेनानां गजगर्जितेन मुरजध्वानानुकारो धृतः ।।

कर्ण सुन्दरी ४ । २१

गर्जते गजों की सेना गर्जनक देश की ही थी, जिसको चालुक्य सेना ने सिन्धु नदी के तट पर होने वाले भीषण युद्ध में पराजित किया था । इसकी राजधानी भी गर्जन नगर (गज्जण णअर) थी—

गज्जण णअरं जेदुं गअस्स रुच्चिकस्स सआसादो पहाणो वीरसिंघो आअच्छदि ।

(संस्कृत—गर्जन नगरं जेतुं गतस्य रुच्चिकस्य सकाशात् प्रधानो वीरसिंहो आगच्छति ।)

कर्ण सुन्दरी, पृ० ५३ अंक ४

वीरसिंह बताता है—

यथा तावदितो निर्गत्य गर्जनाधिपतिबलस्यास्मद् बलं सिन्धोरोधसि मिलितम्, तथा……। अनन्तरं महतिसमरसंमर्द्दे । वही पृ० ५४

ये धरणि मंडल (भारत) के द्वार श्रेणी (दरवाज या द्वारावती) के आस-पास स्थित (कर्ण सुन्दरी अंक ४ । १७) थे जिन पर विजय प्राप्त हुई थी—

कृत्वा गर्जनकाधिराजमधुना त्वंभूरिरत्नांकुर ।
च्छायाविच्छुरिताम्बुराशिरशनादाम्नः पृथिव्या पतिः ।।

वही ४ । २२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्कन्द पुराण के अनुसार गाजनक देश में ७२ लाख गांव थे।[१] "अफगानी लोग गजनी की सुरक्षा-शक्ति और दुर्धर्षता पर गर्व करते हैं। गजनी पूर्व में भी शक्ति और सुदृढ़ स्थिति के लिये प्रसिद्ध था और इसीलिये यह गज के नाम से प्रसिद्ध था जो पुरानी फारसी जबान में कोश या महाफ़िजखाना था।......डायोनिसिन्स के अनुसार यहां के लोग अपने आपको गजों से सुरक्षित करते थे जो हिलाये नहीं हिलते थे। संभवत: टॉलमी का गजक भी काबुल के उत्तर स्थित था।"[२] अत: कनिंघम के अनुसार हेल्मन्द नदी पर स्थित गुजारिस्तान, गज या गजक प्रसिद्ध देश गजनी ही था। मुस्लिम इतिहासकारों के विवरणों में भी इसे गुर्जिस्तान, गर्जिस्तान या घर-शिस्तान के नाम से उल्लिखित पाते हैं।[३] जायसी भी गाजना (गौर गाजना) के नाम से इसका उल्लेख करते हैं।[५] संस्कृत कवियों ने इसे वारण-गज कहा है।[६] राजशेखर भी इस तथ्य का परिचय 'दुर्वार-वारण-घटा (का० मी० ७३। २४) से कराते हैं। यह एक सुप्रसिद्ध प्रतीक-पद था।

मातंग

राजशेखर ने काव्यमीमांसा में गज या गर्जनक के स्थान पर मातंगों का उल्लेख किया है[७] जो म्लेच्छ-मातंग या गाजनक ही थे। पृथ्वी राज विजय में प्रयुक्त मातंग शब्द मुस्लिम आक्रान्ता के लिये प्रयुक्त होता था जैसा कि डा० दशरथ शर्मा[८] और डा० आर० सी० मजुमदार[८] भी मानते हैं। परन्तु अब भी यह शब्द भूगोल और इतिहास का एक रहस्य है।

१—स्कन्द पु० १। २। ३९। १३०:
द्वासप्ततिस्तथा लक्षा ग्रामा गाजणके स्मृता:।

२—कनिंघम ऐ० जाग० पृ० ३५–३६ (काशी संस्करण)

३—वही पृ० ३५

४—ईलियट-डाउसन, जिल्द २ पृ० ५७६ (इलाहाबाद संस्करण)

५—पद्मावत ३५। ५; ४२। १०

६—लेखक का निबन्ध-एज ऑफ मुद्राराक्षस—इण्टर नेशनल कांग्रेस ऑफ ओरियन्टलिस्ट्स १९६४

७—अर्ली चौहान डाइनेस्टीज़ पृ० १२८:
"........Matangas whom I have tentatively identified with Muslims".

८—'दि स्ट्रगल फ़ॉर इम्पायर' पृ० ८२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऊपर कहा गया है कि गज पर्वत[1] पर स्थित होने के कारण ही गजनी के लोग गज कहलाये और वह देश गज-धर[2] या गजधरा कहा गया।

इसे ही मातंग शैल[3] भी कहते थे और इसी पर्वत पर स्थित प्रदेश को मतंग-विषय भी कहते थे जो हीरों (मातङ्ग रत्नों) के लिये प्रसिद्ध था :—

हैम मातङ्ग सौराष्ट्राः पौण्ड्रकालिंग कोशलाः।
वेण्वातटाः स सौवीरा वज्रस्याष्टविहारकाः ॥

गरुड़ पु०, पू० ६८। १७

आगे इन रत्नों के लक्षणों का उल्लेख दिया गया है :—

आताम्रा हिमशैलजाश्च शशिभा वेण्वातटीयाः स्मृताः
सौवीरे त्वसिताब्ज मेघ सदृशास्ताम्राः सौराष्ट्रजाः ॥
कालिङ्गाः कनकावदात रुचिराः पीतप्रभाः कोशले
श्यामाः पुण्ड्रभवा मतङ्गविषये नात्यन्त प्रीतप्रभाः ॥

गरुड़ पु० ६८। १८

राजशेखर के युग में मिहिर-भोज, महेन्द्रपाल और महीपाल ने इन म्लेच्छ-मातंगों का पराभव कर दिया था। कवि भी इसका उल्लेख करता है :—

मातंगानामभावे मदमलिन मुखैः प्राप्तमाशा करीन्द्रैः
जाते रत्नापहारे दिशि दिशि ततयो भान्ति चिन्तामणीनाम् ॥
छिन्नेषूद्यानवापी तरुषु विरचिताः कल्पवृक्षा रिपूणां
यस्योदञ्चत्त्रिवेलावलयफलभुजां मानसी सिद्धिरासीत ॥

का० मी० ९१। १३–१६

बहुश्रुत राजशेखर की कवि-प्रतिभा ने उपर्युक्त पंक्तियों में इतिहास, भूगोल और अर्थशास्त्र के अंगों की पुष्टि की है।

प्रथमत: दो प्रकार के हाथियों—(मत्त या म्लेच्छ) मातंग और आशा-करीन्द्र यानी दिग्गज (दिक्पाल) का उल्लेख किया गया है। जैसा ऊपर बताया गया है कि मातंग म्लेच्छ-तुरुष्क का परिचायक प्रतीक है और आशाकरींद्र ही उनके शत्रु हैं जिन्होंने उनके विध्वंसक कार्यों को रोक कर खिन्न देश को आशा दिलाई।

१—वराह पुराण अ० ८१, पृ० ३५७

२—पृथ्वीराज रासो (उदयपुर) २२। ९५, ताइयधर गज राज राज दरबारणि गज्जै

३—प्रबोध चन्द्रोदय ५। १०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अर्थात् मातंगों के अभाव में पुनः शान्ति और समृद्धि लौट आई। यही मानसी सिद्धि थी कि दुर्वार–वारण–घटा (का० मी० ७३ । २४) से देश मुक्त हुआ था जिसका श्रेय दिक्पालों पर ही था। ये राष्ट्र रक्षक दिग्गज प्रतिहार सम्राट ही थे, विशेषकर नागभट द्वितीय और मिहिर भोज। इस कार्य को राजशेखर ने आदि वराह लीला की उपयुक्त संज्ञा दी है कितना सुंदर चित्रण है :—

"उद्दण्डोदरपुण्डरीकमुकुलभ्रान्ति स्पृषा दंष्ट्रया
मग्नां लावणसैन्धवेऽम्भसि महीमुद्यच्छतो हेलया।
तत्कालाकुल देव दानवकुलैरुत्ताल कोलाहलं
शौरेरादिवराहलीलमवतादभ्रंलिहाग्रं वपुः॥"
का० मी० ८४ । ५–८

आदिवराह महाराज भोज ही थे जिनके शौर्य-कार्य को आदि वराह लीला कहा गया है। कालांतर में यह एक राष्ट्रीय प्रतीक ही बन गया। नव-साहसांक चरित में भी स्पष्टतः इसे कहा गया है :—

सहेलमभ्युद्धरता धरित्रीं मग्नां द्विषद्वारिनिधावगाधे।
येनात्र नीता पृथु विक्रमेण व्यक्तिं जगत्यादिवराहलीला॥
नव साहसांक चरित्र १ । ६०

राजशेखर आम (आम इति यायावरीयः)[१] का भी उल्लेख करते हैं। संभवतः यह कान्यकुब्ज सम्राट आम ही था[२] जिसकी पहचान नागभट द्वितीय से की गई है[३]। नागभट द्वितीय ने भी देश को म्लेच्छ मातंगों से मुक्त किया था[४]। प्रबोध चंद्रोदय भी इस युग की प्रसिद्ध रचना है जिसमें मातंग शैल को अर्थात् मातंगों को वाणों से विदीर्ण किया गया था :—

शर दलित विदीर्णोत्तुङ्ग मातङ्ग शैल—
स्खलित रय विशीर्णच्छत्र हंसावतंसाः॥
प्र० च० ५ । १०

इन दुष्ट हाथियों को अंधकार भी कहा गया है जिनको नष्ट करने वाला सिंह (तिमिर द्विप यूथ केसरी)[५] भी मिहिर भोज ही था। इस प्रकार

१—का० मी० ४५ । १०
२—स्कन्द पु० ३ । २ । ३४ । १२, १३
बप्प भट्टि चरित-प्रबन्धकोश पृ० २७ (३६ । २७)
३—हिस्ट्री ऑफ़ गुर्जरप्रतिहाराज़ पृ० ४४, ४७–४८
४—भोज की ग्वालियर प्रशस्ति श्लोक १०
५—का० मी० ७४ । १०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्पष्ट ही कि राजशेखर द्वारा उल्लिखित मातंग[1] या गज[2] लोग गजनी के म्लेच्छ ही थे जिनको तुरुष्क भी कहा गया है ।

इसके अतिरिक्त राजशेखर 'मणिशास्त्रविद (गरुड़ पु० पू० ६८। ३४) भी थे। वे मौक्तिक सम्पदः (का० मी० ८४। १०) और रत्नानि (का० मी० ८४। १५) का काव्य मीमांसा में विशद विवेचन करते हुए मतंग-विषय और मातंग-रत्नों का भी उपर्युक्त पंक्तियों (का० मी० ९१। १३–१६) में उल्लेख करते हैं। इस प्रकार राष्ट्रीयता, इतिहास, भूगोल और अर्थशास्त्र संबंधी महत्व-पूर्ण तथ्य इस कवि से प्राप्त होते हैं।

पर्वत

काव्य मीमांसा के अनुसार उत्तरापथ के निम्नांकित पर्वत हैं—

हिमालय—कलिन्देन्द्रकील चन्द्राचलादयः पर्वताः ।

का० मी० ९४। ११–१२

हिमालय

उत्तर का नगाधिराज ही है जो पूर्व समुद्र (बंगाल की खाड़ी) से लेकर पश्चिम समुद्र (अरब सागर) तक फैला हुआ है (का० मी० ९६। १–४, कुमार संभव १। १) :

"अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः ।
पूर्वापरौ तोयनिधी विगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः ॥"

कलिन्द

यह भी हिमालय का ही एक पर्वतीय खंड है जहां से यमुना निकलती है। इसी कारण यमुना नदी को कलिन्द-कन्या या कालिन्दी कहा जाता है।

इन्द्रकील

यह उदीच्य का पर्वत भी हिमालय का एक शिखर है।[3] महाभारत (सभापर्व १०। ३२) के अनुसार हिमवन्त और गन्धमादन को पार कर (वन पर्व ३७। ४१) ही इन्द्रकील (वन पर्व ३७। ४२) पर पहुँचा जाता था। भागवत पु० (५। १९। १६) के अनुसार भी यह भारतवर्ष का पर्वत था। शिव महापुराण के अनुसार यह गंगा के सन्निकट स्थित था जहां अर्जुन ने तप किया था—

१—वही ९९। २२
२—वही ७१। ३
३—महाभारत सभापर्व ३८। १३, १८, २९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इतो गच्छाधुना पार्थ इन्द्रकीले सुशोभने।
जान्हव्याश्च समीपे वै स्थित्वा सम्यक् तपः कुरुः॥
शा० रु० सं० ३७। ६५

अर्जुनोपि स्वयं गच्छन्दुर्गाद्रिषु दृढ़व्रतः॥
यक्षं लब्ध्वा च तेनैव दस्यून्निघ्नन्ननेकशः॥
शा० रु० सं० ३८। २८

मनसा हर्ष संयुक्तो जगामाचलमुत्तमम्।
तत्र गत्वा च गंगायास्समीपं सुन्दरं स्थलम्॥
शा० रु० सं० ३८। २९

अर्जुन के तप को भंग करने वाला मूक नामक दैत्य-शूकर भी इन्द्रकील के समान कान्तिवाला (इन्द्रकीलसम प्रभः)[1] कहा गया है। यह हिमालय का एक शिखर (हिमवच्छिखराश्रयः)[2] और पवित्र पर्वत था (गिरिश्रेष्ठ) जो देवताओं की विहार-स्थली (त्रिदशानां समागमः)[3] थी।

चन्द्राचल

यह भी हिमालय का ही एक शिखर था। हर्षचरित (पृ० १९) भी इसका उल्लेख करता है। संभवतः यह चन्द्रभागा (चम्बल) का उद्गम स्थान था।

नदियाँ

(का० मी० ९४। १२–१३) उत्तरापथ में सिन्धु (सिन्ध), वितस्ता (झेलम), चन्द्रभागा (चनाब), इरावती (रावी), विपाशा (व्यास) और शतद्रु (सतलज) पंचनदप्रदेश की प्रसिद्ध नदियां हैं जो कुहू (काबुल), देविका (रावी की सहायक नदी–देग) और सरस्वती नदियों का ही प्रदेश प्रथित सप्त सैन्धव देश था। इन नदियों की ही घाटी में गान्धार, वाहीक और भरत (कुरुक्षेत्र) जनपद बसे हुए थे।

प्रसिद्ध नदियाँ गंगा और यमुना भी उत्तरापथ में रखी गई हैं (का० मी० ९४। १२–१३) जो वस्तुतः मध्यदेश की नदियां थीं।

१—महाभारत सभापर्व ३९। १२
२—वही ३९। ३९
३—वही ३९। ४०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्पाद—(का० मी० ९४। १४) सरल, देवदारु (हिमालय के प्रसिद्ध वृक्ष), द्राक्षा (कपिश, गान्धार की उत्पाद), कुङ्कुम (काश्मीर की प्रसिद्ध उपज), चमराजिन (धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र और गंगा-यमुना के तटों पर मिलने वाली), सौवीर (सौवीर देश की उपज), अंजन (सुलेमान या अंजनगिरि का उत्पाद), सैन्धव[१] (सिन्धु के घोड़े या सैन्धव नमक) और तुरंग (बाल्हीक, कम्बोज, गान्धार, वाणायुज, तुषार, तुरुष्क देश घोड़ों के लिये प्रसिद्ध थे) उत्तरापथ के विशिष्ट और प्रसिद्ध उत्पाद थे।

१—देखिये बृहदारण्यक उपनिषद ६ । १ । १३ :
यथा महासुहयः सैन्धवः । (गीता प्रेस संस्करण)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मध्य देश

'तेषां मध्ये मध्यदेश इति।' का० मी० ९४ । १५

उन देशों—पूर्व देश, दक्षिणापथ, पश्चाद्देश और उत्तरापथ—के बीच में स्थित भूखण्ड ही मध्यदेश कहलाता था। मध्यदेश की यह भी एक नई परिभाषा है। प्राचीन परम्परा (मनुस्मृति २ । १) के अनुरूप ही राजशेखर मध्यदेश की मर्यादाओं का उल्लेख करते हैं। हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य में तथा विनशन (सरस्वती के लुप्त होने का स्थान जिसे महाभाष्य में अदर्श या अदर्शन कहा गया है) के पूर्व और प्रयाग से पश्चिम भूखण्ड को को मध्य देश कहते थे :

''हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि ।
प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्त्तितः ॥''

का० मी० ९४ । १७–१८

मध्य देश की पूर्वी और पश्चिमी सीमाएं बदलती रहीं। पश्चिमी सीमा तो प्रायः सरस्वती नदी (जगाधरी अम्बाला प्रान्त के आसपास) के आस-पास मानी गई। परन्तु पूर्वी सीमा बहुत ही अनिश्चित रही। दिव्यावदान (पृ० १३ । ११–१६) तो इसे पूर्व में पुण्ड्रवर्धन नगर (उत्तरी बंगाल) तक ले जाता है। परन्तु राजशेखर के अनुसार यह प्रयाग (गंगा-यमुना संगम) तक ही सीमित था। परन्तु राजशेखर गंगा-यमुना नदियों को उत्तरापथ की नदियाँ बताते हैं। अतः उनके मध्यदेश के स्वरूप और विस्तार के सम्बन्ध में कुछ गड़बड़ है। इससे भी अधिक गड़बड़ी इस बात से उत्पन्न होती है कि वे अन्य देश विभागों की भांति मध्यदेश के जनपदों, पवर्तों, नदियों और द्रव्यों की उत्पत्ति का भी वर्णन नहीं करते हैं। उनका विचार है कि ये सब तो प्रसिद्ध ही थे—

तत्र च ये देशाः पर्वताः सरिते द्रव्याणा—
मुत्पादश्च तत्प्रसिद्धि सिद्धमिति न निर्निदिष्टम् ।

का० मी० ९४ । १९–२०

विष्णु पुराण प्रायः पंचस्थल-विभाग को ही अपनाकर मध्यदेश का वर्णन करता है :

तास्विमे कुरु पाञ्चाला मध्यदेशादयो जनाः ॥

विष्णु पु० २ । ३ । १५ (१)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कूर्म पु० (४७। ३८) भी यही कहता है।

गरुण पुराण के अनुसार—

पाञ्चालाः कुरवो मत्स्या यौधेयाः सपटच्चराः।
कुन्तयः शूरसेनाश्च मध्यदेश जनाः स्मृताः॥

गरुड़ पु० पूर्वं० ५५। १०

यही विष्णुधर्मोत्तर पु० (१। ९। २) मानता है।

वायु पुराण के अनुसार—

तास्विमे कुरुपाञ्चालाः शाल्वाश्चैव सजाङ्गलाः।

वायु पु० ४५। १०९

शूरसेना भद्रकारा गोधाः शतपथेश्वरैः।
वत्साः किसष्णाः कुल्याश्च कुन्तलाः काशिकोशलाः॥

वही ४५। ११०

अथ पार्श्वे तिलङ्गाश्च मगधाश्च वृकैः सह।
मध्यदेशा जनपदाः प्रायशोऽमी प्रकीर्त्तिताः॥

वही ४५। १११

ब्रह्माण्ड पु० के अनुसार—

तास्विमे कुरुपांचालाः शाल्वा माद्रेय जांगलाः॥

ब्रह्म० पु० भा० १६। ४०

शूरसेना भद्रकारा बोधाः सहपटच्चराः।
मत्स्याः कुशल्याः सौशल्याः कुंतलाः काशिकोशलाः॥

वही १६। ४२

गोधा भद्राः कलिंगाश्च मागधाश्चोत्कलैः सह।
मध्यदेश्या जनपदाः प्रायशस्तत्र कीर्त्तिताः॥

वही १६। ४२

मत्स्य पुराण के अनुसार—

तास्विमे कुरुपाञ्चालाः शाल्वाश्चैव सजाङ्गला॥

मत्स्य ११४। ३४

शूरसेना भद्रकारा बाह्याः सहपटच्चराः।
मत्स्याः किराताः कुल्याश्च कुतन्ताः कासिकोशलाः॥

वही ११४। ३५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आवन्ताश्च कलिंगाश्चैवान्धकैः सह ।
मध्यदेशा जनपदाः प्रायशः परिकीर्तिताः ॥
वही ११४ । ३६

इस प्रकार मध्यदेश के जनपदों की विभिन्न तालिकाओं से मध्यदेश के विकास-विस्तार का परिचय मिलता है। विष्णु पुराण में मध्यदेश को कुरु-पांचाल का प्रदेश कहा गया है। आगे अन्य पुराणों में जनपदों की संख्या बढ़ती गई है। राजशेखर ने निम्नलिखित जनपदों का उल्लेख किया है—

पांचाल (का० मी० ८ । १७; ९ । ७; ३४ । १७), शूरसेन (का० मी० ८ । १७) और हस्तिनापुर (का० मी० ८ । १७) जिनको मध्यदेश में स्थित माना जा सकता है।

पांचाल मंडल (का० मी० ३४ । १७)

प्रसिद्ध प्राचीन जनपद था जिसमें फतेगढ़, कानपुर, बरेली तथा बदायूं और पीलीभीत के भाग सम्मिलित थे। वैदिक युग में यह अपनी संस्कृति के लिये प्रसिद्ध था।[1] बौद्ध कालीन षोडश महाजन पदों में भी एक प्रसिद्ध राज्य था।[2] रामायण काल में भी यह एक प्रसिद्ध देश था।[3] धर्मात्मा कुशनाभ ने महोदय (कन्नौज) नामक नगर को बसाया था (रामा० बाल का० ३२ । ६)। काम्पिल्य[4] (कम्पिल, फतेगढ़ प्रान्त, यू० पी०) और सांकाश्या[5] (संकिशा, फतेगढ़ प्रान्त, यू० पी०) भी पांचाल के प्रसिद्ध नगर थे।

१—बृहदारण्यक उप० ६ । २ । १ :

श्वेतकेर्तुह वा आरुणेयः पञ्चालानां परिषदमाजगाम्.........।

वही ३ । १ । १ : कुरु पञ्चालानां ब्राह्मणा.........।

इसी पर शंकर भाष्य—तेषुहि विदुषां बाहुल्यं प्रसिद्धम्.........।

२—अंगुत्तर निकाय, जि० १, पृ० १९७ । ६–१० :

कुरूनं पञ्चालानं मच्छानं सूरसेनानं

३—रामा० अयोध्या का० ६८ । १३

४—वही, बाल का० ३३ । १९

५—वही, बाल का० ७० । ३, ८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाभारत के अनुसार पांचाल के दो भाग हो गये थे। दक्षिण पंचाल द्रुपद का देश (दक्षिण पञ्चालान् द्रुपदेनाभिरक्षितान्)[१] था जो गंगा नदी के दक्षिण चर्मण्वती (चम्बल) नदी तक विस्तृत था (दक्षिणांश्चापि पञ्चालान् यावच्चर्मण्वती नदी)[२]। द्रुपदनगर अत्यन्त रमणीय और प्राकार आदि से युक्त था।[३] माकन्दी और काम्पिल्य के सुन्दर नगर भी दक्षिण पांचाल में सम्मिलित थे।[४] द्रोण से पराजित होकर ही महाराज द्रुपद ने दक्षिण पांचाल अपने पास रखा था और उत्तर पांचाल द्रोण को दे दिया था[५] जिसे अहिच्छत्र-विषय भी कहते थे। अहिच्छत्रा पुरी (रामनगर, तहसील आँवला, प्रान्त बरेली) ही उत्तरी पांचाल की सम्पन्न राजधानी थी[६]।

पांच प्रान्तों का देश होने के कारण ही यह पञ्चाल (पञ्चाला: पञ्च विषया:)[७] कहलाता था। भागवत पुराण के अनुसार भी 'राष्ट्रं दक्षिण पञ्चालं' (४। २५। ५०) और 'राष्ट्रमुत्तरपञ्चालं' (४। २५ ५१) प्रसिद्ध ही थे। अजामिल कान्यकुब्ज (कन्नौज) का ही एक ब्राह्मण था (भागवत पु० ६। २१)। स्कन्द पुराण के अनुसार इस युग में पाञ्चाल मण्डल ही कान्यकुब्ज महाक्षेत्र अथवा महा देश था जहां प्रसिद्ध प्रतिहार शासक भोज राज्य करता था :—

कान्यकुब्जे महादेशे राजा भोजेति विश्रुतः ॥
स्कन्द पु० ७। २६। १४१

कान्यकुब्जे महाक्षेत्रे राजा भोजेति विश्रुतः ॥
वही ७। २। ६। २०

आम भी कान्यकुब्ज का महान शासक था :—

इदानीं च कलौ प्राप्त आमो नाम्ना बभूव ह।
कान्यकुब्जाधिपः श्रीमान्धर्मज्ञो नीति तत्परः ॥
स्कन्द पु० ३। २। ३६। १२

१—महाभारत, आदि पर्व १८४। १
२—वही आदि पर्व १३७। ७२
३—वही आदि पर्व १६७। ११; १८४। ६ इत्यादि
४—वही आदि पर्व १३७। ७३
५—वही आदि पर्व १३७। ६८, ७२
६—वही आदि पर्व १३७। ७६–७७ :
अहिच्छत्रं च विषयं द्रोणः समभिपद्यत ॥ ७६ (२)
एवं राजन्नहिच्छत्रा पुरी जनपदायुता ॥ ७७ (१)
७—भागवत पु० ४। २९। ७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजशेखर भी आम का उल्लेख करते हैं (आम इति यायावरीय: का० मी० ४५ । १०) जिसका तादाम्य इसी कान्यकुब्ज-नरेश से करना उपयुक्त है। बप्प भट्टि चरित के अनुसार भी आम कान्यकुब्ज देश का शासक था (प्रबन्ध कोश-बप्प भट्टि चरित २ । ३६ पृ० २७) जो राम के समान ही न्यायी था :—

एवं राज्यश्री: श्री आमस्य न्यायरामस्य ।

(वही २ । ३६, पृ० ६५) ।

डा० पुरी[१] ने आम की पहचान नागभट्ट द्वितीय से की है। परन्तु उन्होंने स्कन्द पुराण और काव्यमीमांसा के आम विषयक उल्लेखों पर विचार नहीं किया।

रघुकुल चूड़ामणि महेंद्रपाल[२] (प्रतिहार शासक) का गुरु राजशेखर था। अत: स्पष्ट है कि राजशेखर युग में पांचाल[३] देश और इसकी काव्य-शैली (पांचाली वृत्ति तथा रीति[४]) अत्यन्त प्रसिद्ध थी। इसकी राजधानी भी इसीलिये महोदय[५] कहलाती थी। प्रतिहारों के पहले यहाँ वज्रायुध नामक राजा राज्य कर चुका था। राजशेखर इसका भी उल्लेख करते हैं कि पाँचाल नरेश वज्रायुध की राजधानी महोदय अथवा कनउज थी :—

पंचालाधिपस्स सिरि वज्जाउहस्स णअरं कण्णउज्जं णाम ।

कर्पूर मंजरी पृ० १२१

महोदय के अतिरिक्त इसे गाधिपुर[६] (का० मी० ९४ । २७) भी कहते थे। वामन स्वामी, ब्रह्मशिला और कालप्रिय (का० मी० ९४ । २६-२७) की स्थितियों के यिषय में संदेह है। वे कन्नौज के निकट स्थित नहीं माने जा सकते[७]। कालप्रिय की पहचान कालपी (जालौन प्रान्त, यू० पी०) से की गई

१—हिस्ट्री ऑफ़ गुर्जर प्रतिहाराज़ पृ० ४७–४८

२—कर्पूर मंजरी, प्रथम जवनिका पृ० ७, १–५ :

रहुउल चूड़ामणिणो महेंद्रपालस्स को अ गुरु ?

३—का० मी० ८ । १७; ९ । ५, ७; ३४ । १७

४—वही ८ । १; ३१ । ६;

कर्पूर मंजरी पृ० १,

५—का० मी० ८ । २४; ९४ । २४;

६—बालरामायण १ । ८८

७—जागरफ़ी ए० मेड० इ०, पृ० २४२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है[१]। ब्रह्मशिला अल्बेरुनी का बर्ह्मशिल ही है, जो इलाहाबाद और कन्नौज के बीच इलाहाबाद से ४५ मील दूर पश्चिम या उत्तर पश्चिम में स्थित था[२]।

मध्य देश-कृष्णता (कालापन) का उदाहरण पांचाली-कृष्णा[३] थी।

हास्तिनपुर या कुरुराज्य

सम्राट कुरु से ही कुरु देश कहलाया[४]। कुरुवंश[५] भी उसी से प्रसिद्ध हुआ जो हस्तिनापुर में राज्य करता था। राजशेखर ने हस्तिनापुर जनपद[६] का उल्लेख किया है। हस्तिनापुर मेरठ (यू० पी०) ज़िले में स्थित है।

शूरसेन

यह प्राचीन प्रसिद्ध जनपद था जो मथुरा-मण्डल ही है। यहां कविन्द या कुविन्द नामक राजा राज्य करता था (का० मी० ५० । १५)।

पटच्चर

यह (का० मी० ५१ । १८) मध्य देश का जनपद था। डा० अग्रवाल इसकी पहचान सरस्वती के दक्षिण स्थित देश (आधुनिक पटौदी[७]) से करते हैं। डा० सरकार इस जनपद को इलाहाबाद और बाँदा में स्थित मानते हैं[८]।

वाराणसी भी मध्यदेश में काशी-राज्य का प्रसिद्ध और पवित्र नगर था जिसके पूर्व में मगध आदि स्थित थे (का० मी० ३३ । २६)। अयोध्या (का० मी० ८५ । २७), महोदय (का० मी० ८ । २४), हस्तिनापुर (का० मी० ८ । १७) और प्रयाग (का० मी० ९४ । २३) मध्य देश के प्रसिद्ध नगर थे। संभवतः अयोध्या को ही हरिश्चन्द्रपुरी (कर्पूर मंजरी पृ० ९७) कहा गया है।

१—वही पृ० २४३–२४४
प्रो० वी० वी० मीराशी स्टडीज़ इन इन्डोलॉजी—भाग १
२—डा० डी० सी० सरकार, जाग० ए० मेंड० इ०, पृ० २४४–२४५.
३—का० मी० ९७ । १५–१७
४—महाभारत आदि पर्व ९४ । ४९
५—वही ९७ । १६
६—का० मी० ८ । १७
७—पाणिनि भारत पृ० ७६
८—जाग० ए० मेड० इ०, पृ० २२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार सरयू (का० मी० ४३ । ६) और गंगा-यमुना मध्य देश की पवित्र-प्रसिद्ध नदियाँ थीं। गंगा और यमुना ही अन्तर्वेदी की मर्यादाएँ भी थीं (का० मी० ९४ । २३)। विदिशा के पास मध्य प्रदेश में उदयगिरि की गुफा में वराहलीला के पास ही शिल्पी ने गंगा-यमुना सहित मध्य देश की सुप्रतिष्ठा की है।

मध्यदेश अपनी श्यामता (का० मी० ९७ । १५-१९) और गौरता (का० मी० ९७ । २०-२१) के लिए प्रसिद्ध था।[1] मध्यदेश सभी भाषाओं का संगम था—

यो मध्ये मध्यदेशं निवसति स कविः सर्वभाषा निषण्णः ॥

का० मी० ५१ । ८

यही धर्म देश भी था :—

कृष्णसारो मृगोयत्रधर्मदेशः स उच्यते ॥

गरुड़ पु०, उ० २ । ९

भादानक[2]

डा० शर्मा के अनुसार भादानक अहीरवाटी है जो शेखावटी के उत्तरी भाग से मिला हुआ क्षेत्र था।[3] अतः इसकी पहचान गुड़गांव, अलवर प्रान्त के कुछ भाग और हिसार जिले के भिवानी क्षेत्रों से की गई है।[4]

स्कन्द पुराण के अनुसार भयाणक नामक देश में १ लाख गांव सम्मिलित थे।[5] भादानक और भयाणक एक ही हैं। संभवतः भयाण का ही स्वरूप भिवानी में सुरक्षित है।

हैहय (का० मी० ४७ । २४)

नर्मदा तट पर स्थित अनूपदेश पर हैहयों का राज्य था जिसकी राजधानी माहिष्मती[6] (मान्धाता, नीमाड़ प्रान्त, मध्य प्रदेश) थी। कार्तवीर्य अर्जुन और उसके वंशज यहां राज्य करते थे।[7] कलचुरि शासक भी हैहयों की शाखा थे।

१—का० मी० ९६ । २४-२५ : मध्यदेश्यानां कृष्णः श्यामो गौरश्च ।
२—का० मी० ५१ । ६
३—अर्ली चौहान डाइनेस्टीज, पृ० ५९
४—वही, पृ० ९२ (पृ० ९१-९२)
५—स्कन्दपुराण, कुमारिकाखंड, ३९-१५९
६—वही ६ । ३१ । १०३
७—जाग० ए० मेड० इ०, पृ० ३५
डा० यच० सी० रे०, डाइनेस्टिक हिस्ट्री ऑफ नार्दर्न इण्डिया भाग २ पृ० ७३८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार स्पष्ट है कि राजशेखर कितने महान बहुश्रुत कलाकार थे जिसने अपने युग को कितनी दक्षता और शक्ति से सुचित्रित किया है। उन्होंने ऐतिहासिक भूगोल (हिस्टारिकल ज्याग्रफी) के आदर्श स्वरूप की प्रतिष्ठा की है जिसका आर्थिक जीवन से अविच्छिन्न संबंध था। वह प्राकृतिक भूगोल से भी सुपरिचित थे। पवर्तों पर सुवर्ण और रत्नादि (पर्वतेषु सुवर्णरत्नादिकं)[१] मिलते थे। इस प्रसंग में मातंग-रत्नों (मतंग विषय[२] या मतंगाद्रि[३] पर होने वाले रत्नों) का उल्लेख करते हुए उन्होंने अपनी कवि प्रतिभा से इतिहास का निरूपण अनुपम ढंग से किया है।

अस्तु स्पष्ट है कि इस प्राचीन भारतीय भूगोल प्रवेशिका का मूलाधार काव्यमीमांसा ही है। इसको संक्षिप्त रूप में इसीलिये रखा गया है कि प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व का प्रत्येक विद्यार्थी इस प्रवेशिका से अपने देश के स्वरूप को जान सके जिसने जीवन और इसके दर्शन को एक विशिष्ट रूप दिया है।

१—का० मी० ७९। ५, १९
२—गरुड़ पु० १। ६८। १८
३—मानसोल्लास १। २। ४०६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट १

राजशेखर–विरचित देश-विभागः

(काव्य मीमांसा अध्याय १७)

"द्यावा पृथिव्यात्मकमेकं जगत, इत्येके ।
दिवस्पृथिव्यौ द्वे जगती, इत्यपरे ।"

"निरवधि च निराश्रयं च यस्य स्थितमनुवर्त्तितकौतुकप्रपञ्चम्।
प्रथम इह भवान्स कूर्ममूर्तिजयति चतुर्द्दशलोकवल्लिकन्दः ।।"

अर्थात्

सततं स्वातन्त्र्यं स्वराज्यं च तदेव्र प्राज्यम् सुराज्यं च स्थितत्वात् कौतुकागारः कूर्ममूर्तिः विचित्रः भरत क्षेत्रम् (विष्णु पुराणेऽपि २ । २ । ५० भणितं—भारते कूर्मरूपधृक)[1] जयति । इदं भारतम् सर्वेषामेव—चतुर्दश लोकानाम् आनन्द हेतुः भवतु । ईदृशी कवेः राजशेखरस्य देशभक्तिः । ईदृशो देश गौरवश्च ।

"भूर्लोकः पृथिवी ।"

अग्निपुराणे (१२० । ११) 'पादगम्यस्तु भूर्लोको' इति निर्दिष्टम् ।

"तत्र सप्त महाद्वीपाः[२] ।"

यत् प्रसिद्धमेव सप्तद्वीपामही

"जम्बू द्वीपः सर्वमध्ये ततश्च प्लक्षो नाम्ना शाल्मलोऽतः कुशोऽतः । क्रौञ्चः शाकः पुष्करश्चेत्येथैषां बाह्या संस्थितिमण्डलीभिः तत्र सप्तद्वीपवत्यां पृथिव्यां सप्त महाद्वीपाः[२]—जम्बूद्वीपः, प्लक्षद्वीपः ।। शाल्मल द्वीपः, कुशद्वीपः, क्रौञ्च द्वीपः, शाक द्वीपः पुष्करश्च—नामतः । तेषांमध्ये स्थितः जम्बूद्वीपः यस्य सुदर्शन द्वीप इत्यपरं नाम ।

उक्तं च—धन्यं यशस्यं द्वीपानां जम्बूद्वीपं मनोहरं ।
यत्र भारतवर्षं च पुण्यदं शुभदं तथा ।।

ब्रह्म वैवंत पु० भाग २ (उत्तर) ९४ । ७५

१—अग्नि पुराणम्० ८ । ३० : भारते कूर्म रूपी च

२—महाञ्चासौ द्वीपः इति महाद्वीपाः एते महाद्वीपाः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वणिजां च पुण्यकृतं वाणिज्यस्थलमीप्सितम् ।
अत्र कृत्वा सुपुण्यं च भुङ्क्तेऽन्यत्र शुभं फलम् ॥
वही ९४ । ७६

धन्यं भारत वर्षं तु पुण्यदं शुभदं वरम् ।
गोपीपादाब्जरजसा पूतं परम् निर्मलम् ॥
वही ९४ । ७७

अपि च

धन्यो यशस्यो द्वीपानां जम्बूद्वीपः सुदुर्लभः ।
यत्र भारतवर्षं तु सर्वेषामीप्सितं वरम् ॥
वही ९७ । २४

अहो भारतेवर्षे तु पुण्यं वृन्दावनं वनम् ।
राधापादाब्जसंस्पर्शरजः पूतं सुरेप्सितं ॥
वही ९७ । २५

त्रैलोक्ये पृथिवी धन्या मान्या पुण्यवती सती ।
तत्र भारतवर्षं च कर्मणां फलदं शुभम् ॥
वही १२३ । ७

ईदृशोऽयं भक्तिदेशः यत् राजशेखरेण मनीषिणा कूर्ममूर्त्याभिनन्दितः वन्दितश्च । यतः

"देशोऽयमस्ति परमः पवित्रः"

"तदाहुः :—द्वीपान्यष्टादशात्र क्षितिरपि नवभिर्विस्तृता स्वांगखंडैरेकोऽम्भोधि-
र्दिगन्त प्रविसृत सलिलः प्राज्यमेतत्सुराज्यम् ।"

एतत् प्राज्यं सुराज्यं च नवखंडं चापि भारतमेव ज्ञातव्यम् । यत उक्तं

विष्णुपुराणे—

तैरिदं भारतं वर्षं नव भेदमलंकृतम् ॥ विष्णु पु० २ । १ । ४१

इदं सत्यमेव यत् राजशेखरयुगे भारतं मातंगानां म्लेच्छानाम् गजानां (गर्जनकानां गाजनकानां वा) वा अभावे 'प्राज्यं सुराज्यमेवासीत्—

"मातंगानामभावे मदमलिन मुखैः प्राप्तमाशाकरीन्द्रैः ।
जाते रत्नापहारे दिशि दिशि ततयो भान्ति चिन्तामणीनाम् ।
छिन्नेषूद्यानवापी तरुषु विरचिताः कल्पवृक्षा रिपूणां
यस्योदञ्चत्रिवेलावलय फलभुजां मानसी सिद्धिरासीत् ॥"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आशा करीन्द्रैः दिग्गजैः[1] (क्षत्रियैः वा) मातंगाः मत्तगजाः (म्लेच्छाः) नाशिताः। तदेव मानसी सिद्धिः अभिलषितफलप्राप्तिरासीत्। त्रिवेला-त्रिसमुद्र मण्डितं भारतं निराश्रयं चासीत्।

अत्र राजशेखरेण तत्कालीनमितिहासः सुचित्रितसेव। पूर्वकाले सिन्धु-प्रदेशः ताजिकैः आरबीयैः पराभूतं। उक्तमभिलेखे—

"अशेषलोकसंताप कलापदः ताजिकानलः।
असिधारा जलेन प्रसभं शमितः॥

कार्पस० इ० इ० भा० ४, पृ० १०६

तदनन्तरं गर्जनकाः (गाजनकाः गजा वा) उग्ररूपेण, भारतं आक्रन्त्वा दारुणाः दुर्वारवारणा एव। तएव दिग्गजाः दिक्पालाः क्षत्रियाएव धर्मत्रातारः राष्ट्ररक्षकाश्च आसन्। मातंगैः गजैः वा नाना प्रकारैराक्रान्ता नाना देशाग्रहार-भूमयश्च।

क्षुधितं राष्ट्रम्। संस्कृतचिन्तकैश्च गजा द्विविधा विभक्ताः—

"मत्तहस्ती........हिंसा विहारी........"

दशकुमारचरिते पृ० १६७-१६८

"मातंगपतिः मृत्युरेवैष मृत्युविजयो हिंसाविहारी"

तत्रैव पृ० १६९

त्वयेय 'व्यालहस्ती' तत्रैव पृ० २६७

'द्विपमदगन्ध' यशस्तिलके पृ० १७

स्पष्टमेव निरुक्तिवचनात्—

'वारणो वारणात्', 'गर्जनाद्गजः'

ब्रह्म वै०, उप० ७। ३५०

'मत्तं यातीति मातंगो' तत्रैव ७। ३५१

अपि च मतंग विषयोद्भवा[2] मातंगा।
गर्जनक देशोद्भवा[3] गर्जनकाः गजाः वा।
अस्तु मातंगाः गजाः म्लेच्छाः गजनवय एव।
सत्यमेव भारतं महावर्षम् तस्मिन काले—
स्वातन्त्र्यम् सौराज्यमनुभवन् महदेवासीत्।

१—उक्तं यशस्तिलके—
'एवं तस्य धरोद्धार कुलशिखरिणः करिण एव......'
एलोरा के कैलाश मन्दिर में भी शिल्पी ने भी इसे मूर्त्त किया है।
तत्रैव पृ० २५

२—गरुड़ पु०, पूर्व० ६८। १८:
श्यामाः पुण्ड्रभवा मतंगविषयेनात्यन्तपीतप्रभाः॥

३—पृथ्वीराज विजय : १। ४९-५०, ५। ११३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अस्य नवभेदाः—

भरतो नाम राजभूदाग्नीध्रः प्रथितः क्षितौ ।
यस्येदं भारतंवर्षं नाम्ना लोकेषु गीयते ॥
स्कन्द पु० ७ । १ । १७२ । २

स चक्रे तपो घोरं क्षेत्रेऽस्मिन् पार्वतिप्रिये ।
दिव्यं वर्षसहस्रं तु प्रतिष्ठाप्य महेश्वरः ॥
वही ७ । १ । १७२ । ३

पुत्रकामो नरश्रेष्ठः पूजयामास शंकरम् ।
ततस्तुष्टः स भगवान्वरं दातुं समुत्सुकः ॥
वही ७ । १ । १७२ । ४

अष्टौ पुत्रान्ददौ तस्मै कन्यां चैकां यशस्विनीम् ।
सतु प्राप्याभिलषितं कृतकृत्यो नराधिपः ॥
वही ७ । १ । १७२ । ५

भारतं नवधा कृत्वा पुत्रेभ्यः प्रददौ पृथक् ।
तेषां नामांकितान्येव ततो द्वीपानि जज्ञिरे ॥
वही ७ । १ । १७२ । ६

इन्द्रद्वीपः कसेरुश्च ताम्रवर्णो गभस्तिमान् ।
नाग द्वीपस्तथा सौम्यो गान्धर्वस्त्वथ चारुणः[1] ॥
वही ७ । १ । १७२ । ७

अयं तु नवमो द्वीपः कुमार्या संज्ञितः प्रिये ।
अष्टौ द्वीपाः समुद्रेण प्लाविताश्च तथा परे ॥
वही ७ । १ । १७२ । ८

ग्रामादि देशसंयुक्ताः स्थिताः सागरमध्यगाः ॥
एक एव स्थितस्तेषां कुमार्याख्यस्तुसांप्रतम् ॥
वही ७ । १ । १७२ । ९

बिंदुसरः प्रभृत्येव सागराद्दक्षिणोत्तरम् ।
योजनानां सहस्रं तु एकं विस्तीर्ण एव तु ॥
वही ७ । १ । १७२ । १०

इलावृतं वर्षम्, रम्यकं वर्षम्, हिरण्मयं वर्षम्, उत्तरकुरु वर्षम्, हरिवर्षं,

---

१—अस्य 'वारुणः इति शुद्धपाठः ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतं च सप्तैतान् जम्बूद्वीपस्य खण्डान् वर्णयित्वा राजशेखरोऽपि भारतस्य नवभेदान् सूचयति—

"तत्रेदं भारतं वर्षमस्य च नवभेदाः। इन्द्रद्वीपः कसेरुमान्, ताम्रपर्णो, गभस्तिमान्, नागद्वीपः, सौम्यो, गन्धर्वो, वरुणः, कुमारीद्वीपश्चायं नवमः।"

अयमेव अस्माकं जन्मभूमिः इति विवक्षा। यत्र "पञ्चशतानि जलं।" रामायणेऽपि उक्तं—

नदीशतानां पञ्चानां जलं कुम्भैरुपाहरन्।
रामा० युद्ध का० १२८। ५३ (१)

विश्वस्य मातरः सर्वाः सर्वाश्चैव महाफलाः॥
भीष्म पर्व ९। ३७

भारतं च 'पंचस्थलमितिविभागेन प्रत्येकं योजनसहस्रावधयो दक्षिणात्समुद्रदद्रिराजं हिमवन्तं यावत्परस्परमगम्यास्ते।

तदेव भारतवर्षं चक्रवर्तिक्षेत्रं विजयमानो राजा चक्रवर्ती भवति।

अस्य स्थितिः—

"कुमारीपुरात्प्रभृति बिन्दुसरोऽवधि योजनानां दशशती चक्रवर्तीक्षेत्रम्।"

चक्रवत्तिक्षेत्रेऽस्मिन् कुमारीद्वीपे सप्त कुलपर्वताः—

"विन्ध्यश्च पारियात्रश्च शुक्तिमानृक्षपर्वतः।
महेन्द्रसह्यमलयाः सप्तैते कुलपर्वताः॥"

आर्यावर्तः—"पूर्वापरयोः समुद्रयोर्हिमवद्विन्ध्ययोश्चान्तरमार्यावर्तः।"

पूर्व देशः—"तत्र वाराणस्याः पुरतः पूर्वदेशः। यत्रांगवंगकलिंग कोसल तोषलोत्कलमगध मुद्गर विदेहनेपालपुण्ड्रप्राग्ज्योतिष तामलिप्तकमलद मल्लवर्त्तक सुह्म ब्रह्मोत्तर प्रभृतयो जनपदाः।"

"बृहद्गृह लोहितगिरि चकोर दर्दुर नेपाल कामरूपादयः पर्वताः। शोण लौहित्यौ नदौ। गंगाकरतोया कपिशाद्याश्च नद्यः। लवली ग्रन्थि पर्णकागुरु द्राक्षा कस्तुरिकादीनामुत्पादः।"

दक्षिणापथ—"माहिष्मत्याः परतो दक्षिणापथः। यत्र महाराष्ट्र माहिषकाश्मकविदर्भकुन्तल क्रथ कैशिक सूर्पारक काञ्ची केरल कावेर मुरल वानवासक सिंहल चोल दण्डक पाण्ड्य पल्लवगाङ्गनाशिक्य कौङ्कण कोलगिरि वल्लर प्रभृतयो जनपदाः। विन्ध्य दक्षिणपाद महेन्द्र मलय मेकल पाल मञ्जर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सह्य श्रीपर्वतादयः पर्वताः। नर्मदा तापीपयोष्णी गोदावरी कावेरी भैमरथी वेणा कृष्णवेणी वञ्जुरा तुंगभद्रा ताम्रपर्ण्युत्पलावती रावणगङ्गाद्या नद्यः। तदुत्पत्ति मलयोत्पत्त्या व्याख्याता।''

तत्रापि रावणगंगा सिंहलेषु—

जेत्रा सुराणां समरेष्वजस्रं वीर्यावलेपोद्धतमानसेन।
लंकाधिपेनार्द्धपथे समेत्य स्वर्भानुनेव प्रसभं निरुद्धः॥

गरुड़ पु० ७० । २

तत्सिंहलीचारुनितम्बबिम्बविक्षोभितागाध महाह्रदायाम्।
पूगद्रुमाबद्ध तटद्वयायां मुमोच सूर्यः सरिदुत्तमायाम्॥

वही ७० । ३

ततः प्रभृति सा गंगा तुल्यपुण्यफलोदया।
नाम्ना रावणगंगेति प्रथिमानमुपागता॥

वही ७० । ४

... ...

ये तु रावण गंगायां जायन्ते कुरुविन्दकाः।
पद्मरागघनं रागं बिभ्राणाः स्फटिकार्चिषः॥

वही ७० । १४

पश्चाद्देशः—''देव सभायाः परतः पश्चाद्देशः। तत्र देवसभ सुराष्ट्र दशेरक त्रवण भृगुकच्छक कच्छीयानर्त्तार्बुदब्राह्मणवाहयवन प्रभृतयो जनपदाः। गोवर्धनगिरिनगर देवसभ माल्यशिखरार्बुदादयश्च पर्वताः। सरस्वती श्वभ्रवती वार्तघ्नी महीहिडिम्बाद्या नद्यः। करीर पीलु गुग्गुलु खर्जूर करभादीनामुत्पादः।''

उत्तरापथः

''पृथुदकात्परत उत्तरापथः। यत्र शककेकयवोक्काण हूणवाणायुज काम्बोज वाह्लीक वह्लव लम्पाककुलूत कीर तङ्गण तुषार बर्बर हरहूरव हूहुक सहुडहंसमार्ग रमठ करकण्ठ प्रभृतयो जनपदाः। हिमालयकलिन्देन्द्रकीलचन्द्राचलादयः पर्वताः गंगा सिन्धु सरस्वती शतद्रु चन्द्रभागा यमुनेरावतीवितस्ताविपाशाकुहूदेविकाद्या नद्यः। सरलदेवदारु द्राक्षा कुंकुम चमराजिन सौवीर स्रोतोञ्जन सैन्धव वैदूर्य तुरङ्गाणामुत्पादः।''

मध्यदेशः—''हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यंयत्प्राग्विनशनादपि।
प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्त्तितः।''

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्तर्वेदी—"विनशनप्रयागयोर्गंगायमुनयोश्चान्तरमन्तर्वेदी।"

द्वीपान्तर—"द्वीपान्तराणां ये देशाः पर्वताः सरितस्तथा।
नातिप्रयोज्याः कविभिरिति गाढं न चिन्तिता।"

एष देशः

"यस्य च च······काश्मीर के सरारुणित स्तुतिमुखर······विदितादुदयाचलदरीसंदोहा······संदोहवदमृतापगाप्रवाहापहसितयशः········आ सेतुबन्धमेखला······मन्दरधराधरनितम्ब······कीर्तिमन्दाकिनी तरंग······तुहिनशैलचूलिका······गायन्ति गुणविजृम्भितानि जनपदगोप्यः।" यशस्तिलक (काशी) पृ० ४७–४८

एषा धराङ्गना—

"क्षीरसागर रशनालंकृताया गंगादि नदी
सहस्र हारयष्टि राजिताया धराङ्गनाया।"

दश कुमार चरित पृ० २४४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट २

कुमारिकाखण्ड देश तालिका

स्कन्द पुराण के माहेश्वर खंड के कुमारिका खण्ड में (अ० ३७–३९) पौराणिक भुवनकोश एक नये ढंग से दिया गया है। सांख्य सृष्टि (प्रकृति और प्रधान पुरुष के संयोग) से ही ब्रह्माण्ड की प्रतिष्ठा हुई। पाताल (अध: = नीचे), जहां नाग और दैत्यों का निवास था, देवताओं का निवास ऊर्ध्व (ऊपर = स्वर्ग) और मानव-स्थान मध्य में था।[1] ये ही तीन लोक थे।

सप्तद्वीपों वाली पृथिवी में जम्बूद्वीप अत्यन्त प्रसिद्ध भूखण्ड था।[2] आद्य प्रजापति मनु स्वायंभुव के पुत्र प्रियव्रत दस राजकुमारों के पिता थे। उनमें तीन तो सन्यासी हो गये थे और सातों पुत्रों ने सात महाद्वीपों ने आधिपत्य प्राप्त किया। ज्येष्ठ आग्नीध्र जम्बूद्वीप के राजा हुए। उनके नौ लड़के जम्बूद्वीप के स्वामी बने। जम्बूद्वीप के नौ वर्षों में से हिमालय और समुद्र के बीच में स्थित भूखण्ड को अग्नीध्र के पुत्र नाभि के नाम पर ही नाभिखंड कहा गया—

हिमाद्रि जलधेरन्तर्नाभिखण्डमितिस्मृतम् ।।

स्कन्द पु० १ । २ । ३७ । ५५

नाभि के पुत्र का नाम ऋषभ था और ऋषभ के पुत्र भरत से ही नाभिखण्ड ही भारत वर्ष भी कहलाने लगा—

नाभेः पुत्रश्च ऋषभ ऋषभाद्भरतोऽभवत् ।
तस्य नाम्नात्विदं वर्षं भारतं चेति कीर्त्यते ।।

स्कन्द पु० १ । २ । ३७ । ५७

यह भारत ही कर्म भूमि कही गई है जहां मनुष्य पुण्य-कर्मों के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है—

अत्र धर्मार्थकामानां मोक्षस्य च उपार्जनम् ।
अन्यत्र भोगभूमिश्च सर्वत्र कुरुनन्दन् ।।

स्कन्द पु० १ । २ । ३७ । ५७

भरत-पुत्र शतश्रृंग के आठ पुत्र और नवीं कुमारिका नाम की पुत्री थी जिनके नामों पर ही भारतवर्ष के नव-भेद (नवद्वीप) हुए। नवां द्वीप ही

१—स्कन्द पु० १ । २ । ३७ । ५-१४
२—वही १ । २ । ३७ । १५-४४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुमारीद्वीप या कुमारिका खण्ड था जिसे भारत भी कहते थे (वराह पुराण, अ० ८५)। इसे भी आगे चलकर ७२ विभेदों में बांटा गया जिससे भारतखंड को ७२ देशों वाला कहा गया है। प्रत्येक प्रदेश की एक निश्चित ग्राम संख्या थी जिससे सम्पूर्ण भारतवर्ष ७२ देशों और ९६ करोड़, ७२ लाख ग्रामों और पत्तनों का विशाल भूखण्ड था जिसका समुद्र तट भी ३६ हज़ार (प्रमाण) वाला था। ७२ देशों के स्थान पर ७५ देशों का उल्लेख मिलता है। इस देश तालिका के महत्व की ओर श्री सी० वी० वैद्य[1], डा० हेमचन्द्र रायचौधरी[2] और डा० डी० सी० सरकार[3] का ध्यान गया है। डा० रायचौधरी के विचार में "माहेश्वर खंड के कुमारिकाखंड में दी हुई भौगोलिक सामग्री भारतीय भूगोल पर नया प्रकाश डालती है। वस्तुतः यह सामग्री भुवनकोश से अत्यन्त विशद हैं।" वैद्य महोदय "कुमारिका खंड की देश तालिका का विवेचन करते हुए कहते हैं "महाभारत की देश तालिका ईसा संवत के पूर्व-युगीन भारतीय इतिहास के लिये महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार बराह-मिहिर की देश-तालिका ईसा की पाचवीं शती के लिये महत्वपूर्ण है। युअन-च्वांग की भौगोलिक यात्रा से ईसा की ७वीं शताब्दी पर सूचना मिलती है। स्कन्दपुराण की कुमारिकाखंड (अ० ३९) देश तालिका भी भारतीय इतिहास के लिये अत्यन्त उपयोगी है और इससे ईसा की नवीं शताब्दी पर विस्तृत विवरण मिलता है।"[5]

कुछ तो पौराणिक पाठ ही अशुद्ध हैं और कुछ नाम भी ऐसे हैं कि जिनके बारे में इस समय कुछ भी ज्ञात नहीं है। निस्सन्देह कुछ प्रदेश द्वीपान्तर खंड में भी स्थित थे परन्तु उनके भी विषय में कुछ निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ संस्करण की सहायता से कुछ नाम तो ठीक-ठीक मिल जाते हैं।

१—नीवृत मंडल

यह ४ करोड़ ग्रामों का देश था। इसकी समता जूनागढ़ शिला लेख में उल्लिखित नीवृत से की जा सकती है।

१—हिस्ट्री ऑफ हिन्दू मेडेवेल इण्डिया, भाग २ पृ० ३९-४२
२—जर्नल यू० पी० हिस्टारिकल सोसाइटी जिल्द १८, भाग १-२, पृ० ३७
३—जाग० ए० मेड० इ०, पृ० २०१-२०५
४—जर्नल यू० पी० हिस्टारिकल सोसाइटी जिल्द १८, भाग १-२, पृ० ३७
५—हिस्ट० मेड० हि० इ०, भाग २, पृ० ३९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२—बालाक

यह ढाई करोड़ ग्रामों का देश था। संभवत: यह उत्तर-पश्चिमी प्रदेश का देश था जो बलाका[१] या बालाकी[२] घोड़ों के लिये प्रसिद्ध था। यह बलख नहीं हो सकता है (नं० ६१, बाल्हीक) अत: इसकी पहचान बालोक्ष या बलोचिस्तान से की जा सकती हैं। अल्बरूनी (सचाउ, भाग १, पृ० २०८) के अनुसार मक्रान और बलोचिस्तान घोड़ों की अच्छी नसल के लिये प्रसिद्ध थे।

३—खुरासाहृणक

वेंकटेश्वर प्रेस के स्कन्द पुराण में पुरसाहृणक[३] पाठ मिलता है परन्तु यह अशुद्ध है, क्योंकि लखनऊ संस्करण में खुरासाहृणक[४] पाठ मिलता है जो उस युग का प्रसिद्ध देश खुरासान ही था। इसमें १$\frac{1}{4}$ करोड़ ग्राम थे।

४—अन्धल

यह दक्षिण भारत का प्रसिद्ध अन्ध्र देश ही है, जिसमें ४ लाख ग्राम सम्मिलित थे।

५—नेपाल

इस सुप्रसिद्ध देश में १ लाख ग्राम सम्मिलित थे।

६—कान्यकुब्ज देश

इसमें ३६ लाख ग्राम सम्मिलत थे जिससे उस युग में इसके विस्तार का परिचय मिलता है।

१—महाभारत, भीष्म पर्व ५२। १८:

चलत्बहु पताकेन बलाका वर्ण वाजिना।
समुच्छ्रितैमहाभीम नदद् वानरकेतुना॥

२—जायसी, पद्मावत २६। ४:

सोरह सहस घोर घोरसारा। साँवकरन बालका तुखारा॥

वही ४०४। ७:

कहाँ मोर तुरंग बालका बली। कहाँ मोर हस्ती सिंहली॥

वही ५१३। ३:

जाति बालका समुंदथहाए। माँथे पूँछि गगन सिर लाए॥७८

३—स्कन्द पु० १। २। ३९। १२८ (१)

४—वही, कुमारिका खंड ३३। ६३ (१)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७—गजन (गाजनक)

यह ग़ज़नी देश था जिसमें ७२ लाख ग्राम सम्मिलित थे। निस्सन्देह गज़नी एक विशाल साम्राज्य था। जायसी ने भी पद्मावत में इस देश का उल्लेख गौर देश के साथ किया है।[१] डा० अग्रवाल का मत है कि "गाजना-गजनी का शुद्ध रूप यही था।.........पृथ्वी चन्द्र चरित्र (१४२१ ई०) में भी गाजण रूप है।" जैसा कि ऊपर कहा गया है यह गज-घरा या गज देश कहलाता था जिसे ही मतंग-विषय भी कहा गया है।

स्कन्द पुराण के लखनऊ संस्करण में गाजनक के स्थान पर पाठ जनक देश हैं (कुमारिका खंड अ० ३३। ६५ (१)।

८—गौड देश

१८ लाख ग्रामों का यह देश था। प्राच्य का गौड देश प्रसिद्ध ही था जो विस्तृत साम्राज्य था (पीछे देखिये)।

गाजनक के बाद ही इसका उल्लेख होने तथा जायसी द्वारा 'गौर-गाजना' का वर्णन करने से इसकी समता गजनी के पड़ोसी ग़ोर साम्राज्य से करना समीचीन है।

९—कामरूप (९ लाख ग्राम)

यह प्रसिद्ध देश था जिसकी पहचान आधुनिक आसाम से की गई है।

१०—डाहल (९ लाख ग्राम)

डाहल या डभाल आधुनिक बघेल खंड ही है जो गंगा और नर्मदा के बीच स्थित था (भागीरथी-नर्मदर्योमध्यम् डाहल मण्डलम्)[२] इसे चेदि भी कहा

१—पद्मावत, ३५। ५ :

हेम सेत औ गौर गाजना जगत बात फिरि आई॥

वही, ४२। १० :

हेम सेत औ गौर गाजना बंगतिलंग सब लेत॥
सातौ दीप नवौ खंड जुरे आइ एक खेत॥

वही पृ० ४३१ (चिरगांव संस्करण—डा० वासुदेवशरण अग्रवाल द्वारा सम्पादित)।

२—कार्पस इ० इ०, भाग ४, पृ० ३२३
डा० मीराशी द्वारा उद्धृत (जर्नल ऑफ आन्ध्र हिस्ट० रि० सो०, जिल्द ४ पृ० १५६)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाता था। डाहल के साथ वेदसंज्ञे (डाहले वेदसंज्ञे) पाठ मिलता है। डा० सरकार[१] वेद को चेदि मानते हैं। अतः स्पष्ट है कि 'डाहले चेदि संज्ञे' ही शुद्ध पाठ हो सकता है।

११—कान्तिपुर (९ लाख ग्राम)

यह प्रदेश महाभारत का कान्ति देश (भीष्म पर्व ९। ४०) ही है जो उत्तर प्रदेश के कान्तित (मिर्जापुर प्रान्त) के आस-पास का ही भूखण्ड था।

१२—माचीपुर (९ लाख गांव)

यह युअन च्वांग का मातीपुर (मा-ती-पु-लो) ही था जिसकी पहचान बिजनौर ज़िले में (उत्तर प्रदेश) स्थित मण्डावर से की गई है।

१३—ओड्डियान (९ या ७ लाख ग्राम)

यह उत्तरापथ में उद्यान-प्रदेश ही था जो स्वात नदी की घाटी में स्थित पर्वतीय देश था।

१४—जालन्धर (९ लाख ग्राम)

यह प्राचीन और प्रसिद्ध त्रिगर्त राज्य ही था। यह आधुनिक जालन्धर प्रान्त ही है जिसका नाम इसी नाम के दैत्य-शासक पर आधारित था।[२] यह एक प्रसिद्ध महापीठ था।[३]

१५—लोहपुर (९ लाख ग्राम)

यह लाहोर प्रान्त ही था।

१६—पाम्बीपुर (७ लाख ग्राम) अज्ञात है।

१७—रटराज्य (७ लाख ग्राम)

यह महाराष्ट्र ही है।

१८—हरिआल (५ लाख ग्राम)

यह पूर्वी पंजाब का हरिआना प्रदेश ही था। मान कवि के राजविलास में भी हरिआल देश का उल्लेख किया गया है।[४]

१—जाग० ऐ० मेड० इ०, पृ० २०२
२—स्कन्द पु० २। ४। २०। १२-३६
३—वही, ७। १। १३२। ४
४—राजविलास ८। १५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१९—द्रड (३½ लाख ग्राम)

संभवतः यह दरद (दरदिस्तान) देश था जो किशनगंगा की ऊपरी घाटी में काश्मीर से सटा हुआ भूखंड था।

इड विषय

लखनऊ संस्करण (कुमारिकाखंड ३३। ७० (१)) में इड विषय का पाठ है। इसकी पहचान राजस्थान के ईडर राज्य से की जा सकती है।

२०—वम्भणवाहक (३½ लाख ग्राम)

यह ब्रह्मणवाह या बहमनाबाद (सिन्ध, प्रान्त) ही था।

२१—नीलपुर (२१ हजार ग्राम) अनिश्चित है।

२२—अमल (या मल) विषय (१ लाख ग्राम) अज्ञात है।

२३—नरेन्दु (१¾ लाख ग्राम) अज्ञात है।

डा० सरकार इसकी पहचान वरेन्दु से करते हैं। परन्तु वरेन्दु का अलग उल्लेख मिलता है।

२४—अति-लांगल (१¾ लाख ग्राम)

यह लांगल देश (लांग-किय-लो)[१] का ऊपरी भाग था। संभवतः यह आधुनिक उत्तरी सरकार (आन्ध्र प्रदेश) का प्रान्त था।

तिलंगदेश

अतिलांगल के स्थान पर तिलंग देश का भी पाठ मिलता है।[२] यह तो प्रसिद्ध तेलिंगाना प्रदेश ही है जो गोदावरी और कृष्णा नामक नदियों के बीच स्थित है। तिलंग या तेलंगाना त्रिकलिंग का ही संक्षिप्त स्वरूप है।[३]

२५—मालव (१८०९००२ ग्राम) प्रसिद्ध मालवा देश है।

२६—सयम्भर (सपादलक्ष ग्राम)

शाकम्भर अथवा आधुनिक साम्भर प्रान्त है। यह चौहानों का प्रसिद्ध राज्य था।

१—बील, पृ० ४६४–४६५

२—स्कन्द पु०, कुमारिका खंड ३३। ७२ (२)

३—डे जाग० डिक०, पृ० २०४

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

२७—मेवाड (सपादलक्ष ग्राम) यह प्रसिद्ध मेवाड़ प्रदेश है—

धर्म देस मेवार धर, सब देसाँ सिरताज ॥

राज विलास १ । ६२

यह मेदपाट भी कहलाता था—

सब देस में सिरदार, उत्तम जहा आचार ।
महि मेदपाट समान, पुहवी न कोइ प्रधान ॥

वही १ । ८७

जिसका प्रधान गढ़ चित्रकोट या चित्तौर था—

मेदपाट महि मंडणह, चित्रकोट गढ़ चारु ।

वही १ । ९२

इसमें ८४ विशाल गढ़ सम्मिलित थे—

गुरु चौरासी गढ़नि, मही मेवार सुमंडन ।
अकल अभेद अभीत, बिसम परचक्र बिहंडन ॥

वही १ । ९४

२८—वागुरि (८० हज़ार ग्राम)

यह भी राजस्थान का एक छोटा परन्तु प्रसिद्ध राज्य था । मेवाड़ में १८ प्रदेश सम्मिलित थे और यह उनमें से एक देश था जिसे बागरी या बागर भी कहते थे ।[१] पूर्वी पंजाब के हिसार प्रान्त का वह भाग जो बीकानेर से मिला हुआ था वागुरि, वागर, या बगोर देश था । यह वागड ही था जिसकी पहचान राजस्थान के डूंगरपुर प्रान्त से की गई है ।

२९—गुर्जरत्रा (गुर्जर देश)

७० हजार ग्रामों का यह देश था । यह दक्षिणी मारवाड़ प्रदेश ही था ।

३०—पाण्डु विषय (७० हजार ग्राम)

इसकी पहचान उत्तर-पाण्डव जनपद[२] या मथुरा मण्डल से की जा सकती है ।

१—राजविलास १ । १२१-१२२
२—योगवसिष्ठ ३ । १०४ । २

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३१—जहाहुति (४२ हजार ग्राम)

यह देश चन्देल शासक जज या जय-शक्ति के नाम से प्रसिद्ध जेजाकभुक्ति ही था जो बुन्देलखण्ड का खजुराहो-मण्डल ही है।

३२—काश्मीर मंडल (६८ हजार ग्राम)

३३-३४—कौंकण और लघुकौंकण

ये अपरान्त या कोंकण प्रदेश के दो विभाग थे जिनमें क्रमशः ३६ हजार और १४२२ ग्राम थे।

३५-३६—सिन्धु और अतिसिन्धु

ये भी सिन्ध प्रदेश के दो विभाग थे। संभवतः अतिसिंधु ऊपरी सिन्ध प्रान्त था।

३७—कच्छ मण्डल (१४२२ ग्राम)

पश्चिम भारत का प्रसिद्ध देश था। आधुनिक कच्छ है।

३८—सौराष्ट्र (५५ हजार ग्राम) आधुनिक सौराष्ट्र

३९—लाड (२१ हजार ग्राम)

यह लाट प्रदेश ही है जिसमें गुजरात के नौसारी और भड़ोच प्रान्त सम्मिलित थे।

४०—अश्वमुख (१० हजार ग्राम)

वृहत्संहिता (१४। २५, १६। ३५) में भी इसका उल्लेख मिलता है।

संभवतः यह युअन च्वांग द्वारा उल्लिखित अयोमुख ही था जिसकी पहचान कनिंघम महोदय ने इलाहाबाद से १०४ मील उत्तर पश्चिम दिशा में स्थित डौंडिया खेड़ा से की है।[१] डा० मीराशी ने स्मिथ महोदय के मत का समर्थन करते हुए इसकी समता उत्तर प्रदेश के रायबरेली और प्रतापगढ़ से की है।[२]

४१—एकपाद (१० हजार ग्राम)

महाभारत (सभापर्व ५१। १८) और वृहत्संहिता (१५। ५–७) में इसका उल्लेख मिलता है।

१—कनिंघम ए० जाग०, पृ० ३८७

२—कार्पस इ० इ०, भाग ४ पृ० ३३५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ये लोग मेगस्थनीज द्वारा उल्लिखत 'आकीपडीज़' ही हैं जो घोड़ों से भी तेज दौड़ने वाले थे।[१] एकपाद, शूर्पारक, संजयन्ती, नामक सहदेव द्वारा विजित देशों पर विचार करते हुए डा० मोतीचन्द्र इस जन को गुजरात, कच्छ और कठियावाड़ से सम्बद्ध बताते हैं। उनके अनुसार ये गुजरात के भील थे (उपायन पर्व पृ० ६०)। परन्तु हम इससे सहमत नहीं है। लाट, कच्छ, आनर्त्त, गुर्जर, आदि देशों के उल्लेखों से एकपाद देश को यहां स्थित नहीं मान सकते। महाभारत के अनुसार उनका सम्बन्ध दक्षिण के वनवासक देश के साथ था (सभापर्व ३१। ६९)। रामायण के अनुसार 'जवनाश्चैकपादका:' (तेज जाने वाले एकपाद के निवासी) पूर्व में स्थित माने गये हैं।[२] इसे वृहत्संहिता और मार्कण्डेय पुराण भी पूर्व में स्थित बताते हैं।[३]

इस प्रकार उनकी स्थिति निश्चित नहीं है कि यह देश पूर्व में स्थित था अथवा दक्षिण में था।

४२—सूर्यमुख अथवा शूर्पनख (१० हजार ग्राम)

यह देश शूर्पारक (सोपारा, थाना प्रान्त, महाराष्ट्र) ही था।[४]

४३—एकबाहु (१० हजार ग्राम) अज्ञात है।

४४—संजायु देश (१० हजार ग्राम)

संभवत: यह देश आधुनिक संजन (महाराष्ट्र, थाना प्रान्त) ही था।

४५—शिव-देश (१० हजार ग्राम)

यह प्राचीन शिबि देश ही था। शिवपुर आधुनिक शोरकोट (झंग प्रान्त, पश्चिमी पंजाब) ही इसकी राजधानी थी।

४६—कालहयंजय (१० हजार ग्राम) अज्ञात है।

४७—लिंगोद्भव देश (१० हजार ग्राम) संभवत: आनर्त था।

१—क्लासिकल अकाउन्ट्स ऑफ इण्डिया पृ० २७२

२—किष्किंधा का० ४०। २२-२६

३—वृ० सं० १५। ५-७
मार्कण्डेय पु० ५८। ४८-५३

४—जाग० ऐ० मेड० इ० पृ० २०३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४८—भद्र (१० हजार ग्राम)

संभवतः बीकानेर का उत्तरी पश्चिमी भाग था जहां घग्घर नदी के तट पर भद्र स्थित था।

४९—देवभद्र (१० हजार ग्राम) अज्ञात है।

५०—चट (३६ हजार ग्राम)

संभवतः यह चेदि अथवा बघेल खण्ड ही था। परन्तु इसका उल्लेख डाहल के नाम से हो चुका है। अतः इसकी पहचान चट्टल या चिटगांव (जन्त्र चूड़ामणि अ० ५१) से की जानी चाहिये।

५१—विराट (३६ हजार ग्राम)

यह मत्स्यदेश था जो भरतपुर और अलवर में बसा हुआ प्रसिद्ध देश था।

५२—यमकोटि (३६ हजार ग्राम) अज्ञात है।

५३—रामक देश (रोमक देश)

१८ करोड़ ग्राम वाला यह देश विस्तृत भूखण्ड था जिसकी पहचान साल्टरेंज या बाल्तिस्तान से की गयी है।[१]

५४—तोमर देश (सपादलक्ष ग्राम)

संभवतः दिल्ली के आस-पास का क्षेत्र था जहां तोमरों ने राज्य किया था।

५५—कर्णाट (सपादलक्ष ग्राम)

दक्षिण का प्रसिद्ध देश है।

५६—पुंगल (सपादलक्ष ग्राम)

यह जैसलमेर से सम्बद्ध पुगल देश था। वहां भट्टी जाति शासन करती थी। यह देश ऊंटों के लिये प्रसिद्ध था।

५७—स्त्री राज्य (५ लाख ग्राम)

हिमालय पर ब्रह्मपुर के ठीक उत्तर में स्थित कमायूं और गढ़वाल क्षेत्रों से इसकी पहचान की गई है।

१—उपायन पर्व पृ० ५९

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५८—पुलस्त्य विषय (१० लाख ग्राम) अज्ञात है।

५९—काम्बोज (१० लाख ग्राम) उत्तरापथ का प्रसिद्ध राज्य है।

६०—कोशल (१० लाख ग्राम) प्रसिद्ध देश है।

उत्तर कोशल भी पाठान्तर होने से यह उत्तर कोशल ही मालुम पड़ता है।

६१—बाल्हीक (४ लाख ग्राम) प्रसिद्ध देश है।

६२—लंका देश (३६ हजार ग्राम) यह भी प्रसिद्ध देश था।

६३—कुरु देश (६४ हजार ग्राम)

मध्य देश का प्रसिद्ध प्राचीन देश है।

६४—किरात विजयोजयः (१½ लाख ग्राम) अज्ञात है।

६५—विदर्भ (५ लाख ग्राम)

दक्षिणापथ का प्रसिद्ध देश है।

६६—वर्धमान् (१४ हजार ग्राम)

प्राचीन वर्धमान भुक्ति अथवा आधुनिक बर्दवान है।

इसकी पहचान काठियावाड़ के आधुनिक वध्वान और इसके आस-पास के भूखंड से भी की जा सकती है।

६७—सिंहलद्वीप (१० हजार ग्राम)

यह आधुनिक सीलोन ही है। काव्य मीमांसा भी इसे दक्षिणापथ का देश बताती है।

६८—पाण्डु अथवा पाण्ड्य देश (३६ हजार ग्राम)

यह दक्षिणापथ का प्रसिद्ध देश है।

६९—भयानक देश (१ लाख ग्राम)

इसकी पहचान भादानक देश (मत्स्य राज्य के अधिकांश भाग) से की गई है।

७०—मगध (१ लाख ग्राम) पूर्व का प्रसिद्ध देश था।

७१—पाण्डु (पंगु देश) (६० हजार ग्राम), अज्ञात है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७२—वरेन्दु या वरेन्दक (३० हजार ग्राम)

इसकी पहचान माल्दा-राजशाही और बोग्रा जिलों से की गई है।

७३—मूलस्थान (२५ हजार ग्राम)

आधुनिक मुल्तान ही मूलस्थान कहलाता है। इस युग में मुल्तान में मुस्लिम सत्ता स्थापित हो गई थी।

७४—यवनदेश (४० हजार ग्राम)

मुल्तान के पास ही स्थित यवन देश की पहचान सिन्ध के अरब-राज्य से की जा सकती है।

७५—पक्षबाहु या यक्षवाहु (४ हजार ग्राम) अज्ञात है।

द्वासप्ततिरमी देशाः ग्रामसंख्याः प्रकीर्तिताः

इस प्रकार कुमारिका खंड की ७२ देशों (वस्तुतः ७५) की सूची (स्कन्द पु० १। २। ३९। १२५—१६२) समाप्त होती है। यहाँ पर विशेष ध्यान देने की बात है कि प्रत्येक देश में एक निश्चित ग्राम संख्या सम्मिलित थी, जिससे तत्कालीन ग्राम व्यवस्था के विकास और संगठन पर भी प्रकाश पड़ता है। इससे तत्कालीन शासन व्यवस्था का भी ज्ञान होता है जिसमें देश के ग्रामोंपत्तनों की संख्या नियत होती थी।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट ३

वेला कूलानि

वेलाकूलानि संख्यां च वक्ष्यामि तव तत्वतः ॥

स्कन्द पु० १।२।३९।१२६

उपर्युक्त कुमारी द्वीप की देश तालिका में ही ३६००० वेला कूलानि का उल्लेख किया गया है—

षटत्रिंशच्च सहस्राणि वेलाकूलानि भारत ॥

स्कन्द पु० १।२।३९।१६४

डा० डी० सी० सरकार 'वेलाकूलानि' का अर्थ बन्दरगाह या समुद्रपत्तन (हार्बर्स) करते हैं।[१] परन्तु वेलाकूल से समुद्र तट का बोध होता है जिसकी लम्बाई लगभग ३६००० (योजन) थी। भारतीय मनीषी समुद्र और समुद्र-तट की महत्ता से अपरिचित न थे। जलनिधि तटी[२] और वेला-कूल एक ही अर्थ के परिचायक हैं। राजशेखर ने भारतवर्ष को 'त्रिवेला-वलय'[३] कहा है। जलधि-त्रितय[४] की प्रसिद्धि भारत की मर्यादा रखने में थी। ये तीन समुद्र थे—पूर्व पयोधि, दक्षिण समुद्र और अपर[५] (पश्चिम) समुद्र। गौतमी पुत्र शातकर्णी को "तियसमुदपीत वाहनस"[६] का विरुद दिया गया है। हर्ष चरित्र भी 'त्रिसमुद्राधिपति सातवाहन नरेन्द्र'[७] का उल्लेख करता है। यज्ञ श्री शातकर्णी के सिक्कों पर भी दो मस्तूलों से युक्त जहाज़ को रूपांकित पाते हैं। इससे इस युग के सामुद्रिक-व्यापार और विचरण का प्रमाण मिलता है। सातवाहनों की राजधानी पैठन (प्रतिष्ठान) प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र था जहाँ सभी ओर से मार्ग आकर मिलते थे।

१—जाग० ए० मेड० ई०, पृ० २०१

२—का० मी० ७३। १६

३—वही, ९१। १६

४—वही, ९१। १०

५—हर्ष चरित पृ० २१८

६—वाशिष्ठीपुत्रपुलुमायी का १९ वें राज्यवर्ष का नासिक लेख, पंक्ति ३।

७—हर्ष चरित पृ० २५१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ईसा की प्रथम शताब्दी में लिखा हुआ (लगभग ८० ई०) 'पेरिप्लस आफ एरीथ्रियन सी' नामक ग्रन्थ भारतीय समुद्र तट के भौगोलिक और आर्थिक अध्ययन के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ को सामुद्रिक यात्रियों के पथ प्रदर्शन के लिये लिखा गया था और लेखक ने स्वयं भारतीय-वेला-तट की यात्रा की थी। इससे उसके विवरण की प्रामाणिकता विशेष रूप से मानी गयी है। उसके अनुसार भी पैठन भड़ोंच (भृगुकच्छ) से लगभग २०० मील दूर स्थित एक प्रसिद्ध नगर था। टॉलमी नामक प्रसिद्ध विद्वान ने भी (लगभग १५० ई०) भारत और दक्षिणी एशिया से सम्बद्ध भूगोल की पुस्तक लिखी। इसने स्वयं व्यक्तिगत यात्रा न की थी, यद्यपि वह भूगोल-विद्या का पंडित था। उसने यात्रियों और नाविकों से सूचनाएँ प्राप्त कीं। पहले के लिखे हुए ग्रन्थों से भी यथेष्ट सहायता ली। इसीलिये टॉलमी के भौगोलिक-वृत्त में दोष भी पाये गये हैं। फिर भी उसके ग्रन्थ से पश्चिम, दक्षिण और पूर्व वेला-तट का स्पष्ट चित्र प्राप्त होता है। युअनच्वांग के विवरणों से भी भारतीय समुद्र तट और वहां स्थित नगरों और देशों का परिचय होता है। अरब यात्रियों के विवरण भी महत्वपूर्ण हैं।

'पेरिप्लस ऑफ़ एरीथ्रियन सी' समुद्रं तट और पत्तनों का वर्णन करते हुए निम्न लिखित प्रदेशों, नगरों और बन्दरगाहों का उल्लेख करता है:—

सिन्थूज़—

इससे सिन्धु और उसके मुहानों का ज्ञान होता है। इसकी सात धाराएं थीं। यहीं पृष्ठ भाग में मीननगर सीथिया का प्रमुख नगर था।[१] मेहरौली के लेख से ज्ञात होता है कि चन्द्र नामक राजा ने सिन्धु के सात मुखों को पार कर बाल्हीकों को जीता था।[२] टॉलमी भी सिन्थोन का उल्लेख करता है।[३] बर्बरिकम् नामक प्रसिद्ध व्यापारिक नगर था। सिन्धु नदी और समुद्र के संगम को सिन्धु-सागर कहते थे।[४]

अबिरिया—

इससे मिला हुआ अबिरिया या आभीर देश था जो कच्छ की खाड़ी के उत्तर में स्थित था।

१—क्ला० अ०, पृ० ३००

२—चन्द्रका मेहरौली लेख : तीर्त्वा सप्तमुखानि येनसमरे सिन्धोर्जिता बाल्हिका:।।

३—वही पृ० ३६५

४—स्कन्द पु०, १। २। ५८। ६

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पेरिप्लस में इसके समीप ही कच्छ की खाड़ी के पास 'बरक' और 'अरिअक' नामक स्थलों का उल्लेख मिलता है। बरक की खाड़ी और अरिअक की पहचान के विषय में अब भी सन्दिग्धता है और उनका अभीतक कोई उपयुक्त भारतीय नाम नहीं दिया गया है। संभवतः अरिअक वृहत्संहिता का आर्यक देश है।[१]

बरक की पहचान बर्करेश[२] से की जा सकती है जिसे महीसागर के निकट ही स्थित बताया गया है। दक्षिण समुद्र में खम्भात (स्तम्भ तीर्थ) के निकट ही कुमारेश, स्तम्भेश, बर्करेश्वर, महाकाल और सिद्धेश नामक पांच प्रसिद्ध शैव तीर्थ थे।[३] बर्करेश या बर्करेश्वर ही बरक था। संभवतः इसे ही बर्करीपुर[४] भी कहते थे।

बर्करेश या बरक के समीप ही स्तम्भ तीर्थ[५] (खम्भात) भी मही सागर (जहां मही नदी समुद्र में मिलती है) में स्थित था। सिंहल से यहां तक समुद्र-यात्राएं होती थीं।[६] स्तम्भ तीर्थ में ही बर्करी के समान मुख वाली कुमारिका ने (जिसके नाम पर ही कुमारी द्वीप और कुमार पुर की संज्ञायें पड़ीं) बर्करेश नामक शिवलिंग की स्थापना की थी।

सिरस्टीन या सौराष्ट्र भी समुद्र तटीय देश था जहां व्यापारिक जहाज़ आते-जाते रहते थे[७]।

इसके बादही दक्षिण की ओर नर्मदा नदी के मुहाने पर बैरीगज़ा या भड़ोच का अति प्रसिद्ध व्यापारिक नगर था।[८] अपलडटस और मिनेन्डर के सिक्के बैरीगज़ा की बाज़ारों में चलते थे।[९]

१—वृ०सं० १४। १५:

तुम्बवन कार्मणेयक याम्योदधि तापसाश्रमा ऋषिकाः।
कांची मरुचीपट्टन चेर्यार्यक सिंहला ऋषभा :॥

२—स्कन्द १। २। ३९। १७४

३—वही १। २। १। ९-१३

४—स्कन्द पु० ४। १। ४७। ३५

५—वही १। २। ३९। ७१

६—वही १। २। ३९। ८७-८९ ; १। २। ३९। १०६-१११।

७—क्ला० अ० पृ० ३०२

८—वही पृ० ३०२

९—वही पृ० ३०३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूर्व की ओर इसी क्षेत्र में 'ओजेन' (उज्जैन)नामक प्रसिद्ध राजनगर था जहाँ से बहुत सा व्यापारिक सामान बैरीगज़ा की मंडी में लाया जाता था।[1]

बैरीगज़ा से नीचे दक्षिण की ओर सीधा दखिनावदेस (या दक्षिणापथ) विस्तृत था। दक्षिणापथ में पेथन (प्रतिष्ठान) जो बैरीगज़ा के दक्षिण स्थित था और पेथन के पूर्व में स्थित तगर दक्षिणापथ के दो प्रसिद्ध नगर थे।

इसके आगे सिन्धु-तट पर स्थित सुप्पार (शूर्पारक = सोपारा, थाना प्रान्त, महाराष्ट्र), कल्लियन (कल्याण), बिजन्टिअन (वैजयन्ती)[2] आदि प्रसिद्ध समुद्र-पत्तन थे जिनका उल्लेख भारतीय साहित्य और लेखों में भी हुआ है। अन्त में हम पश्चिम समुद्र के दक्षिण सिरे पर पहुँचते हैं जहाँ कुमार या कुमारी (केप कमोरिन)[3] स्थित था। इसे काव्यमीमांसा में कुमारी पुर[4] बताया गया है।

जहाँ से समुद्रतट कुछ पूर्व की ओर मुड़ता है, वहीं समुद्र में 'पालेसमुन्द' या तप्रोबेन नामक द्वीप स्थित था। यह पारेसिन्धु या ताम्रपर्ण सीलोन ही है।

यहाँ से पूर्व समुद्र तट पर उत्तर की ओर चलते हुए मसलिया[5] या मसली पट्टम पहुँचते हैं। आगे चलकर देसारेन (दशार्ण)[6] पहुँचते हैं। इसी तरह यात्रा करते हुए हम गंगा नदी तक पहुँचते हैं। आगे चलकर सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) और चीन तक सामुद्रिक मार्ग जाता है।[7]

इस प्रकार स्पष्ट है कि वेलातट आर्थिक और व्यवसायिक दृष्टि कोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण क्षेत्र था जिससे प्राचीन विद्वान अपरिचित न थे।[8]

इसके अतिरिक्त सागर-वेला हमारे देश की सीमा थी और यही आधुनिक युग तक हमारी रक्षा करता रहा—

सागरः समयं कृत्वा न वेलामतिवर्तते ॥

रामा० अयोध्या का० १२। ४४

१—वही, पृ० ३०३-३०४

२—वही पृ० ३०५

३—वही पृ० ३०६-३०७

४—का० का० मी०

५—क्ला० अ० पृ० ३०७

६—वही पृ० ३०७

७—वही पृ० ३०८

८—मनुस्मृति ८। १५७ : समुद्रयान कुशला देशकालार्थदर्शिनः···
वही ८। ४०९

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

सागर-वेला द्वारा राष्ट्र-रक्षा की मर्यादा का एक दृष्टान्त ही बन गया—

राज्यं च तव रक्षेयमहं वेलेव सागरम् ।।

रामा० अयोध्या का० २३ । २८

समुद्र तट के वन भी विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों से भरे हुए थे—

स शैल सागरानूपं वीर्यवानवलोकयन् ।
नाना पुष्पफलैर्वृक्षैरनुकीर्णं सहस्रशः ।।

अरण्य का० ३५ । ११

कदल्यटविसंशोभं नारिकेलोपशोभितम् ।
सालैस्तालैस्तमालैश्च तरुभिश्च सुपुष्पितैः ।।

वही ३५ । १३

निर्यास रसमूलानां चन्दनानां सहस्रशः ।
वनानि पश्यन् सौम्यानि घ्राणतृप्ति कराणिच ।।

वही ३५ । २१

अगुरूणां च मुख्यानां वनान्युपवनानि च ।
तक्कोलानां च जात्यानां फलिनां च सुगन्धिनाम् ।।

वही ३५ । २२

पुष्पाणि च तमालस्य गुल्मानि मरिचस्य च ।
मुक्तानां च समूहानि शुष्यमाणानि तीरतः ।।

वही ३५ । २३

इस प्रकार क्षीरोद-वेला (किष्किधा का० ३७ । २५) और बहुमूल्य वनस्पति आर्थिकजीवन की एक महान विशिष्टता थी ।

समुद्र के अन्दर प्रविष्ट पर्वत और उसके अन्तंवर्ती द्वीपों के विभिन्न नगरों में भी आना जाना होता रहता था—

समुद्रमवगाढांश्च पर्वतान् पत्तनानि च ।
मन्दरस्य च ये कोटिं संश्रिताः केचिदालयाः ।।

किष्किधा का० ४० । २५

इन द्वीपों में स्थलीय मार्ग से पर्वतों को पार कर या समुद्र को जहाजों द्वारा पार कर जाया जाता था—

गिरिभिर्ये च गम्यन्ते प्लवनेन प्लवेन च ।।

किष्किंधा का० ४० । २९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७ राज्यों से युक्त यव द्वीप (जावा) और सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) तथा रूप्यक द्वीप सोने की खानों से भरे हुए थे। यवद्वीप (जावा) के उस पार भी शिशिर गिरि नामक पर्वत था—

> यत्नवन्तो यवद्वीपं सप्तराज्योपशोभितम्।
> सुवर्णरूप्यकद्वीपं सुवर्णाकर मण्डितम्॥
>
> वही ४०। ३०

> यवद्वीपमतिक्रम्य शिशिरो नाम पर्वतः।
> दिवं स्पृशति शृंगेण देवदानव सेवितः॥
>
> वही ४०। ३१

इन देशों के उस पार ही भयंकर समुद्र और समुद्रद्वीपों के आगे (किष्किधा का० ४०। ३५-३८) लाल रंग के जल से भरा हुए लोहित सागर था—

> ततो रक्तजलं भीमं लोहितं नाम सागरम्।
> गत्वा प्रेक्ष्यथ तां चैव बृहतीं कूट शाल्मलीम्॥
>
> किष्किधा का० ४०। ३९

संभवतः लोहित सागर ही 'एरीथ्रियन सी' कहलाता था। इस प्रकार द्वीपान्तर यात्रा नाविकों और वणिकों के रोमाञ्चक वृत्तों का मूलाधार थी।

वेलावन के स्वरूप के अतिरिक्त प्राचीन युग में भी लोग समुद्र की शोभा तथा उस में होने वाली विभिन्न प्रक्रियाओं से परिचित थे। चन्द्र के प्रभाव से ज्वार आना, प्रचण्डवायु और भीषण जन्तुओं (विशेषकर सर्पों) तथा रत्नों की राशि से भी उनका सुपरिचय था।[१] यही 'सिन्धूनामिह······सम्पदम्' (का० मी० १००।१२) थी जिससे जलनिधितटीकान्तारों (का० मी० ७३।१६) की शोभा सभी के लिये आकर्षण थी।

"फ़ारस की खाड़ी के बाद सबसे पहला बलोचिस्तान का तेज नामक बन्दरगाह और फिर सिन्ध का देवल नामक बन्दरगाह था। गुजरात में थाना खम्भात, सोपारा, जैमूर और मद्रास में कोलममली, मलाबार और कन्याकुमारी थी। इसके आगे वे लोग (अरब यात्री) या तो टापुओं में चले जाते थे और बंगाल होकर फिर वहाँ से कामरून (कामरूप) अर्थात् आसाम चले जाते थे। फिर वहाँ से चीन जाते थे।"[२]

१—रामायण युद्ध का० ४। ९३–१२१

२—अरब और भारत, पृ० ४६-४७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट ४

वन-श्री

भारतवर्ष ऋषि देश है और आर्य-संस्कृति का विकास अरण्यों में हुआ। अस्तु भारतीय संस्कृति में बनों का विशेष महत्व है।

आरण्य-शान्ति और निर्वाण-श्री इस देश की अपनी थाती है जिसे आज भी सुरक्षित रखा जा सका है। इन बनों ने ही हमारे भूत-गौरव और साहित्य को नष्ट होने से भी बचाया था। इन बनों का आर्थिक और राजनैतिक दृष्टि-कोण से भी विशेष महत्व था। अतः भारतीय-भूगोल में वन-श्री की भी एक विशेष गरिमा रही है।

भारत के राष्ट्रीय जीवन में हाथियों का भी विशेष महत्व रहा है। हाथियों की प्राप्ति, उनकी शिक्षा और शुश्रूषा पर ही गजशास्त्र भी लिखा गया था। जहाँ-जहाँ जिन बनों में हाथी होते थे उन के सम्बन्ध से इस देश को ८ भागों में बांटा गया है और इन आठ वन्य-भागों को ही वनाष्टक कहा गया है।

हाथियों के भी ८ प्रकार थे और उनके उत्पत्ति-क्षेत्र भी ८ ही थे। अतः प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के विकासवृत्त में इन हाथियों के ८ कुल और वनाष्टक (मत्तंगजानां कुलाष्टकं चैव वनाष्टकं)[1] का एक विशेष महत्व है।

गजोत्पत्ति का वर्णन करते हुए आठ प्रकार के महानागों[2] का उल्लेख किया गया है—

ऐरावणस्तथा पद्मः पुष्पदन्तश्च वामनः ॥
सुप्रतीकोञ्जनो नीलः कुमुदश्च मतङ्गजः ॥
वि० ध० १।२५१।११

शक्राद्यानां दिगीशानां यथा संख्येन वाहनाः ।
चत्वारो जातयस्तेषामेकैकस्यान्वये स्मृताः ॥
वही १।२५१।१२

१—विष्णुधर्मोत्तर पु० १।२५१।३७
२—वही १।२५१।१—१०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भद्रा मन्दा मृगा चैव संकीर्णा च जनाधिप।
भद्रा श्रेष्ठा भवेत्तासां मन्दा मध्या कनीयसी ॥
वही १।२५१।१३

मृगा ज्ञेया च बाहुल्यात्संकीर्णा पार्थिवोत्तम्।
भद्रमन्द मृगाणां च तथा वक्ष्यामि लक्षणम् ॥
वही १।२५१।१४

इन आठ कुलों (कुलाष्टकं)[१]—ऐरावण, पद्म, पुष्पदन्त, वामन, सुप्रतीक, अञ्जन, नील और कुमुद—के हाथियों को चार जातियों का—भद्र, मन्द, मृग और संकीर्ण—बताया गया है। शुक्र ने भी उपर्युक्त हाथियों की चार जातियों का उल्लेख किया है।[२] कौटिल्य राजा की विजय प्राप्ति और सुरक्षा में हाथियों के महत्व को बताते हुए विभिन्न देशों में उत्पन्न होने वाले हाथियों के गुणों को बताते हैं—कलिंग, अंग, करूश और प्राच्य में होने वाले हाथी श्रेष्ठ होते हैं; दशार्ण और पश्चाद्देश के हाथी मध्यम श्रेणी के होते हैं; और सौराष्ट्र तथा पञ्चजन देशों के गज अधम[३] होते हैं। परन्तु उनको शिक्षा[४] द्वारा उपयोगी बनाया जा सकता है।

विष्णुधर्मोत्तर हाथियों की प्राप्ति होने वाले ८ वनों (गजानां वनाष्टकं[५]) का वर्णन करता है।

१—प्राच्य-वन (महावन)

हिमालय, प्रयाग, लौहित्य (ब्रह्मपुत्र) और गंगा से घिरे हुए महावन में ऐरावण कुल के हाथी होते थे। इसे प्राच्यवन कहते थे।[६]

२—करूष वन

उन्मत्तगंगा, त्रिपुरी (तेउर, जबलपुर प्रान्त), दशार्ण और मेकल जनपद (अमरकण्टक के आस-पास-गोंडवाना) में फैला हुआ करूष वन कहलाता था। यह पद्म कुल के हाथियों का वन था।[७]

१—अग्नि पु० २९१।४।
२—शुक्रनीति ४।८९३ : भद्रोमंद्र मृगोमिश्रा गजो जात्या चतुर्विधः ॥
३—कौटिल्य-अर्थशास्त्र (अंग्रेजी अनुवाद-शामशास्त्री, १९५१) पृ०४९
४—वही पृ० ४९–५०
५—विष्णु धर्म० १।२५१।२२ (१)
६—वही १।२५१।२२ (२)—२३(१) :

हिमवत्प्रयागलौहित्य गंगा मध्ये महद्वनम् ।
प्राच्यामैरावणस्योक्तं वनं यत्र मत्तंगजाः ॥

७—वही १।२५१।२४-२५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३——दशार्णक वन

बिल्वशैल, वेत्रवती (बेतवा) और दशार्ण गिरि पर स्थित दशार्णक वन पुष्पदन्त के नाग कुल का वन था।[१]

४——वामन वन

पारियात्रक, वैदेश्य (विदिशा, मध्य प्रदेश), नर्मदा और ब्रह्मवर्धन के क्षेत्रों में विस्तृत वन वामन कुल के हाँथियों का वन था।[२]

यहां पर दशार्ण का उल्लेख करूष और दशार्णक वनों में हुआ हैं। वामन वन विदिशा के वन्य भाग का उल्लेख करता है। दशार्ण प्राय: विदिशा या पूर्वी मालवा ही माना जाता है। परन्तु मेकल और उत्कल के साथ भी इसका सम्बन्ध रहा है।[३] टॉलमी ने भी पूर्वी समुद्र तट का वर्णन करते हुए दशार्ण का उल्लेख किया है।[४] अत: स्पष्ट है कि दशांर्ण एक विस्तृत भूखण्ड था, जो मध्य प्रदेश की पहाड़ियों और जंगलों में होता हुआ उड़ीसा को भी छूता था। इस व्यापक स्वरूप में दक्षिण कोशल और महाकान्तार (समुद्र गुप्त का प्रयाग स्तम्भ लेख) इसमें सम्मिलित थे।

५—कालेश वन

विन्ध्य, सह्य (पश्चिमी घाट) उत्कल (उड़ीसा) और दक्षिण समुद्र से घिरे हुए विशाल वन्य भाग को कालेश वन कहते थे, जहां सुप्रतीक कुल के हाथी होते थे।[५] इसमें अधिकांशत: दक्षिणापथ सम्मिलित था।

६——अपरान्तक–वन

सेवादेश, समुद्र, प्रेमहार और नर्मदा के मध्य अपरान्तक वन स्थित था, जिसमें अञ्जन हाथी होते थे।[६] सेवादेश और प्रेमहार नवीन से नाम लगते हैं। संभवत: शूद्र देश (शुद्राभीर) देश था।

१—वही १। २५१। २६-२७
२—वही १। २५१। २८-२९
३—किष्किंधा का० ४१। ९:
मेखलानुत्कलांश्चैव दशार्णनगराण्यपि:
४—क्ला० अ० पृ० ३७०
५—विष्णु धर्म०, १। २५१। ३०-३१
६—वही १।२५१। ३२-३३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७—सौराष्ट्र वन

कुशस्थली (द्वारका), अवन्ति, (पश्चिम मालवा), अर्बुद और नर्मदा के मध्य में सौराष्ट्र वन स्थित था। यहां नील कुल के हाथी होते थे।[१]

८—पंचनद वन

हिमालय, कालिका, (कालका, शिमला) सिन्ध नदी और कुरु जांगल के मध्य में पंचनद वन स्थित था जहां कुमुद-गज होते थे।[२]

इसी प्रकार मानसोल्लास (मैसूर यूनीवर्सिटी, संस्कृत सीरीज़ नं० ६९) में भी इन आठ वनों का उल्लेख पाते हैं—

गंगा सागर हेमाद्रि प्रयागाणां च मध्यतः ॥
मानसो० १। २। १७३

वनं प्राच्यमिति प्रोक्तं लोहिताब्धिश्चपश्चिमे ।
त्रिपुर्यां कोसलाद्रौ च चेदिकारूशकं वनम् ॥
वही १।। २। १७४

श्रीक्षेत्रं गौडवङ्गालमाङ्गिरेयं वनं स्मृतम् ।
विन्ध्याद्रिचित्रकूटेन्द्रकलिङ्गद्राविडाश्रितम् ॥
वही १। २। १७५

वनं कालिङ्गकं नाम समुद्रावधि कीर्त्यते ।
श्रीशैले वेदशैले च मलयाद्रौ तथैवच ॥
वही १। २। १७६

वनं दशार्णवं नाम करिणां जन्मकारणाम् ।
सह्याद्रि भृगुकच्छान्तमपरान्तं वनं स्मृतम् ॥
वही १। २। १७७

द्वारवत्यामवन्त्यां च सौराष्ट्रं वनमुच्यते ।
कालञ्जरे कुरुक्षेत्रे सिन्धुसागरसंगमे ॥
वही १। २। १७८

वनं पञ्चनदं प्रोक्तं हिमालयकृतावधि ।
कालिंगचेदिकारूशं दार्शाणं च वनं परम् ॥
वही १। २। १७९

१—विष्णु धर्म० १। २५१। ३४-३५
२—वही १। २५१। ३६-३७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आंगिरेयं तथा प्राच्यं मध्यमं वनमिष्यते।
अपरान्तं पंचनदं सौराष्ट्रं चाधमं वनम्॥
वही १।२।१८०

एवमष्टौ वनान्याहुर्गजानां जन्मनः पदम्॥
वही १।२।१८१

इस प्रकार मानसोल्लास भी भारतवर्ष को हाथियों की उत्पत्ति के आधार पर ८ वनों-प्राच्य, चेदि-कारूशक, आंगिरेय, कालिंग, दाशार्णव, अपरान्त, सौराष्ट्र और पंचनद—में विभक्त करता है। विष्णुधर्मोत्तर का करुष वन ही मानसोल्लास का चेदि-कारूषक है जिसमें दशार्ण और कोसलाद्रि (दक्षिण कोशल की पहाड़ियां) पर्याय रूप में उल्लिखित हुए हैं।

ब्राह्मण्ड पुराण हाथियों के कुलों और जातियों[1] पर विचार करता हुआ 'दिग्गजानां प्रदेशविवेचनं' करता है—

कौशिक्या ह्यासमुद्रात्तु गंगायाश्च यदुत्तरम्॥
बह्मांड पु०, उपो० पा० ३।७।३५५

अंजनस्यैक मूलस्य विज्ञेयं गहनं तु तत्।
उत्तरं चैव बिन्ध्यस्य गंगाया दक्षिणं च यत्॥
वही ७।३५६

गंगोद्भेदे सकेरुम्यः सुप्रतीकस्य पत्तनम्।
अपरेणोत्कलं चैव कावेरीभ्यश्च पश्चिमम्॥
दही ७।३५७

एकसूकात्मजस्यैतद्वामनस्य वनं स्मृतम्।
अपरेण तु लौहित्यमासिधोः पश्चिमेन तु॥
वही ७।३५८

पद्मस्यैतद्वनं प्रोक्तमनुपर्वतमेव तत्॥
वही ७।३५९

वायु पुराण में भी इससे मिलता हुआ ही पाठ मिलता है:—

कौशिकाद्याः समुद्रात्तु गंगायास्तदनन्तरम्।
अञ्जनस्यैकमूलरय प्राच्याम्नागवनन्तु तत॥
वायु० पु० उत्तर० ८।२३२

१—ब्रह्माण्ड पु०, उपो० पा० ३, ७।३२६–३४६
दृष्टव्य—वायु पु०, उत्तर० ८।२०४-२२४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तरा तस्य विन्ध्यस्य गंगाया दक्षिणञ्चयत् ।
गंगोद्भेदात्करूषेभ्यः सुप्रतीकस्य तद्वनम् ॥ वही ८ । २३३
अपरेणोत्कलाच्चैव ह्यावेदिभ्यश्च पञ्चमम् ।
एक भूतात्मनोस्यैतद्वामनस्य वनं स्मृतम् ॥ वही ८ । २३४
अपरेण तु लौहित्यमासिन्धोः पश्चिमेन तु ।
यमस्यैतद्वनं प्रोक्तमनुपर्वतमेव तत् ॥ वही ८ । २३५

नाग-वनों के महत्व के कारण ही उनका अध्ययन, वर्गीकरण और संरक्षण आवश्यक था । वे राष्ट्र-शक्ति के कोषागार थे ।

वामनपुराण में सप्त वनों (अ० ३४ । १) का भी उल्लेख मिलता है । पुष्करारण्य (पुष्कर, अजमेर), मागधारण्य (दक्षिण बिहार प्रदेश), सैंधवारण्य[१] (सिंध प्रदेश का वन), निमिषारण्य (यू० पी०, सीतापुर-हरदोई प्रान्त), धर्मारण्य[२], कुरुजांगल[३] (सरस्वती दृषद्वत्योरंतरे कुरुजांगले)[४] तथा देवदारुवन (वामन पु० ४३ । ४८), हिमवत वन (वामन पु० ४३ । ४८), कपिलवन (कपिलवस्तु का जंगल, वामन ६४ । १३) और दण्डकारण्य (वामन पु० ३९ । ५) विस्तृत वन खंड थे जिनमें आश्रम और वनौषधि भवरोगों को नष्ट करने वाली थीं ।

हिमालय, महेन्द्र (पूर्वी घाट) और विन्ध्याचल (पद्मपुराण, आदि खंड १ । २-३) के बनों में मुनि लोग रहते थे । अर्बुदारण्य, पुष्करराण्य, और धर्मारण्य भी ऐसे ही पवित्र वन थे ।[५] राजगृह (पुण्यं राजगृहं वनम्-वायु उत्तर० ४६ । ७६) भी पुण्य वन था ।

१—वामन पु० ३ । १

२—वही ३ । १०

३—वही ३ । १२

४—वही २२ । ४७; इस प्रकार स्पष्ट है कि कुरुजांगल ब्रह्मावर्त क्षेत्र में विस्तृत था—

सरस्वतीदृषद्वत्यों नद्योंयदंतरम् ।
तं देव निर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते ॥ वामन पु० ३३ । ९

उस पवित्र कुरु जांगल में देवता और ऋषि रहते थे—
(वामन पु० ३३ । १२)

५—पद्मपुराण आदि खंड १ । ४-५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उपसंहार

इस प्रकार संक्षिप्त रूप से भारत के विभिन्न भौगोलिक स्वरूपों का परिचय कराने का प्रयास-काव्यमीमांसा की भौगोलिक सामग्री तथा कुछ परिशिष्टों द्वारा किया गया है। संभव है कि सर्व सामान्य व्यक्ति को भाषा और संस्कृत-बाहुल्य की शिकायत हो। परन्तु जब तक हम साक्ष्यों के साथ ही साथ अपने विचार को न रखेंगे, उन पर लोग कम आस्था करेंगे। यह मेरा दृष्टिकोण है और इसी से यह भौगोलिक स्वरूप इस प्रकार से मनीषियों के चरणों पर निवेदित है। इससे इतना तो स्पष्ट ही है कि प्राचीन युग में भूगोल तथा उसके आर्थिक और राजनैनिक महत्व की उपेक्षा नहीं की गई थी। नीतिशास्त्र के ग्रन्थों में हाथियों पर विचार किया गया है। परन्तु आधुनिक प्रमादी शोध कर्ताओं की आँखों से ओझल है। यह विडम्बना और विजृम्भण है।

सर्वेषां मंगलं भूयात्सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥

गरुड़ पु०, उत्तर० ३५। ५१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुद्धि - पत्र

पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्ध है	शुद्ध है
६	११	अत्यन्त्र	अन्यत्र
७	—	,, (का पर लगा है)	जयति " पर होना चाहिए
,,	१६	। (की के बाद)	। होना चाहिये है के बाद
८	११	रुदधिञ्च	रुदविश्च
९	१७	नववर्ष	नववर्षं
१०	३	१ प्रा०	१ उ०
१३	८	प्रतिसृत···	प्रविसृत
१४	फ़ुट नोट १	हर्ष चरित का अध्ययन	हर्ष चरित एक अध्ययन
१५	,, १	महलाता	कहलाता
१५	१०	कौमारिक	कौमारिकं
	१४	गमस्ति मान	गभस्तिमान्
	२५	विभक्त	विभक्त कर
१६	२३	शृण	शृणु
१५	१७	परिवर्तत उथल पुथल	परिवर्तन तथा उथल-पुथल
१८	१०	नवद्रय···श्रियाम् के	बाद १/५
१९	३	था देश	था । देश
२१	१२	प्रर्वत	पर्वत
२३	१८	"तथ्य हिमवानेव···"	तथ्य—"हिमवानेव···
२४	३	दिग्जय वर्णन	दिग्जय-वर्णन
२५	१३	चातुर्वण्य	चातुर्वर्ण्य
	२१	चातुर्वण्यं	चातुर्वर्ण्यं
२६	२०	मिलता है मार्कंण्डेय	मिलता है। मार्कण्डेय
२७	१२	दिशं पूर्वा	दिशां पूर्वां
४४	१९	सा	सा०
४५	३	प्राग्झ्योतिष	प्राग्ज्योतिष
	१३	सुह्ल	सुह्म
५०	१	गोभन्त:	गोमन्त:
	फ़ुट नोट १	तिकूट	त्रिकूट
५२	१९	विकास हुआ ।	विकास हुआ—
५५		(५५ । १५)	(पू० ५५ । १५)
५८	२०	महिषासूर	महिषासुर
६०	१	अश्मक नाम	अश्मक नामक
६१	१०	कौण्डिन्युपुर	कौण्डिन्यपुर
६३	१-२	के अन्त में वीरसेन शाब का उदयगिरि लेख-	
६६	फ़ुट नोट ५	कखेक्टेड	कलेक्टेड
७२	७	है (वायु···) यह	है (वायु···) । यह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्ध है	शुद्ध है
९१	१७	टेक्ट	टेक्स्ट
	२५	राजपुर	राजपुरं
९२	१७	भारतीत	भारतीय
९५	फ़ुट नोट ५	मेड इ०	मेड० इ०
९६	१	मे	से
१००	१९	हरिर्विर्णम्सिहश्च	हरिर्विष्णुस्सिंहश्च
१०१	११	वारण-गज	आरण्य-गज
१०१	३०	··विच्छुरिताम्बुराराशि	विच्छुरिताम्बुराशि
	१९	रासीत	रासीत्
१०३	१०	ताम्र	ताम्राश्च
१०२	१५	मातंर्गों	मातंगों
१०२	८	गजनी ही था	गजनी ही था[3]
१०२	१०	पाते हैं[3]	पाते हैं[४]
१०३	९	स्मृता:	स्मृता:
१०८	१४	जगाधरी अम्बाला	जगाधरी, अम्बाला
१०९	२९	कासि	काशि
१११	१७	स्कन्द पु०७।२६।१४१	स्कन्द पु० ७।२।६।१४१
११२	२	तादाम्य	तादात्म्य
	२०	यिषय	विषय
११६	९	तदेव्र	तदेव
	१२	ईहश	ईदृशी
	१२	ईहशो	ईदृशो
	२०	प्लक्षद्वीप: ।।	प्लक्षद्वीप:,
	फ़ुट नोट २	इति महाद्वीपा:	इति महाद्वीप:
११८	२	तदेव	सैव
११८	४	तत्कालीनमितिहास:	तत्कालीन: इतिहास:
११८	४	सुचित्रित सेव	सुचित्रितएव
	५	पराभूतं	पराभूत:
	१०	'त एवं' के स्थान पर	'क्षत्रिया एव ते' पढ़िये
	२७	स्वातन्त्रम	स्वातन्त्र्यम्
	१०	तएव	तदेव
११९	२	राजभ्द···	राजभूद···
११९	५	पार्विति प्रिये	पार्वति प्रिये
	१५	चक्रवर्ती	चक्रवर्ति
१२१	८	महाह्वदायाम्	महाह्लदायाम्
	२२	पृथुदका	पृथूदका
१२०	१७	चक्रवत्तिक्षेत्रे	चक्रवर्त्तिक्षेत्रे
१२२	२	सरितस्नथा	सरितस्तथा
	८	गुण विजृम्तिानि	गुण विजृम्भितानि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय
प्रो० बी० एन० पुरी
संग्रह
लखनऊ

State Museum Library
7600
Lucknow

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh